जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 17 संख्याः 87 प्रभात हिण्डौन सिटी, गुरूवार 30 जनवरी, 2025 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

महाकुंभ में बैरिकेड्स टूटने से मची भगदड़, 30 मरे 60 घायल

25 मृतकों की शिनाख्त हो गई है, 5 की पहचान के प्रयास चल रहे हैं

- पुलिस उपमहानिरीक्षक वैभव कृष्ण ने बताया कि मृतकों में सर्वाधिक 19 लोग यूपी के हैं, इसके अलावा कर्नाटक के 4 तथा गुजरात व असम के एक-एक श्रृद्धालु की मौत हुई है।
- ब्रह्म मुहूर्त से पूर्व रात्रि 1 से 2 बजे के बीच अखाड़ा मार्ग पर भारी भीड़ जमा हो गई, जिससे बैरिकेड्स टूट गए, श्रृद्धालु बैरीकेड्स फांदकर दूसरी ओर वहाँ पहले से स्नान का इंतज़ार कर रहे लोगों को रौंदते चले गए।
- मेला प्रशासन ने हैल्पलाइन नम्बर 1920 जारी किया, जिस पर घायलों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

महाकुम्भ स्थल पर भगदड़ में 30 लोग मारे गये व 60 घायल हो गए। मेला स्थल पर विखरा सामान हादसे की भयावहता की गवाही दे रहा है।

महाकुंभ नगर, 29 जनवरी। मौनी अमावस्या स्नान पर्व पर मंगलवार और बुधवार की आधी रात को बेरीकेड टूटने की घटना के बाद मची भगदड़ में 30 श्रद्धालुओं की मौत हो गयी, जबकि 60 अन्य गंभीर रुप से घायल हो गये।

पुलिस उपमहानिरीक्षक वैभव कृष्ण ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी देते हुये कहा कि मरने वालों में 25 की शिनाख्त कर ली गयी है, जबकि पांच की शिनाख्त के प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भगदड़ में मरने वालों में यूपी के सबसे ज्यादा 19, कर्नाटक के 4, गुजरात और असम के एक-एक श्रद्धालु हैं। कुछ घायलों के परिजन अपने मरीजों को लेकर चले गये हैं, जबकि 36 का इलाज स्थानीय मेडिकल कालेज में किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि ब्रह्म मुहूर्त से पूर्व प्रात: एक से दो बजे के बीच मेला क्षेत्र में अखाड़ा मार्ग पर भारी भीड़ का दवाब बना और इस दवाब से दूसरी ओर के बेरीकेड टूट गये, लोग बेरीकेड फांद कर दूसरी ओर आ गये, जहां श्रद्धालु बह्म मुहूर्त का इंतजार कर रहे थे, भीड़ ने इन लोगों को नहीं देखा और उनको कुचलना शुरु कर दिया। यद्यिप प्रशासन ने तत्काल राहत एवं बचाव कार्य करते हुये भीड़ को काबू किया और एबुंलेंस से 90 घायलों को अस्पताल पहुंचाया, लेकिन भगदड़ में 30 श्रद्धालुओं की मौत हो गयी। वैभव कृष्ण ने बताया कि श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये मेला प्रशासन ने हेल्पलाइन नंबर 1920 जारी किया है, जिस पर घायलों के संबंध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इस समय स्थिति पूरी तरह सामान्य है। हादसे के बाद सरकार के अनुग्रह पर अखाड़ों ने अपना पूर्व निर्धारित अमृत स्नान स्थगित कर दिया था। फिर हालात सामान्य होने पर दोपहर को सभी 13 अखाड़ों ने अमृत स्नान किया। इस दौरान संगम में साधु -संतों पर हैलिकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई। मुख्यमंत्री योगी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

योगी ने महाकुंभ हादसे पर जाँच आयोग का गठन किया

महाकुंभ नगर, 29 जनवरी। महाकुंभ में बेरीकेड टूटने के कारण हुये हादसे से दुखी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि तमाम सुरक्षा उपाय करने के बावजूद भीड़ के दवाब में हुआ हादसा मार्महत करने वाला है। योगी ने कहा कि घटना की जांच के लिये हमने पूर्व न्यायाधीश हर्ष कुमार की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय जांच आयोग गठित किया है जिसमें पूर्व डीजी वीके गुप्ता और रिटायर्ड आईएएस डीके सिंह शामिल हैं। इसके अलावा सरकार पुलिस से अलग से हादसे के कारणों की

- सरकार प्रत्येक मृतक आश्रित को 25 लाख रू. की आर्थिक मदद करेगी।
- रात करीब एक से दो बजे के बीच श्रृद्धालु बैरिकेड्स पार कर दूसरी ओर आ गये और वहाँ पहले से स्नान का इंतज़ार कर रहे लोगों को रौंदते चले गये।

जांच करायेगी। सरकार प्रत्येक मृतक आश्रित को 25 लाख रुपये की आर्थिक मदद देगी।

मुख्यमंत्री ने बुधवार को पत्रकारों से बातचीत में भावुक होते हुये कहा कि प्रशासन को पता था कि महाकुंभ में आठ करोड़ से अधिक श्रद्धालु पहुंचेंगे और इसके लिये तमाम बंदोबस्त भी कर लिये गये थे मगर बह्म मुहूर्त से पहले रात करीब एक से दो बजे के बीच श्रद्धालु बेरीकेड्स फांद कर दूसरी ओर आ गये और वहां पहले से स्नान का इंतजार कर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस इतनी देर से सक्रिय क्यों हुई दिल्ली के चुनाव में?

क्या इसका कारण है, कांग्रेस का यह महसूस करना कि जहाँ भी, जिस सीट पर, कांग्रेस का मजबूत प्रदर्शन होगा, वह वहाँ आप के ही वोट काटेगी और इसका लाभ भाजपा को ही मिलेगा

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। दिल्ली विधानसभा चुनावों के अवसर पर प्रियंका गांधी इतनी खामोश क्यों हैं?

न कोई जनसभा, न कोई रोड शो, न कोई ट्वीट, न कोई री-ट्वीट। दिल्ली विधानसभा चुनाव प्रचार में उनकी उपस्थिति कहीं दिखाई ही नहीं दे रही।

राहुल गांधी भी अभी-अभी सक्रिय हुये हैं। उन्होंने जनसभाएं सम्बोधित की हैं तथा बहुत सारे मुद्दों, जिनमें भ्रष्टाचार और दिल्ली का शराब घोटाला कांड भी शामिल हैं, को लेकर केजरीवाल पर प्रहार किये हैं।

कांग्रेस ने दिल्ली के चुनाव परिदृश्य में देर से प्रवेश किया, और ये प्रश्न पूछे जा रहे हैं कि आखिर ऐसा क्यों और कैसे हुआ।

इस बारे में आकलन और अनुमान यह है कि जिन-जिन विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस की स्थिति अच्छी है तथा जहां वह पूरी ताकत से लड़ रही है, वहाँ वोट बंट सकते हैं और उन क्षेत्रों में भाजपा की जीत की संभावना बन सकती है।

- इसी कारण यहाँ तक माना जा रहा है कि भाजपा इस बार जीतने के लिये कांग्रेस पर ही "निर्भर" है।
- यहाँ यह भी रोचक सत्य है कि गहलोत व अन्य कुछ वरिष्ठ नेता, जो दिल्ली में कांग्रेस की गारंटियों की घोषणा करने आये थे, बाद में चुप हो गये थे और प्रियंका गांधी तक ने कांग्रेस की गारंटियों का मुद्दा नहीं उठाया था, बल्कि कांग्रेस के युवा नेता, जैसे सचिन पायलट व दीपेन्द्र सिंह हुडा, ने ही कांग्रेस के चुनाव प्रचार का बीड़ा उठाये रखा, दिल्ली के चुनाव में।

इस चुनाव में, भाजपा यह मानकर चल रही है कि कांग्रेस उसे मुसीबत से निकाल सकती है, लेकिन सूत्रों का कहना है कि दिल्ली में जीतना भाजपा के लिये फिर भी आसान नहीं है, क्योंकि उनका एक सुनिश्चित वोट बैंक है, और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक और चुनाव आया और एक बार फिर बाबा राम रहीम पैरोल पर छूटे!

गत मंगलवार को बाबा तीस दिन के पैरोल पर रिहा किये गये, क्या इसका कारण है कि हरियाणा में नगरीय निकाय के चुनाव शीघ्र ही होने वाले हैं

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। यह एक आम बात हो गई है। अब जबकि, दिल्ली विधानसभा चुनावों के साथ हरियाणा में नगर निकाय चुनाव होने वाले हैं तो रेप और हत्या के आरोपी, डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख, गुरमीत राम रहीम को फिर से जमानत पर रिहा कर दिया गया है। मंगलवार को बाबा 30 दिन की पैरोल पर जेल से बाहर आ गए।

गत वर्ष 20 जनवरी से राम रहीम 121 दिन जेल से बाहर रहे हैं। यह नवीनतम पैरोल एक साल में, चौथी रिहाई है और 24 अक्टूबर 2020 में वो पहली बार ऐसी सुविधा के लिए पात्र बने थे। उसके बाद से यह उनकी बारहवीं पैरोल है। वे 305 दिन जेल से बाहर बिता चुके हैं।

- गत एक वर्ष में, अब चौथी बार बाबा को पैरोल पर रिहा किया गया है।
- 24 अक्टूबर 2020 से, जबकि वे "पैरोल" पर रिहा होने के लिये कानूनी तरीके से हकदार हुए थे, अब तक उन्हें बारहवीं बार, पैरोल पर रिहाई मिली है, टोटल 305 दिन के लिये।
- क्या यह केवल इत्तिफाक ही है कि उनकी पैरोल पर रिहाई किसी न किसी चुनाव के सन्निकट ही होती है।
- बाबा राम रहीम के अनुयायी हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली व यूपी के कुछ इलाकों में फैले हुए हैं।

इसे संयोग कहें या योजना, जेल से बाबा की रिहाई, उन राज्यों के विधानसभा चुनावों के समय पर हुई है, जिन राज्यों में उनके बड़ी संख्या में अनुयायी हैं। उदाहरण के लिए, गत वर्ष अक्टूबर और अगस्त में वो 41 दिनों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'जो शरिया नहीं मानते उन पर उत्तराधिकार कानून लगाया जाए'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार से केरल निवासी नास्तिक मुस्लिम महिला की याचिका पर जवाब देने को कहा है, उक्त महिला ने याचिका में मांग की है कि जो व्यक्ति

- केरल की एक नास्तिक मुस्लिम महिला ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर इस संबंध में घोषणा करने की अपील की।

मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरिया लॉ) के दायरे में नहीं आना चाहता, उसके उत्तराधिकार के मामले देश के धर्मनिरपेक्ष कानून भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 के तहत निपटाए जाने की घोषणा की जानी चाहिए। मुख्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एस.ओ.जी. ने हाईकोर्ट एल.डी.सी. भर्ती परीक्षा में धांधली का भंडाफोड़ किया

ब्लूटूथ से नकल कर नौकरी प्राप्त करने वाले 9 कनिष्ठ सहायक और एल.डी.सी. गिरफ्तार

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 29 जनवरी। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने हाईकोर्ट-एलडीसी भर्ती परीक्षा 2022 में ब्लूटुथ का प्रयोग कर नौकरी प्राप्त करने वाले 9 कनिष्ठ सहायक और एल.डी.सी. को गिरफ्तार किया है। आरोपियों को पकड़ने के लिए उदयपुर और बीकानेर में सहित 9 जिलों की स्थानीय पुलिस की 10 टीमों द्वारा दबिश दी गई। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। इन आरोपियों को गुरूवार को अदालत में पेश किया जायेगा। जानकारी के अनुसार 18 अन्य आरोपी नामजद हैं, जिनके लिए एसओजी की टीम संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस एवं एसओजी वी.के. सिंह ने बताया कि ईओ-आरओ भर्ती परीक्षा 2022 के पेपर लीक मामले में गिरफ्तार पोरव कालेर से पूछताछ में सामने आया कि उसकी गैंग ने हाईकोर्ट-एलडीसी भर्ती परीक्षा 2022 के दौरान अनुचित तरीके से पेपर हासिल कर उसे हल कर ब्लूटूथ के माध्यम से विभिन्न परीक्षा केन्द्रों के परीक्षार्थियों को दिया था।

- आरोपियों को पकड़ने के लिए उदयपुर और बीकानेर सहित 9 जिलों की स्थानीय पुलिस की 10 टीमों ने एस.ओ.जी. के साथ मिलकर दबिश दी थी।
- ई.ओ.-आर.ओ. भर्ती परीक्षा 2022 के पेपरलीक मामले में गिरफ्तार हो चुके आरोपी पोरव कालेर से पूछताछ में मिली जानकारी के आधार पर इन बदमाशों को पकड़ा गया।
- वी.के. सिंह का कहना है कि इस प्रकरण में 18 अन्य आरोपी नामजद हैं, जिनकी धरपकड़ के लिए एस.ओ.जी. टीम संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है। उन्होंने बताया कि पेपरलीक के सभी मामलों में अब तक 101 एफ.आई.आर. दर्ज की जा चुकी हैं और 263 अभ्यर्थियों को पकड़ा जा चुका है।

इस तथ्य की जांच के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एसओजी हरिप्रसाद सोमानी के निर्देशन में विशेष टीम का गठन किया गया। जांच के दौरान 26 परीक्षार्थियों द्वारा बहुत ही सूक्ष्म "ब्लूटूथ डिवाइस" का उपयोग कर परीक्षा उत्तीर्ण करने के संबंध में साक्ष्य एकत्रित किए गए। यह डिवाइस इतनी छोटी होती हैं कि आमतौर पर यह नजर ही नहीं आती। इन्हें अभ्यर्थी द्वारा पहनने के बाद बाहर निकालने के लिए भी चिकित्सकीय मदद लेनी पड़ती है। इस प्रकरण में लगभग 18 से अधिक परीक्षार्थी संदेह की श्रेणी में हैं, जिसके संबंध में गहराई से जांच की जा रही है। इस मामले को दर्ज कर जांच एसओजी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रकाश शर्मा को सौंपी गई है।

वी.के. सिंह ने बताया कि हाईकोर्ट एलडीसी भर्ती परीक्षा 2022 12 व

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'प्रदेश में अवैध निर्माणों पर कार्यवाही क्यों नहीं हुई'

जयपुर, 29 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश में अवैध निर्माणों पर कार्रवाई नहीं होने और सुप्रीम कोर्ट के आदेश की पालना में कोताही बरतने के मामले में राज्य सरकार और जेडीए सहित अन्य से जवाब पेश करने को कहा है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस प्रमिल कुमार माथुर की खंडपीठ ने ये आदेश पब्लिक अगेंस्ट करप्शन संस्था

- हाई कोर्ट ने जनहित याचिका पर राज्य सरकार व जेडीए से जवाब मांगा।

की ओर से दायर जनहित याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने याचिकाकर्ता से कहा है कि वह अतिरिक्त महाधिवक्ता जीएस गिल और विज्ञान शाह को याचिका की कॉपी मुहैया कराए।

जनहित याचिका में अधिवक्ता पीसी भंडारी और अधिवक्ता टीएन शर्मा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'कुप्रबंधन व वीआईपी संस्कृति जिम्मेवार, महाकुंभ में "मौनी अमावस्या" पर हुए हादसे के लिये'

- डॉ. सतीश मिश्रा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 29 जनवरी। प्रयागराज महाकुंभ में भगदड़ में कई लोगों के घायल होने व मरने की खबरें आने के बाद विपक्ष ने केन्द्र सरकार और उत्तराखण्ड की योगी सरकार पर कुप्रबंध और वीआईपी कल्चर को तवज्जो का आरोप लगाया है।

यह हादसा तब हुआ, जब मौनी अमावस्या पर अमृत स्नान के लिए हजारों लाखों लोग महाकुंभ स्थल पर एकत्रित हो गए थे।

कांग्रेस ने केन्द्र सरकार और यूपी सरकार पर भगदड़ के लिए निशाना साधा। राहुल गांधी ने कहा कि प्रशासन का सीधा फोकस आम लोगों की बजाय वीआईपी लोगों पर है, इसीलिए यह हादसा हुआ है।

गांधी ने कहा वीआईपी कल्चर पर लगाम लगाई जानी चाहिए और सरकार को महाकुंभ में आने वाले आम लोगों के लिए बेहतर इंतज़ाम करने चाहिए।

बुधवार सुबह महाकुंभ स्थल पर लाखों श्रृद्धालु मौनी अमावस्या पवित्र स्नान के लिए इंतजार कर रहे थे कि तभी भगदड़ मच गई। आशंका है कि इसमें कई लोगों की जानें गई हैं।

हादसे को देख कर अखाड़े ने मौनी अमावस्या का पारम्परिक अमृत स्नान स्थगित कर दिया है। हालांकि, भक्तगण मुख्य घाट व अन्य घाटों पर मौनी अमावस्या का स्नान कर रहे हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि प्रयागराज में महाकुंभ स्थल पर भगदड़ में कई लोगों के घायल होने व मारे जाने की खबर बेहद हृदय विदारक है। पीड़ितों के प्रति हम गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।"

कांग्रेस प्रमुख ने एक्स पर लिखा,

- राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, अखिलेश यादव, सीपीएम के नेता, शिव सेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत तथा प्रियंका गांधी ने प्र.मंत्री मोदी की केन्द्रीय सरकार व योगी आदित्यनाथ की राज्य सरकार को दोषी माना हादसे के लिये।

इस हादसे के लिए कुप्रबंधन, बदइंतजामी और आम श्रृद्धालुओं की जगह वीआईपी मूवमैंट पर सरकार का विशेष ध्यान होना ज्यादा जिम्मेवार है। करोड़ों रूपए खर्च होने के बाद भी ऐसी अव्यवस्था निंदनीय है। अभी महाकुंभ का काफी समय बचा है। कई शाही स्नान और होने हैं। ऐसी दुखद घटना आगे न हो, इसके लिए सरकार को व्यवस्था में सुधार करना चाहिए। आम लोगों की जरूरत पर ध्यान देना चाहिए और वीआईपी कल्चर पर लगाम लगानी चाहिए।

खड़गे ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से पीड़ितों की मदद करने का आग्रह किया।

सपा प्रमुख और यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने एक्स पर लिखा कि "महाकुंभ में भारी अव्यवस्था से हुए हादसे का समाचार बेहद दुखद है। हमारी सरकार से अपील है कि गंभीर रूप से घायलों को एअर एम्बुलैंस से समीपवर्ती बैस्ट अस्पताल में पहुंचाया जाए तथा उन्हें तुरन्त चिकित्सा सहायता दी जाए। मृतकों की पहचान कर उनके शव उनके परिजनों को सौंपे जाएं या उनके घर भेजे जाए।"

उन्होंने लिखा, "बिछड़ गए लोगों को उनके परिवार से मिलाया जाए। हैलिकॉप्टर का सदुपयोग कर हवाई निगरानी बढ़ाई जाए। शाही स्नान की जो परम्परा सतयुग से चली आ रही है, उसकी निरन्तरता कायम रखकर कार्य किए जाए तथा शाही स्नान की व्यवस्था की जाए।"

माकपा ने भी घटना पर दुख जताया है। राज्य सरकार पर निशाना साधा कि इससे योगी सरकार का कुप्रबंध उजागर हो गया है। भारी खर्च के बाद भी अव्यवस्था है, हम मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते है।

शिव सेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने कहा कि "महाकुंभ कोई कार्यक्रम नहीं, बल्कि आस्था का विषय है। अगर आप करोड़ों लोगों को बुलाते है तो क्या व्यवस्था है। महिलाएं सड़क पर सो रही हैं। अखिलेश के कार्यकाल में कुंभ की व्यवस्थाएं बेहतरीन थी। जब केन्द्रीय मंत्री और वीआईपी आते हैं तो व्यवस्था पर दबाव पड़ता है। पूरा शहर बंद करना पड़ता है। हादसे में दस से ज्यादा लोग मरे हैं। मुझे लगता है, यह हत्या है, जिसका जिम्मेवार प्रशासन है।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा, "प्रयागराज महाकुंभ में भगदड़ के कारण कई लोगों के घायल होने और मरने के समाचार बेहद दुखदायी हैं। मैं शोक संतृप्त परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूँ।"

गांधी ने एक्स पर लिखा, "बदइंतजामी और प्रशासन का ध्यान आम लोगों की बजाय वीआईपी पर होना, इस हादसे के लिए जिम्मेवार है। गांधी ने कहा, अभी महाकुंभ में काफी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या बिहार में स्कूल बच सकेंगे?

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। बिहार का सर्वाधिक लोकप्रिय गीत कट्टा (देशी पिस्तौल) से धमकाने के बारे में है, जो लोगों को बिहार में आने की दुस्साहस करने की चुनौती देता है। दूसरी तरफ, बिहार के गणतंत्र दिवस समारोह में वहाँ की समृद्ध बौद्ध संस्कृति प्रस्तुत की गई

- 54,000 करोड़ रूपए का सालाना बजट और मात्र 20 प्रतिशत उपस्थिति, इतनी दयनीय दशा ने बिहार में स्कूलों के भविष्य पर सवाल खड़ा कर दिया है।

है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उनका प्रशासन राज्य की कट्टे वाली छवि को साफ करने की भरसक कोशिश कर रहे हैं तथा शिक्षा पर फोकस कर रहे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

कस्तूरी को अपनी मौजूदगी कसम खाकर सिद्ध नहीं करनी पड़ती; गुण स्वयं ही सामने आ जाते हैं। –अज्ञात

फर्नेस ऑयल और पिटकोक ईंधन बन रहा मौत का वाहक

प्रदूषण को लेकर दुनिया में भले ही कितनी भी चिंता व्यक्त की जाती हो, कितने ही बड़े-बड़े सम्मेलन होते हो, दुनिया के देशों के प्रमुखों द्वारा कितनी ही साझा बैठकें कर चिंता व्यक्त की जाती हो, कितनी ही गंभीरता का ताना-बाना बुना जाता हो पर धरातल पर देखे तो परिणाम बेहद चौंकाने वाले और गंभीर चिंता का कारण है। स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर की 2024 की रिपोर्ट की ही माने तो वायु प्रदूषण अकारण मौत का दूसरा सबसे बड़ा कारण बनता जा रहा है। ग्लोबल एयर की ही रिपोर्ट के अनुसार दुनियाभर में सालाना 81 लाख लोग वायु प्रदूषण के कारण मौत का शिकार हो जाते हैं। यदि भारत की ही बात करें तो सालाना 21 लाख लोग वायु प्रदूषण के कारण अपनी जिंदगी की जंग हार जाते हैं। कहा तो यहां तक जाता है कि दुनिया के देशों में होने वाली 8 मौतों में से एक मौत का प्रमुख कारण वायु प्रदूषण है।

ऐसा नहीं है कि सरकारें या न्यायालय या विश्व के राजनेता इससे चिंतित नहीं हो, अपितु लाख गंभीरताओं के बावजूद जो परिणाम सामने आ रहे हैं वह कहीं ना कहीं हमारी व्यवस्था की पोल खोल कर ही रख रहे हैं। अब भारत की ही बात की जाए तो सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 2017 में एक जनहित याचिका पर निर्णय करते हुए फर्नेस ऑयल और पिटकोक के उपयोग पर रोक लगा दी गई। खासतौर से एनसीआर से जुड़े प्रदेशों दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तरप्रदेश में यह रोक लगाई गई। इसी के क्रम में उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र सहित देश के अनेक प्रदेशों में इसको लेकर गाईड लाईन जारी की जा चुकी है। पर इस सबके बावजूद पेट्रोलियम प्लानिंग एण्ड एनालिसिस सेल के आंकड़े साफ-साफ चिढ़ाते हुए नजर आ रहे हैं। इस साल ही अप्रेल, 24 से दिसंबर, 24 तक के आंकड़ें बताते हैं कि रोक व सख्ती के बावजूद नौ माह में ही 49 लाख 95 हजार मैट्रिक टन फर्नेस ऑयल और एलएसएचएस का घरेलू उपयोग हुआ है। इसी तरह से पिटकोक का उपयोग 161 लाख 12 हजार मैट्रिक टन रहा है। तस्वीर का एक पहलू यह है कि 1997-98 में देश में 114 लाख 94 हजार मैट्रिक टन फर्नेस ऑयल और एलएसएचएस का उपभोग हो रहा था वहीं 1997-98 में 2 लाख 77 हजार मैट्रिक टन पिटकोक का उपभोग हो रहा था। इसके बाद हांलाकि फर्नेस ऑयल व अन्य के उपयोग में उतार चढ़ाव रहा है पर जहां तक पिटकोक के उपयोग में बेतहासा बढ़ोतरी हुई है। खासतौर से रियल एस्टेट ने पिटकोक के उपयोग को कई गुणा बढ़ा दिया है वहीं पिछले कुछ सालों से फर्नेस ऑयल व एलएसएचएस का उपयोग में कोई खास कमी नहीं आ रही है। बल्कि सारी बात साफ होती जा रही है कि वायु प्रदूषण में प्रमुख भूमिका निभा रहे इन दोनों ईंधनों के उपयोग पर जो कार्रवाई न्यायालय के आदेशों की भावना और एनजीटी के प्रयासों से होना चाहिए था वह कम से कम धरातल पर तो दिखाई नहीं दे रही है।

फर्नेस ऑयल या पिटकोक के ईंधन के रुप में उपयोग से नदी-नालें, जलवायु, पेड़-पौधें, यहां तक कि पशु-पक्षी भी प्रभावित हो रहे हैं। जहां तक आम आदमी की बात है तो फर्नेस ऑयल के ईंधन के रुप में उपयोग से वायु प्रदूषण तो होता ही है साथ ही सीधे-सीधे यह हमारें फेफड़ों को प्रभावित करता है।

दरअसल देखा जाए तो फर्नेस ऑयल व पिटकोक गैरनवीकरणीय जीवाश्म ईंधन है। विशेषज्ञों का तो यहां तक मानना है कि इनका अनुचित स्टोरेज तक भूमि और भूजल दोनों को नुकसान पहुंचाने वाला है। जब स्टोरेज करने मात्र से नुकसान पहुंचाने वाला है तो इस ईंधन को जलाने से कितना नुकसान हो सकता है इसकी गंभीरता को आसानी से समझा जा सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि फर्नेस ऑयल के ईंधन के रुप में उपयोग से ग्रीन हाउस में हानिकारक कण फैलते हैं और देखा जाए तो हवा में जहर घुलने लगता है। गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि पिटकोक और फर्नेस ऑयल में सल्फर हैं। पेटकोक में 65 हजार से 75 हजार पीपीएम और फर्नेस ऑयल में 22 हजार पीपीएम स्तर है। वायु प्रदूषण में पीपीएम का मतलब साफ है कि हवा में गैस के प्रति मिलियन भाग है। रसायन विज्ञान में वायुमण्डल के गैसों की सांद्रता को बताने के लिए पीपीएम का प्रयोग किया जाता है। फर्नेस ऑयल या पिटकोक के ईंधन के रुप में उपयोग से नदी-नालें, जलवायु, पेड़-पौधें, यहां तक कि पशु-पक्षी भी प्रभावित हो रहे हैं। जहां तक आम आदमी की बात है तो फर्नेस ऑयल के ईंधन के रुप में उपयोग से वायु प्रदूषण तो होता ही है साथ ही सीधे-सीधे यह हमारें फेफड़ों को प्रभावित करता है। इससे फेफड़ों की क्षमता कम होने के साथ ही सांस जनित रोग यहां तक कि फेफड़ों के कैंसर की संभावनाएं तेजी से बनती है। दमा, क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज जिसे सीओपीडी भी कहते हैं और फेफड़ों के कैंसर की संभावना बन जाती है। इसके साथ ही इससे जुड़ी अन्य गंभीर बीमारियां जकड़ने लगती है। यह सब जानकारी में होने के बावजूद फर्नेस ऑयल या पिटकोक जिसे पेट्रोलियम कोक भी कह सकते हैं के उपयोग में जिस तरह से कमी आनी चाहिए थी या जिस तरह से इनके विकल्प के उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए था वह हो नहीं पाया और सब कुछ होने और सरकार के पास आंकड़े होने के बावजूद इनके उपयोग पर प्रभावी रोक नहीं लग पा रही है।

दरअसल सस्ता ईंधन होने के कारण फर्निस ऑयल आदि का उपयोग इण्डस्ट्रीज में तो हो ही रहा है मेट्रो सिटीज ही नहीं बल्कि अब तो छोटे-बड़े शहरों में भी होटलों, ढ़ाबों, रेस्ट्राओं, बड़े चाट-पकोड़ी आदि फास्ट फूड बना कर बेचने वालों द्वारा आम होता जा रहा है। मजे की बात यह है कि फर्नेस ऑयल जैसे वायु प्रदूषण का कारक और स्वास्थ्य के लिए अति गंभीर ईंधन का उपयोग हो रहा है और इसकी पुष्टि पेट्रोलियम प्लानिंग एण्ड एनालिसिस सेल के आंकड़ें सिद्ध कर रहे हैं। ऐसे में एनजीटी, राज्यों के पर्यावरण मंत्रालय, पर्यावरण क्षेत्र में कार्य कर रहे सरकारी और गैर सरकारी संगठनों को सक्रिय भागीदारी निभानी होगी। एक और जहां अवेयरनेस की आवश्यकता है तो फर्नेस ऑयल का उपयोग करने वालों को समझाइस के साथ ही आवश्यकता पड़ने पर सख्ती भी करनी होगी। एक और देश ग्रीन एनर्जी और ईंधन के रुप में एलपीजी से भी एक कदम आगे सीएनजी और पीएनजी की और तेजी से आगे बढ़ रहा हैं वहीं कुछ लोग निजी लाभ के चक्कर में वायु प्रदूषण फैलाकर सीधे आम आदमी के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वाले ईंधन फर्नेस ऑयल और पिटकोक आदि का सरेआम उपयोग कर रहे हैं। ऐसे में सरकार और गैरसरकारी संस्थाओं का दायित्व हो जाता है कि वह आगे आएं और इनके प्रयोग को हतोत्साहित करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। यह समय की मांग और प्रकृति को विकृत होने से बचाने के लिए भी आवश्यक हो जाता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

बहुमंजिला इमारतों से झांकती समस्याएं....

अविनाश जोशी

आजकल बहुमंजिला इमारतों की जीवन शैली आम आदमी को पसंद आ रही है अमूमन हर नौकरी पेशा आदमी फ्लैट खरीद के अपने मकान का सपना पूरा कर लेता है। अगर बात सुरक्षा की करे तो बहुमंजिला इमारते ही एक मात्र समाधान नजर आता है। आज जब हमारे देश में एकल परिवार का बोलबाला है एवम हर व्यक्ति अपनी पत्नी एवम बच्चो के साथ अलग से घर खरीदने का सपना संजोए अपने भविष्य का निर्माण करता हैं तब बहुमंजिला इमारत एक मात्र विकल्प के रूप में समाधान नजर आता है। आधुनिकता एवम विलासिता के सभी संसाधन इस तरह की इमारतों में संभव हो सकते है एवम सीमित आय में उच्च स्तरीय जीवन शैली का आनंद उठा सकते है। बहुमंजिला इमारतें अपार्टमेंट से लेकर टाउनहाउस तक विभिन्न प्रकार के आवास विकल्प प्रदान करके सामुदायिक जीवन को बढ़ा सकती हैं। यह विभिन्न पृष्ठभूमियों और आय स्तरों के लोगों का मिश्रण बनाता है, विविधता और समुदाय की भावना को बढ़ावा देता है।

बढ़ती जनसंख्या के साथ-साथ बहुमंजिला इमारतों का प्रचलन भी बढ़ता जा रहा है। चीन में 23 मई, 2005 को गिराई गई 16 बहुमंजिला इमारतें इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जिनका पुनर्निर्माण और ऊंचा उठाकर किया जाएगा ताकि वहां के निवासियों को अधिकाधिक आवासीय सुविधा प्राप्त हो सके, परंतु यह देखने में आता है कि बहुमंजिला इमारतों में रहने वाले लोग यद्यपि एक ही दिशा की ओर खुलते मकानों में रहते हैं तथापि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन स्तर में अत्यधिक अंतर होता है।

एक ऊंची इमारत अपने कई स्तरों के साथ खड़ी होती है, आमतौर पर 12 से 40 मंजिलों तक होती है, और लिफ्ट और सीढ़ियों के माध्यम से सुविधाजनक पहुंच प्रदान करती है। जबकि एक मिड-राइज़ बिल्डिंग एक मध्यवर्ती ऊंचाई प्रदान करती है, जिसमें 4 से 12 मंजिलें होती हैं, जो इसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए एक आदर्श विकल्प बनाती है। एक ऊंची इमारत या एक बहुमंजिला इमारत में त्रि-आयामी डिजाइन होता है और इसे अक्सर हल्के स्टील का उपयोग करके बनाया जाता है। लंबवत परिसंचरण के लिए लिफ्ट और सीढ़ियों के एकीकरण के साथ, ये संरचनाएं ऊंचाई में हो सकती हैं और अस्पतालों, वाणिज्यिक मॉल या अपार्टमेंट के रूप में सेवा करने सहित विभिन्न उद्देश्यों को पूरा कर सकती हैं। इसकी व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक भवन के लिए डिजाइन और दृष्टिकोण का सावधानीपूर्वक विश्लेषण और सत्यापन किया जाता है। बहु-मंजिला इमारतों को उनकी त्वरित निर्माण प्रक्रिया वाणिज्यिक निर्माण के लिए इष्टतम विकल्प साबित हुआ है। यह पूर्वनिर्मित सामग्री के उच्च स्तर, कठोर डिजाइन परिशुद्धता, पूरी तरह से गुणवत्ता नियंत्रण उपायों और निर्माण के लिए एक जोखिम-प्रतिकूल दृष्टिकोण का उपयोग करके संभव बनाया गया है, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक निर्माण विधियों की तुलना में तेजी से पूरा होने की दर है।

बहुमंजिला इमारतें भी शहरी फैलाव को कम करने में योगदान करती हैं। ऊपर की ओर निर्माण करके, शहर घनत्व बढ़ा सकते हैं और अधिक कॉम्पैक्ट और टिकाऊ समुदायों का निर्माण कर सकते हैं। यह, बदले में, विकास के लिए आवश्यक भूमि की मात्रा को कम करता है, हरित स्थानों को संरक्षित करता है और शहर के कार्बन फुटप्रिंट को कम करता है। आधुनिक बहुमंजिला बनाने से पूर्व ही यदि वास्तु नियमों का पालन कर निर्माण किया जाए तो काफी लोगों के जीवन की विसंगतियां दूर की जा सकती हैं। वास्तु शास्त्र में अधिक ऊंची इमारतों को प्रशस्त नहीं माना जाता है, किंतु समय की मांग अनुरूप नियमों का अधिकाधिक पालन आवश्यक हो जाता है। बहुमंजिला इमारतों में नीचे दुकानें एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठान तथा ऊपर आवास बनाए जाते हैं।

सामान्य नियम है कि प्रथम तल की ऊंचाई से ऊपरी तल की ऊंचाई 1/12वां हिस्सा कम होनी चाहिए परंतु बहुमंजिला इमारतों में ऐसा संभव नहीं है। अत: उससे सबसे ऊपरी मंजिल की ऊंचाई को कम करने का प्रावधान है। नैर्ऋत्य, दक्षिण, अग्नि (दक्षिण-पूर्व) और वायु (उत्तर-पश्चिम) दिशा को छोड़कर जल की टंकी रखी जानी चाहिए तथा बोरिंग उत्तर अथवा उत्तर-पूर्व क्षेत्र में ही की जानी चाहिए। फ्लैट्स के द्वारों को भी उत्तर दिशा, मध्य अथवा पूर्व में खोले जाने का प्रयास यथासंभव करना चाहिए।

बहुमंजिला इमारतें शहरी फैलाव के नियंत्रण में सहायता प्रदान करती है। अमूमन बहुमंजिला इमारतें ज्यादा मंजिलों कब निर्माण करके, शहर घनत्व बढ़ा सकते हैं और अधिक कॉम्पैक्ट और टिकाऊ समुदायों का निर्माण कर सकते हैं। यह, हरित स्थानों को संरक्षित करता है और शहर के कार्बन फुटप्रिंट को कम करता है। बहुमंजिला इमारतें भी एक मंजिला संरचनाओं की तुलना में अधिक ऊर्जा कुशल होती हैं। क्योंकि उनकी छतें छोटी होती हैं, उन्हें गर्म करने और ठंडा करने के लिए कम ऊर्जा की आवश्यकता होती है। बहु-मंजिला इमारतों में डिजाइन स्वतंत्रता की एक विशिष्ट विशेषता होती है,जो उनकी अद्वितीय ज्यामितीय क्षमताओं के कारण पारंपरिक निर्माणों से परे रचनात्मकता के स्तर की अनुमति देती है।

बहुमंजिला और व्यावसायिक भवनों में सबसे जरूरी पहलू होता है, आग की स्थिति में लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने का बंदोबस्त। फिर उनमें बिजली के उपकरणों की गुणवत्ता का ध्यान रखा जाना जरूरी होता है। गर्मी का मौसम आते ही आग लगने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। हालांकि अब हर मौसम में ऐसी घटनाएं देखी जाती हैं। खासकर बहुमंजिला इमारतों में आग लगने से लोगों को बचाना कठिन हो जाता है। आजकल जिस तरह भवन निर्माण में वातानुकूलन का चलन बढ़ने की वजह से कई ऐसी सामग्री का उपयोग बढ़ा है, जो अतिज्वलनशील मानी जाती हैं, उसमें आग लगने की घटनाएं अधिक खतरनाक साबित हो रही हैं। कई बहुमंजिला इमारतों में शॉपिंग सेंटर, मनोरंजन सुविधाएं और कार्यालय जैसी सुविधाएं भी शामिल हैं। यह उन्हें एक आदर्श विकल्प बनाता है उन लोगों के लिए जो एक ही क्षेत्र में रहना और काम करना चाहते हैं। इमारत में इन सुविधाओं का एकीकरण भी कार के उपयोग की आवश्यकता को कम करता है और स्थिरता को बढ़ावा देता है।

बहुमंजिला इमारतों में रहने वाले सभी व्यक्तियों की परस्पर भागीदारिता मुख्य चारदीवारी में ही होती है अत: वास्तु द्वार योजना की पालना मुख्य प्रवेश द्वार में लागू की जानी अनिवार्य है। इन बहु मंजिला इमारतों में व्यवसायिक प्रतिष्ठान हेतु स्थान क्रय करने से पूर्व कुछ बातों का ध्यान रखना व्यवसायिक सफलता दिलाने वाला सिद्ध हो सकता है। यदि आपका व्यवसाय तैयार माल बेचने यास खरीदने से संबंधित है तो आपका शोरूम उत्तर-पश्चिम में सफल होगा। यदि आप रेस्टोरेंट, बेकरी खोलना चाहते हैं तो उसकी सफलता के लिए आपकी रसोई/भट्टी दक्षिण-पूर्व में सुनिश्चित करें।

बहुमाजिला इमारत की निर्माण प्रक्रिया एवम कार्य की गति का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है किसी भी इमारत की सम्पूर्ण निर्माण यात्रा में....निर्माण की लागत, भूमि का उच्चतम प्रयोग एवम उच्च घनत्व बहुमंजिला इमारतों को एक बेहद सुलभ माध्यम के रूप में प्रस्तुत करते है। आधुनिक बहुमंजिला इमारतें एक सुविधाजनक और सुरक्षित रहने का वातावरण प्रदान करती हैं, अक्सर साझा सुविधाओं और कार्यस्थलों और मनोरंजक सुविधाओं के करीब होती हैं। यह युवा पीढ़ी की बदलती जीवनशैली प्राथमिकताओं के अनुरूप है।

आज जब चारों और बहुमंजीला इमारतों का बोलबाला है तब प्रशासन से यह उम्मीद की जाती है की सभी बहुमंजिला इमारतों का विकास प्राधिकरण सुरक्षा ऑडिट कराएगा। भूकम्प के लिहाज से जो इमारतें खतरनाक होंगी, उनका भूकम्प रोधी तकनीक का इस्तेमाल कर जीर्णोद्धार कराया जाएगा। ऑडिट के लिए एक विशेषज्ञ समिति बना कर उस समिति में आर्किटेक्ट, दमकल, भवन, वास्तुविद और भूगर्भ विशेषज्ञ शामिल होने चाहिए यह समिति नई और पुरानी, दोनों तरह की बहुमंजिला इमारतों की जांच कर सुरक्षा प्रमाणपत्र जारी करे। एवम आपदा के दौरान नुकसान को कम करने के लिए प्राधिकरण सेवानिवृत्त सैन्य कर्मियों का आपदा प्रबंधन में सहयोग मांग सकती है। इसके तहत चयनित सैन्य अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

प्रदेश के करीब पांच हजार स्कूलों को 18 फरवरी को मिलेंगे प्रिंसिपल

हाल ही में प्रमोट हुए प्रिंसिपल की काउंसलिंग के लिए शिक्षा विभाग ने शेड्यूल जारी किया

बीकानेर, (निसं)। प्रदेश के करीब पांच हजार स्कूलों को 18 फरवरी तक प्रिंसिपल मिल जाएंगे। इसके लिए हाल में प्रमोट हुए प्रिंसिपल की काउंसलिंग के लिए शिक्षा विभाग ने शेड्यूल जारी कर दिया है। स्कूलों में ये फेरबदल उस समय किया जा रहा है, जब राज्यभर में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर की परीक्षा शुरू होने वाली है।

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की विभागीय पदोन्नति समिति की ओर से साल 2023-24 की प्राचार्य की डीपीसी के बाद चयन संबंधी आदेश 24 जनवरी को जारी किए थे। इसकी सूची विभाग की वेबसाइट पर अपलोड की गई है। माध्यमिक शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने बताया कि पदोन्नत होने वाले कार्मिकों के पदस्थापन आदेश जारी करने से पहले शाला दर्पण पर ऑनलाइन काउंसलिंग प्रक्रिया का कार्यक्रम जारी किया गया है। इसके अनुसार 30 जनवरी से 3 फरवरी तक विशेष वर्ग की जानकारी के लिए निर्धारित प्रपत्र जारी कर सूचना प्राप्त की जाएगी। वहीं 4 से 6 फरवरी तक इस सूचना के आधार पर अस्थाई वरीयता सूची विभागीय वेबसाइट पर प्रकाशन करते हुए वरीयता सूची के

■ 30 जनवरी से 3 फरवरी तक विशेष वर्ग की जानकारी के लिए निर्धारित प्रपत्र जारी कर सूचना प्राप्त की जाएगी

संबंध में आपत्तियां आमंत्रित की जाएगी। इसी श्रृंखला में 7 फरवरी को अंतिम आपत्तियों के आधार पर संशोधन करते हुए स्थाई वरीयता सूची का प्रकाशन और सरकार से प्राप्त निर्देशों के अनुरूप रिक्तियों का प्रकाशन किया जाएगा।

मोदी ने बताया कि 10 फरवरी को एनआईसी, शाला दर्पण जयपुर-बीकानेर और संस्थापन एबी अनुभाग के आपसी समन्वय की ओर से अपलोड डाटा का सत्यापन किया जाएगा। वहीं 11 से 14 फरवरी तक वरीयता सूची में उल्लेखित आशार्थियों द्वारा विद्यालयों का चयन और ऑप्शन लॉक किया जाएगा। 17 फरवरी को आशार्थियों की ओर से लिए गए विकल्पों के आधार पर एनआईसी एवं शाला दर्पण द्वारा रिजल्ट अथवा परीक्षा उपरांत रिपोर्ट तैयार की जाएगी और 18 फरवरी को रिजल्ट अथवा रिपोर्ट के आधार पर पदस्थापन संबंधी आदेश जारी किए जाएंगे। काउंसलिंग प्रक्रिया में विशेष श्रेणी के पदोन्नत कार्मिकों को प्राथमिकता दी जाएगी। इस बार पदोन्नति पर प्रतिस्थापन के आदेशों में कर्मचारियों के फोटो भी लगाए जाएंगे। इसके मद्देनजर कार्मिकों को शाला दर्पण में अपने से संबंधित प्रपत्र 10 में अपना नवीनतम फोटो अपलोड करना होगा।

दुकान में अवैध रूप से संचालित किया जा रहा क्लिनिक सीज़

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बड़ी मात्रा में एक्सपायरी इंजेक्शन और दवाइयां बरामद की

अजमेर, (कासं)। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बुधवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए सीएमएचओ के नेतृत्व में टीम ने भूणाबाय में अवैध रूप से संचालित क्लिनिक को सीज किया है। क्लिनिक बिना लाइसेंस के संचालित किया जा रहा था। स्वास्थ्य विभाग की टीम को बड़ी मात्रा में क्लिनिक से एक्सपायरी इंजेक्शन और दवाइयां भी बरामद हुई है।

सीएमएचओ डॉ. ज्योत्सना रंगा ने बताया कि विभाग को भूणाबाय क्षेत्र में एक अवैध रूप से क्लिनिक संचालित होने की सूचना मिली थी। सूचना मिलने पर वह खुद टीम के साथ मौके पर पहुंची, जहां पर एक दुकान के अंदर क्लिनिक खुला हुआ था। दुकान के डिस्प्ले या शटर पर कोई लाइसेंस नंबर नहीं लिखा हुआ था।

सीएमएचओ ने बताया कि समर विश्वास नाम के व्यक्ति की ओर से क्लिनिक संचालित किया जा रहा था, जिससे लाइसेंस मांगा गया तो

■ भूणाबाय में बिना लाइसेंस के संचालित किया जा रहा था क्लिनिक

उसके पास न ही कोई ड्रग लाइसेंस और न ही आरएमपी सर्टिफिकेट मिला था। युवक ने सिर्फ एक फूड लाइसेंस, वह भी आयुर्वेदिक प्रोडक्ट का दिया, वह केवल 12वीं पास पढ़ा हुआ है। टीम ने दुकान में रखी दवाइयां चेक की तो भारी मात्रा में एक्सपायरी इंजेक्शन और दवाइयां बरामद हुई। दुकान में ड्रिप्स वगैरहा भी लगी हुई थी। टीम ने कार्रवाई करते हुए दुकान को सीज किया है। युवक ने पूछताछ में 20 साल से दुकान संचालित होना बताया है। दुकान को सीज कर दवाइयां और अन्य सामान जब्त किए गए हैं। मामले में युवक के खिलाफ फूड और ड्रग्स एक्ट के तहत कार्रवाई की जाएगी। इंजेक्शन भी एंटीबायोटिक और जुकाम वगैरा सहित अन्य बीमारियों में काम आने वाले इंजेक्शन मिले हैं। दुकान के अंदर एक पूरा क्लिनिक तैयार कर रखा था, जिससे कि सभी को वहां पर उपचार दिया जा सके।

युवक की दुकान को अभी प्रारंभिक तौर पर सीज किया गया है। कई कार्रवाई के बाद युवक के खिलाफ फूड और ड्रग एक्ट के तहत कार्रवाई की जाएगी और इसके साथ ही उसके खिलाफ मामला भी दर्ज करवाया जाएगा।

राशिफल गुरूवार 30 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, धनिष्ठा नक्षत्र शुक्रवार प्रात: 5:51 तक, व्यतिपात योग सायं 6:33 तक, बवे करण सायं 4:11 तक, चन्द्रमा सायं 6:35 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति है। आज से गुप्त नवरात्रा प्रारम्भ होगे। आज व्यतिपात पुण्यं और पंचक सायं 6:31 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:58 तक, चर 11:19 से 12:40 तक, लाभ-अमृत 12:40 से 3:21 तक, शुभ 4:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 6:03

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या

परिवार में शुभ-मांगलिक-महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

मकर

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

तुला

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृश्चिक

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मीन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

अशोभनीय आचरण के लिए प्रधानाचार्य निलम्बित

करौली, (नि.सं.)। अशोभनीय आचरण के लिए राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय करौली की प्रधानाचार्या को निलम्बित किया गया है।

जिला कलक्टर नीलाभ सक्सेना ने बताया कि राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस वर्ष 2025 के जिला स्तरीय समारोह में राष्ट्रगान वाचन के दौरान अमर्यादित एवं अशोभनीय आचरण कर व्यवधान किए जाने के कारण राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय करौली की प्रधानाचार्य सावित्री मीना के विरुद्ध अनुशासनिक कार्यवाही की है। जिला कलेक्टर द्वारा प्रधानाचार्य को तत्कालिक प्रभाव से निलम्बित किया गया है। निलम्बनकाल में सावित्री मीना का मुख्यालय कार्यालय मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी टोडाभीम रहेगा।

उन्होंने बताया कि इस क्रम में

■ गणतंत्र दिवस के जिला स्तरीय समारोह में राष्ट्रगान वाचन के दौरान अमर्यादित एवं अशोभनीय आचरण कर व्यवधान किए जाने का मामला

गणतंत्र दिवस के सफल आयोजन के लिए विभिन्न बैठकों के दौरान एवं 10 जनवरी को जिला कलेक्टर कार्यालय के बैठक कार्यवाही विवरण क्रमांक 1899 के तहत मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला शिक्षा अधिकारी को राष्ट्रीय गान, मुख्य समारोह का संचालन एवं उद्घोषणा सहित शिक्षा विभाग के संबंधित कार्यक्रमों के नोडल अधिकारी नियुक्त कर सुव्यवस्थित कार्यक्रम संचालन हेतु निर्देशित किया गया था। परन्तु इनके नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण के अभाव में शिक्षा विभाग कि उक्त अधीनस्थ कार्मिक द्वारा राष्ट्रगान वाचन के दौरान जोर-जोर से चिल्लाकर अशोभनीय एवं अमर्यादित आचरण कारित कर व्यवधान उत्पन्न किया गया, जिसकी वजह से राष्ट्रगान को क्षीणक समय के लिए रोकना पड़ा। उक्त निर्देशों की अवहलना के कारण मंच की गरिमा को दूषित करने के उक्त प्रयास के क्रम में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला शिक्षा अधिकारी को भी कारण बताओ नोटिस जारी कर लिखित में जवाब मांगा गया है। वहीं उपखण्ड अधिकारी एवं पुलिस उपधीक्षक को भी तथ्यात्मक रिपोर्ट तुरंत प्रभाव से दाखिल करने के लिए निर्देशित किया गया है।

सीनियर सेकेंडरी स्कूलों को लेक्चरर मिलेंगे

बीकानेर, (निसं)। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने लेक्चरर के विभिन्न विषय की डीपीसी वर्ष 2021-22 और 22-23 में चयनित कार्मिकों की काउंसलिंग के संबंध में शाला दर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन काउंसलिंग का संशोधित कार्यक्रम जारी किया है।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने बताया कि 28 जनवरी को काउंसलिंग के लिए अस्थाई वरीयता सूची का प्रकाशन कर दिया गया है। इसी श्रृंखला में 28 से 30 दिसंबर तक अस्थाई वरीयता सूची के संबंध में प्राथमिकता श्रेणी के साक्ष्य एवं आपत्तियां आमंत्रित की जाएंगी। यह आपत्तियां चयनित कार्मिक को संबंधित विषय के अनुसार निर्धारित ई-मेल आईडी पर भिजवानी होंगी। अन्य ई-मेल आईडी पर प्रेषित प्रकरणों पर विचार नहीं किया जाएगा। 31 जनवरी को प्राथमिकता श्रेणी के साक्ष्य एवं आपत्तियों का निर्धारण और अंतिम रूप

■ शाला दर्पण पोर्टल पर काउंसलिंग का संशोधित कार्यक्रम जारी किया

से वरीयता सूची का प्रकाशन तथा रिक्तियों का प्रकाशन किया जाएगा। इसके बाद 6 से 11 फरवरी तक वरीयता सूची में उल्लेखित कार्मिकों की ओर से विद्यालय का चयन एवं ऑप्शन लॉक किया जाएगा। वहीं 12 फरवरी को आशार्थियों द्वारा लिए गए विकल्पों के आधार पर एनआईसी और शाला दर्पण द्वारा रिजल्ट/रिपोर्ट तैयार कर उपलब्ध करवाई जाएगी तथा 12 फरवरी को ही पोस्टिंग के आदेश अनुभाग द्वारा जारी किए जाएंगे। लेक्चरर की पोस्टिंग माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर की परीक्षा से पहले जारी किए जा रहे हैं, हालांकि इस साल स्टूडेंट्स को नए लेक्चरर से पढ़ने का अवसर नहीं मिलेगा।

पूर्व मंत्री डॉ. गर्ग ने मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

भरतपुर, (निस)। पूर्व मंत्री व भरतपुर विधायक डॉ. सुभाष गर्ग ने प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पत्र प्रेषित कर भरतपुर संभाग मुख्यालय स्थित कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय को भरतपुर में ही यथावत रखने का आठाह करते हुये कहा कि यदि आवश्यक हो तो सवाई माधोपुर में अलग से नवीन कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय खुलवाया जाये ताकि भरतपुर के अल्प वेतन भोगी मजदूरों व श्रमिकों को चिकित्सा सेवा में किसी तरह की परेशानी न हो। डॉ गर्ग ने मुख्यमंत्री लिखे पत्र में बताया कि भरतपुर के सुपर मार्केट स्थित कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय न. 2 में करीब 4500 श्रमिक बीमित हैं और लगभग 16000 उनके परिवारजन स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि जानकारी मिली है कि भरतपुर संभाग मुख्यालय स्थित इस औषधालय को भरतपुर से सवाई माधोपुर में विस्थापित किया जा रहा है। यदि भरतपुर संभाग मुख्यालय से यह औषधालय विस्थापित होता है तो श्रमिक एवं अल्प वेतन भोगी मजदूर व उनके परिवारजनों को स्वास्थ्य सम्बन्धि सुविधा प्राप्त करने के लिये परेशान होना पडेगा। उन्होंने कहा कि बीमित श्रमिकों और उनके परिवारजनों के हितों को ध्यान में रखते हुये इस औषधालय को भरतपुर में ही यथावत रखा जाये।

भाजपा सरकार की विफलताओं व कांग्रेस संगठन की मजबूती पर चर्चा

करौली । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी एआईसीसी के सचिव एवं राजस्थान के सह प्रभारी चिरंजीवी राव ने करौली जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ संवाद किया।

करौली शहर के भट्टा सर्किल स्थित भंवर विलास मैरिज गार्डन मे आयोजित संवाद कार्यक्रम के दौरान आगामी पंचायत चुनावों की रणनीति, भाजपा सरकार कि विफलताओं और संगठन की मजबूती पर विस्तार से चर्चा की गई। चिरंजीवी राव ने कहा कि भाजपा सरकार ने प्रदेश में हर वर्ग को निराश किया है।

महंगाई, बेरोजगारी और किसानों की समस्याओं पर सरकार पूरी तरह विफल रही है। आम जनता से किए गए वादे अधूरे रह गए हैं। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आव्हान किया कि वे पंचायत चुनाव में पूरी सक्रियता के साथ भाग लें और कांठोस कि नीतियों व जनकल्याणकारी योजनाओं को लोगों तक पहुंचाएं। संगठन कि मजबूती पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं को आपसी समन्वय और संवाद बढाते हुए बूथ स्तर तक संगठन को सशक्त बनाना होगा। कांठोस की मजबूती से ही प्रदेश में बेहतर जनसेवा संभव हो सकेगी। प्रेस वार्ता के दौरान चिरंजीवी राव ने कहा कि भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार और कुशासन के कारण प्रदेश में असंतोष का माहौल है। कांठोस पार्टी जनता की आवाज को मजबूत करने के लिए हर स्तर पर संघर्ष करेगी। इस मौके पर जिला कांठोस अध्यक्ष शिवराज मीना, पीसीसी सचिव प्रद्युम्न सिंह, भूपेन्द्र भारद्वाज, जोगिंद्र सिंह,पुष्पेंद्र धाबाई, पुष्पेंद्र मीना, राजीव शुक्ला, पीसीसी सदस्य महेंद्र सूरौठिया, शीशराम खटाना, समस्त ब्लॉक अध्यक्ष, अग्रिम संगठन और प्रकोष्ठ के अध्यक्ष,पदाधिकारी और जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने संगठन की मजबूती के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया।

- **'भाजपा सरकार ने प्रदेश में हर वर्ग को निराश किया है। महंगाई, बेरोजगारी और किसानों की समस्याओं पर सरकार पूरी तरह विफल रही है'**

करौली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी एआईसीसी के सचिव एवं राजस्थान के सह प्रभारी चिरंजीवी राव ने करौली जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ संवाद किया।

अस्पताल को दी 6 लाख की आधुनिक एक्स-रे मशीन

करौली । करौली के सामान्य चिकित्सालय मे रोगियो को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिलने का रास्ता साफ हो गया है। कैलादेवी और मदन मोहनजी मंदिर ट्रस्ट ने चिकित्सालय को 500 एमए कि मॉडर्न एक्स-रे मशीन भेंट की है। मंदिर के सोल ट्रस्टी कृष्ण चंद्रपाल ने विधिवत पूजा-अर्चना के बाद शिलापट्टिका का अनावरण कर मशीन का लोकार्पण किया।

सामान्य चिकित्सालय के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. रामकेश मीणा के अनुसार, पहले अस्पताल में 300 एमए और 100 एमए कि दो मशीनें थीं जो 20-25 साल पुरानी होने के कारण बार बार खराब हो जाती थीं। इससे रोगियो को भारी परेशानी का सामना करना पडता था। बीमारी के मौसम में प्रतिदिन 150-200 और सामान्य दिनों में 100-150 मरीजों को एक्स-रे कि आवश्यकता होती है। उन्होने बताया कि मंदिर ट्रस्ट द्वारा दी गई लगभग 6 लाख रुपए की यह नई मशीन आधुनिक तकनीक से लैस है। इससे सभी प्रकार के एक्स-रे अधिक तेजी से किए जा सकेंगे। कार्यक्रम में चिकित्सालय के डिप्टी कंट्रोलर डॉ. आशीष शुक्ला,वरिष्ठ रोग विशेषज्ञ डॉ. गोविंद गुप्ता, पूर्व डिप्टी कंट्रोलर डॉ. भुवने'ा बंसल सहित कई अन्य चिकित्सा अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

सार-समाचार

श्रमदान में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया

कुम्हेर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रीठौटी में आज मौनी अमावस्या के दिन गांव वासियों ने श्रमदान किया।

भरतपुर (निस)। कुम्हेर, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रीठौटी में आज मौनी अमावस्या के दिन गांव वासियों ने श्रम दान किया। जिला परिषद सदस्य कुँवर गोरधन सिंह रीठौटी ने बताया की पिछले कई सालों से गांव के विद्यालय में फोर्थ क्लास कर्मचारी की जगह खाली पडी हुई है इस कारण विद्यालय में साफ सफाई की बडी समस्या आती है। मैं सरकार से मांग करता हुँ की जल्द से जल्द विद्यालय में फोर्थ क्लास कर्मचारी की नियुक्ति की जाये। विद्यालय में श्रम दान में गांव वासियों ने बढ चढकर हिस्सा लिया जिसमें जिला परिषद सदस्य कुँवर गोरधन सिंह रीठौटी, पूर्व पंच प्रताप सिंह, पंच सुन्दर सिंह, मुकेश ऊदल सिंह, मोरा पहलवान आदि ने विद्यालय में श्रम दान किया।

एस.डी.ओ. को सौपा ज्ञापन

गंगापुर सिटी । प्रदेश नेतृत्व के निर्देश पर युवा मित्र संघर्ष समिति ने नौकरी बहाली को लेकर एसडीएम विजेन्द्र मीणा को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंप कर अटल प्रेरक के रूप में नियुक्ती देने की मांग की है। प्रदेशाध्यक्ष संजय मीणा के अनुसार, पिछले साल सरकार द्वारा युवा मित्रों की सेवाएं समाप्त कर दी गईं, जिससे सैकडों परिवार प्रभावित हुए। इस फैसले के विरोध में युवा मित्रों ने शहीद स्मारक पर 72 दिनों तक धरना प्रदर्शन किया। 16 मार्च 2024 को मुख्य सचिव सिद्धार्थ सिहाग, आयोजना विभाग के तत्कालीन मुख्य सचिव नवीन जैन, जयपुर कलेक्टर और पुलिस आयुक्त बीजू जॉर्ज जोसेफ की उपस्थिति में उन्हें पुनर्बहाली का आश्वासन दिया गया था। हालांकि, अभी तक न तो उनकी बहाली हुई है और न ही उन पर दर्ज मुकदमे वापस लिए गए हैं। अब युवा मित्रों ने एक नया प्रस्ताव रखा है। वे चाहते हैं कि उन्हें सरकार की नई पहल अटल प्रेरक योजना के तहत समायोजित किया जाए। उनका कहना है कि वे केंद्र और राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को आखिरी व्यक्ति तक पहुंचाने में मदद करेंगे। इसके साथ ही पूर्व सरकार के समय दिए गए प्रशिक्षण एंव अनुभव के आधार पर भी युवा मित्रो को इस कार्य का ज्ञान है। ज्ञापन सौंपने के दौरान मनीष सैनी, कपिल, लोकेश जोरवाल, हवीव, रिंकू सैनी, घीरज मीना सहित कई सदस्य मौजूद थे।

निशक्तजनों की बैठक संपन्न

गंगापुर सिटी । निसक्तजन जागरण मंच के तत्वाधान में बुधवार को सुबह 10० बजे से पंचायत समिति राजीव गांधी सेवा केन्द्र पर से एक मीटिंग का आयोजन किया गया। जिला उपाध्यक्ष अमजद खान व तहसील अध्यक्ष जगदीश बेरबा ने बताया कि मीटिंग में उपस्थित निसक्तजनो को विभिन्न सरकारी योजनाओं खाद सुरक्षा, प्रधान मंत्री आवास योजना, पेंशन, आयुस्मान कार्ड, यू डी आई डी कार्ड, रेलवे व रोडवेज पास, ई श्रम कार्ड, पालनहार आदि सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान कर फॉर्म तैयार करवाए गए। बैठक के दौरान उपस्थित निसक्तजनो की समस्याओं पर चर्चा कर समस्या समाधान की रूप रेखा तैयार की गई। बैठक में सभी निशक्तजनो ने राज्य सरकार से गंगापुर सिटी को पुनः जिला बनाए जाने की मांग की। मीटिंग में उपस्थित जन गोपी, गिर्राज, योगेंद्र, विष्णु, टिंकू, विजेंद्र, रुकसाना, कमलेश, मंजू, कांजी, रफीक, रामचरण, बाबूलाल, नसीबन, लडबाई, मुस्कान, स्याम सुंदर, रामराज, सरस्वती, गोरो, स्याम लाल, साहिबा, मुबीना आदि लोग शामिल थे।

अंकुश पिचानोत एवं रविना मीना रही प्रथम

गंगापुर सिटी । राजकीय महाविद्यालय में आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान के निर्देशानुसार खेल सप्ताह का आयोजन गया। खेल सप्ताह का शुभारम्भ बुधवार को एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं के साथ हुआ, जिसमें दौड, गोला फेंक, तश्तरी फेंक और लंबी कूद जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। पुरुष वर्ग में बीए द्वितीय वर्ष के अंकुश सिंह पिचानोत ने 100०० मीटर, 200०० मीटर दौड और लंबी कूद में प्रथम स्थान हासिल किया। 400०० मीटर दौड में बीए तृतीय वर्ष के सुनील बैंसला, गोला फेंक में इंद्रजीत जोगी और तश्तरी फेंक में बीए द्वितीय वर्ष के सचिन गुर्जर विजेता रहे। महिला वर्ग में बीए द्वितीय वर्ष की रविना मीना ने 100०० और 200०० मीटर दौड में बाजी मारी।

मनीषा मीणा दौड़ में पहले स्थान पर सानिया

हिंडौन सिटी । आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान जयपुर के निर्देश अनुसार राजकीय महाविद्यालय हिंडौन सिटी के प्राचार्य प्रोफेसर पप्पू रामकोली ने बताया की खेल एवं सांस्कृतिक सप्ताह कार्यक्रम के तृतीय दिन एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन कराया।

खेल प्रभारी डॉ श्रीनिवास गुर्जर ने बताया कि छात्रा वर्ग में 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर मनीषा मीणा एवं सानिया शाह द्वितीय स्थान पर श्वेता एवं तृतीय स्थान पर सुमन रही। 200 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में मनीषा प्रथम स्थान पर अंशिका एवं आयुषी द्वितीय स्थान पर तथा भूमिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में मनीषा प्रथम स्थान पर, रानी सोलंकी द्वितीय स्थान तथा फरीदा बानो तृतीय स्थान पर रही। गोला फेंक प्रतियोगिता में रानी सोलंकी ने प्रथम स्थान कविता सैनी द्वितीय स्थान तथा साक्षी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाला फेंक प्रतियोगिता में फरीदा बानो ने प्रथम स्थान नेहा ने द्वितीय स्थान तथा सलोनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र वर्ग में 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में विवेक सिंह प्रथम स्थान चंद्रपाल द्वितीय स्थान तथा योगेश कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में योगेश कुमार प्रथम स्थान चंद्रपाल द्वितीय स्थान तथा राजेश योगी तृतीय स्थान पर रहा। 400 मीटर दौड प्रतियोगिता में विवेक सिंह प्रथम स्थान नवीन कुमार मीणा द्वितीय स्थान तथा राजेश योगी तृतीय स्थान पर रहा। गोला फेंक प्रतियोगिता में भूपेंद्र छावडी ने प्रथम स्थान रविंद्र सिंह ने द्वितीय स्थान तथा विवेक सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाला फेंक प्रतियोगिता में मोनू कुमार ने प्रथम स्थान भूपेंद्र छावनी ने द्वितीय स्थान तथा अभिषेक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मंडल में गंगाराम मीणा , डॉ दिनेश कुमार मीणा, डॉ रितेश जैन डॉ श्रीनिवास गुर्जर एवं अजय सिंह डागुर ने रहे। महाविद्यालय के संकाय सदस्य भोली मीणा , राजकुमारी, शालिनी गुप्ता, सुमित विरेटिया तथा कर्मचारी राजू बेनीवाल, अभिषेक डागुर,धीरेंद्र उपस्थित रहे।

स्वेटर पाकर खुश हुए छात्र

करौली । राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय महू हरनगर में गणतंत्र दिवस समारोह मनाने के साथ वस्त्रार्पण कार्यक्रम किया गया। विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति के सचिव राजेन्द्र दीवान ने बताया कि इस अवसर पर विद्यालय के स्टाफ सदस्यों द्वारा विद्यार्थियों को सर्दी से बचाव के लिए टोपा युक्त गर्म स्वेटर वितरित किए गए।मुख्य भामाशाह शिक्षक मनोज कुमार गुप्ता द्वारा 25000 रुपए राशि के स्वेटर प्राथमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को प्रदान किए गए जबकि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को प्रधानाचार्य घनश्याम जाटव, उपप्रधाना चार्य दिलीप कुमार शर्मा व्याख्याता राजेन्द्र दीवान, रंगी लाल मीना, महेश चन्द मीना, गंगा सहाय, राजकुमार वर्मा, गोविन्द गुप्ता, अल्पना शर्मा, पुष्पेन्द्र सिंह गुर्जर,हुकम चन्द माली द्वारा इतनी ही राशि के स्वेटर उपलब्ध कराए गए।

रक्तदान शिविर आयोजित करना बेहद पुनीत कार्य : कलेक्टर

हिण्डौन सिटी । रक्त किसी फैक्ट्री में पैदा नहीं होता, मानव जीवन की आवश्यकता व रक्षार्थ एक दूसरे व्यक्ति द्वारा ही इसकी आपूर्ति सम्भव है। "रक्तदान महादान है", यह सबसे बडा पुण्य कार्य है, रक्तदान शिविर आयोजित करना बेहद पुनीत एवम् प्रशंसनीय कार्य है। करौली, जिला कलैक्टर नीलाभ सक्सेना एवम् जिला पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय ने यह उदगार भारत विकास परिषद्, हिण्डौन सिटी द्वारा आगामी 23 फरवरी को आयोजित 54वें स्वैच्छिक रक्तदान महोत्सव की सफ़लता के लिए बैनर का विमोचन करते हुए व्यक्त किए। शाखा रक्तदान प्रकल्प प्रभारी मोहित मित्तल ने बताया कि करौली जिला कलैक्टर नीलाभ सक्सेना एवम् जिला पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय ने हिण्डौन शहर एवम् क्षेत्र के रक्तदाताओं से अधिकाधिक रक्तदान कर शिविर को सफल बनाने का आव्हान किया वही शिविर में हरसंभव सहयोग करने को कहा। उन्होंने परिषद् द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों में रक्तदाताओं के प्रति एवम् रक्त संठाहण में लगातार नियमावली व मापदंडों का पालन करने की दृढता की प्रशंसा की। विमोचन कार्यक्रम में अपना घर आश्रम के राष्ट्रीय समन्वयक शैलेन्द्र त्यागी भी शामिल हुए। शाखा उपाध्यक्ष नरेश रामपुरा एवम् परिवार संस्कार प्रभारी सत्यप्रकाश जिंदल ने बताया कि परिषद् द्वारा आगामी 23 फरवरी को भामाशाह देवेन्द्र मित्तल, प्रदीप मित्तल एवम् मोहित मित्तल द्वारा स्व. सुशीला देवी मित्तल की द्वितीय पुण्यतिथि पर 54वां स्वैच्छिक रक्तदान महोत्सव आयोजित किया जाएगा। गत वर्ष प्रथम पुण्यतिथि पर आयोजित किए 48वें स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में कुल 270 यूनिट रक्त संग्रहण हुआ था। परिषद् द्वारा भामाशाहों के सहयोग से विगत 20 वर्षों से सरकारी ब्लड बैंकों के माध्यम से ही स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों का संचालन कर जरूरतमंदों को उनकी जीवन रक्षा के लिए रक्त उपलब्ध करवाने में सहयोग किया जाता रहा है। परिषद् ने समूचे जिले व आस पास के क्षेत्रों में सबसे प्रथम स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित करने एवम् लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित करने की मुहिम चलाई थी इसके परिणाम स्वरूप आज यह क्षेत्र राजस्थान प्रदेश में सबसे बडा रक्त संग्रहण क्षेत्र है। परिषद् के विकलांग सहायता एवम् पुनर्वास प्रकल्प के प्रांतीय प्रभारी देवेन्द्र शर्मा ने बताया कि प्रत्येक वर्ष नियमित अधिकाधिक रक्तदान शिविर आयोजित करने एवम् नए रक्तदाताओं को रक्तदान के लिए प्रेरित करने का लक्ष्य रहता है ।

दो तस्कर गिरफ्तार

गंगापुर सिटी । जीआरपी पुलिस ने अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत बडी कार्रवाई करते हुए रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर एक पर गार्ड लॉबी के पास से दो तस्करों को गिरफ्तार कर उनके पास से 55.932 किलोग्राम अफीम डोडा चूरा बरामद किया है। बरामद मादक पदार्थ की बाजार कीमत लगभग 7 लाख 31 हजार 696 रुपए आंकी गई है। जीआरपी थाना अधिकारी दलबीर सिंह के नेतृत्व में गठित टीम ने गश्त के दौरान संदिग्ध शहजाद और विष्णु नाम के दो व्यक्तियों को रोका। तलाशी के दौरान उनके पास से तीन अलग-अलग बैग में यह मादक पदार्थ मिला। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

महिलाओं को आत्मरक्षा प्रशिक्षण दिया

भरतपुर(निस)। राजस्थान मरू उडान नवाचार तथा बेटी बचाओं बेटी पढाओ के 10 वर्ष पूर्ण होने के तहत जिला प्रशासन एवं महिला अधिकारिता विभाग की ओर से बुधवार को पुलिस लाइन परिसर में महिलाओं को आत्मरक्षा प्रशिक्षण एवं अठासेन विद्यालय रणजीत नगर में साइबर अपराध जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। आरपीएस अनिल जसोरिया एवं प्रोठाामर साईबर पुलिस थाना विजय सिंह ने साइबर अपराध से बचाव एवं डिजिटल साक्षरता के बारे में महिलाओ को बचने व डिजिटल अरेस्ट के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि किसी भी प्रकार के अनजान मोबाईल से अगर उनके पास कॉल आता है तो उससे कैसे बचा जाता है। आजकल साईबर फ्रॉड वाले पुलिस अधिकारी, बैंक अधिकारी बनकर आपसे सूचना लेकर आपके बैंक खाते से सारे पैसे साफ कर लेते है, इनसे सावधान रहते हुए अनजान मैसेज और लिंक को खोलना नही चाहिए। उन्होंने अपने मोबाईल पर आये ओटीपी को किसी भी अनजान व्यक्ति से शेयर नही करने की सलाह दी। कार्यशाला में लगभग 100 महिलाओ ने भाग लिया। इसी के साथ पुलिस विभाग की प्रशिक्षक मिथलेश कुमारी एवं चंचल कुमारी ने महिलाओं के साथ हो रहे शोषण अन्याय एवं दुराचार के प्रति जागरूक किया एवं महिलाओं के आत्मरक्षा प्रशिक्षण के गुण सिखाये। महिलाओं को पंच, किक, ब्लॉक अटैक एवं आत्मरक्षा की कई तकनीके बताई गयी। आत्मरक्षा प्रशिक्षण में भाग लेने वाली 50 महिलाओ को विभाग द्वारा बेटी बचाओ-बेटी पढाओ लोगो प्रिन्टेड ट्रेक सूट का वितरण किया गया। मंचासीन अधिकारियों को बेटी बचाओं बेटी पढाओं लोगो युक्त मग देकर स्वागत किया गया।

ध्वज पूजन के साथ वार्षिक जगदीश मेले का हुआ आगाज

हिंडौन सिटी । समीपवर्ती जगदीश धाम में बुधवार को वैदिक मंत्रोच्चारण व जय जगदीश के जयकारों के बीच ध्वजारोपण के साथ पांच दिवसीय बसंत पंचमी के मेले का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर आयोजित धार्मिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला परिषद करौली के मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवचरण मीना ने जिला कलेक्टर के प्रतिनिधि के रूप में शिरकत की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष घनश्याम थानेदार खेडला ने की। शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि शिवचरण मीना सहित विशिष्ट अतिथि के रूप में तहसीलदार हरसहाय मीना, विकास अधिकारी ऋषिराज मीना, महेन्द्र नेताजी खेडला झंडा पूजन में शामिल हुए ।

उन्होंने जगदीश भगवान के ऐतिहासिक बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए इसे जन जन की अटूट आस्था का केन्द्र बताया। उन्होंने ट्रस्ट के माध्यम से मंदिर के विकास सहित विभिन्न सामाजिक सरोकार के कार्यों में अपनी सहभागिता निभाने के लिए कहा। उन्होंने ट्रस्ट द्वारा संचालित धार्मिक गतिविधियों की सराहना करते हुए जगदीश धाम के विकास की बात कही जिस पर मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष सहित पदाधिकारियों ने इस दिशा में कार्ययोजना बनाने के लिए आश्वस्त किया। इससे पूर्व मंदिर के महंत पं. मनोज शास्त्री व पं. हरिमोहन शास्त्री सहित पण्डितों ने गणेश जी महाराज, शोड्ष मात्रिका, नवठाह आदि के साथ मेले के प्रधान ध्वज का पूजन करवाया। पूजन के कार्यक्रम में मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष घनश्याम खटाना खेडला सहित उपाध्यक्ष राजाराम गुर्जर, कैप्टन शीशराम खटाना, सचिव रामविलास धमाडी, मंदिर ट्रस्ट के शीशराम खटाना पीसीसी सदस्य, मुरारीलाल नेता,दयाराम ठेकेदार, पूर्व सरपंच हंसराज खटाना, सियाराम वकील, कैप्टेन रतनसिंह, शेर सिंह इब्राहिमपुर, कैप्टन नरपत सिंह, सुठीव सिंह, रामभरोसी अध्यापक, समाजसेवी मास्टर नरेश खटाना, भूपेन्द्र खटाना अधैत, कप्तान सरपंच मेढ़े का पूरा, मुरारीलाल जेईएन निसुरा सहित बारह गांवों के पंच पटेलों ने भाग लिया। ट्रस्ट के अध्यक्ष घनश्याम खटाना व सचिव रामविलास धमाडी ने बताया कि 30 जनवरी को कन्हैया दंगल बैठक के गीत आयोजित होगें जिसमें अनेकों पार्टी के गायक प्रस्तुति देंगे। इसी प्रकार 31 जनवरी को सुड्डा पद दंगल का आयोजन होगा जिसमें सुड्डा गायक कलाकार प्रस्तुति देंगे । 1 फरवरी को कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा जिसमें हास्य कवि हाकिम सिंह गुर्जर, हास्य सम्राट कवि जगदीश खटाना, हास्य शिरोमणि सबरस मुरसानी, सीमा पुंडीर, मनोज गुर्जर, राजेन्द्र चौधरी, कृष्ण कुमार सैनी, बाबूलाल डीगीया, प्रियतम नायक हरियाणा हास्य और ओज रस कवि अपनी प्रस्तुति देंगे। 2 फरवरी को मुख्य मेले का आयोजन होगा। जिसमें निकलने वाली रथ यात्रा में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व मंत्री जवाहर सिंह बेढम मुख्य अतिथि होंगे। समारोह में मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष सहित पदाधिकारियों व पंच पटेलों ने मुख्य अतिथि मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद सहित तहसीलदार, विकास अधिकारी आदि अतिथियों का साफा माला पहना कर व भगवान का छाया चित्र प्रदान कर स्वागत सम्मान किया।

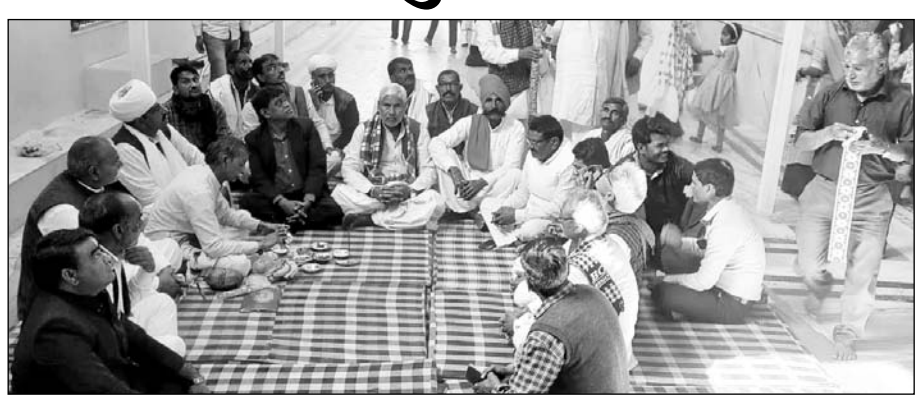

जय जगदीश के जयकारों के बीच ध्वजारोपण के साथ पांच दिवसीय बसंत पंचमी के मेले का शुभारंभ हुआ।

कार्यालय पंचायत समिति करौली

क्रमांक/पसक/लेखा/2024-25/3071-77 दिनांक: 28.01.2025

ई-नीलामी विज्ञापन सूचना-1/2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पंचायत समिति करौली के अधीनस्थ ग्राम पंचायत कैलादेवी में दिनांक 26.03.2025 से 12.04.2025 तक चैत्र नवरात्रा पर्व 2025 में लगने वाले मेले में मोटरसाईकिल पार्किंग/कार/बस पार्किंग/मेला ग्राउण्ड में झूला चकरी (मनोरंजन कार्य बस स्टेण्ड), दुर्गा सागर ग्राउण्ड में झूला चकरी का ठेका ई-नीलामी दिनांक 10.02.2025 को प्रातः 11:00 बजे से पंचायत समिति सभागार में ई-बोली खोली या आयोजित की जावेगी। निविदा में भाग लेने हेतु बोलीदाताओं को फोर्म ऑन-लाईन पोर्टल पर http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in दिनांक 05.02.2025 तक प्राप्त किया जा सकता है। निविदा शुल्क/एम.डी.आर.आई.एस.एल. जयपुर/अमानत राशि की डी.डी. विकास अधिकारी पंचायत समिति करौली के नाम देय होगी। निविदा की शर्तें ऑन-लाईन एवं कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

क्र. सं.	कार्य का नाम	अनुमानित राशि/ सरकारी बोली	निविदा शुल्क	धरोहर राशि	शुल्क/ एम.डी. आर.आई. एस.एल.	निविदा डाउनलोड व हार्ड कॉपी जमा कराने का दिनांक व समय	निविदा खोलने का दिनांक व समय	पार्किंग शुल्क 24 घण्टे तक
1	आवास पशु गौशाला (बाडा) व्यवस्था	100000/-	200/-	50000/-	500/-	05-02-2025 से 07.02.2025 तक 06:00 पीएम तक	10.02.2025 को 11:00 एएम से	
2	कैलादेवी मेले में कार पार्किंग	2310000/-	200/-	200000/-	500/-	"	"	100/-
3	मोटरसाईकिल पार्किंग	300000/-	200/-	200000/-	500/-	"	"	30/-
4	मेला ग्राउण्ड में झूला, चकरी (मनोरंजन कार्य)	300000/-	200/-	200000/-	500/-	"	"	20/-
5	दुर्गा सागर ग्रउण्ड में झूला, चकरी (मनोरंजन कार्य)	200000/-	200/-	100000/-	500/-	"	"	20/-
6	सुआ लाल के खेत में मनोरंजन आदि कार्य	100000/-	200/-	500000/-	500/-	"	"	20/-

(अजीत सिंह)
विकास अधिकारी
पंचायत समिति करौली

शेयर मार्केट में फायदा दिलाने के बहाने करोड़ों की ठगी, बाप-बेटा गिरफ्तार

करीब आठ साल से मोबाइल ऐप के जरिए लोगों को फंसाने का काम चल रहा था, सबसे ज्यादा ठगी महाराष्ट्र-कर्नाटक में की गई

- आरोपियों के पास से 85 लाख की एक लग्जरी कार, 10 लाख नकद, छह मोबाइल फोन और तीन सीपीयू जब्त किये
- आरोपियों ने श्रीगंगानगर के साथ जयपुर में भी करोड़ों रूपए के बंगले व दूसरी प्रोपर्टी खरीदी, गैंग के चार आरोपी फरार हैं
- आरोपियों ने कैपमोर एफएक्स नाम से सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन बना रखी थी, लोगों को शेयर मार्केट में निवेश के तरीके सिखाते थे आरोपी

श्रीगंगानगर, (कासं)। राजस्थान के ठगों ने शेयर मार्केट में फायदा दिलाने के नाम पर 10 हजार करोड़ रूपए का स्कैम किया है। करीब आठ साल से मोबाइल ऐप के जरिए लोगों को फंसाने का काम चल रहा था। सबसे ज्यादा ठगी महाराष्ट्र-कर्नाटक में की गई है। ठगी के लिए ऐप श्रीगंगानगर जिला के युवकों ने बनाई थी। मामले में श्रीगंगानगर पुलिस ने अंबिका एन्क्लेव सेकंड निवासी लाजपत आर्य व उसके बेटे दीपक आर्य नायक को गिरफ्तार किया है। उनके पास से 85 लाख की एक लग्जरी कार, 10 लाख नकद, 6 मोबाइल फोन और 3 सीपीयू जब्त किए हैं। आरोपियों ने श्रीगंगानगर के साथ जयपुर में भी करोड़ों रूपए के बंगले व दूसरी प्रोपर्टी खरीदी हुई है। गैंग के 4 आरोपी फरार हैं। इनमें से एक लाजपत आर्य का बेटा अजय आर्य भी है।

श्रीगंगानगर एसपी गौरव यादव ने बताया कि आरोपियों ने कैपमोर एफएक्स नाम से सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन बना रखी थी। आरोपी लोगों को शेयर मार्केट में निवेश के तरीके सिखाते थे। इसके लिए कर्नाटक और महाराष्ट्र के शहरों में सेमिनार कर ग्राहकों को आकर्षित करते। 15 से 20 दिन की ट्रेनिंग देते और इसके बदले 10 से 15 हजार रजिस्ट्रेशन फीस लेते। फिर ऐप पर निवेश करवाते। आरोपी सॉफ्टवेयर पर पहले छोटे निवेश के खाते खोलते। उदाहरण के तौर पर 1,000 रूपए का खाता खोल निवेश करवाते। फिर ग्राहक को 1500 रूपए रिटर्न कर 500 रूपए का मुनाफा देते और मोटे निवेश के लिए तैयार करते। फिर इनको ही और ग्राहक लाने पर कमीशन का लालच देते थे।

एसपी गौरव यादव ने बताया कि कटप्पा बाबू चौहान की आर से दर्ज मुकदमे में आरोपियों का एक मोबाइल नंबर बताया गया है। इस नंबर को भारत सरकार के प्रतिबिंब ऐप पर चैक किया, पता चला कि इस नंबर पर कर्नाटक और महाराष्ट्र में 5 साइबर फ्रॉड की शिकायतें हैं। पहली शिकायत की छानबीन की तो 75 बैंक खाते सामने आए जिनमें करोड़ों रूपए रकम गई थी। फ्राड के मामले में कर्नाटक निवासी कटप्पा बाबू चौहान के परिवाद पर सदर थाने में आरोपियों पर 4.50 करोड़ रूपए की ठगी का मुकदमा दर्ज किया गया। जब सीओ सिटी ट्रेनी आईपीएस बी. आदित्य ने जांच की तो यह स्कैम बहुत बड़ा निकला। इस केस से जुड़े दूसरे आरोपियों के दुबई भागने की जानकारी है। इनमें दीपक का भाई अजय आर्य, श्रीगंगानगर निवासी सौरभ चावला, उसकी पत्नी सलोनी चावला, पंजाब के अबोहर के गांव वरियामखेड़ा निवासी बलजीत सिंह, कालियां निवासी कर्मजीत सिंह भी हैं। दावा किया जा रहा है ये पूरा स्कैम 10 हजार करोड़ से ज्यादा का है। एसपी गौरव यादव ने बताया कि इस गिरोह में प्रत्येक सदस्य का पता लगाने को दो एफआईआर दर्ज की है। एक पुरानी आबादी में जिसकी एसएचओ ज्योति और दूसरी सदर थाने में जिसकी जांच एसएचओ सुभाष जांच कर रहे हैं।

ग्राम विकास अधिकारी 16 हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार

ग्राम विकास अधिकारी ने वेतन बिल बनाने की एवज में रिश्वत ली

आरोपी ग्राम विकास अधिकारी प्रभुलाल पारगी।

- वीडीओ प्रभुलाल पारगी 25 हजार रुपए की मांग कर परेशान कर रहा था

बांसवाड़ा, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टीम ने बुधवार को भापोर ग्राम विकास अधिकारी प्रभुलाल पारगी को 16 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया।

महानिदेशक पुलिस डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि एसीबी की बांसवाड़ा इकाई को शिकायत मिली थी जिसमें परिवादी ने बताया कि उसके पिता अटल सेवा केन्द्र भापोर में ठेके के माध्यम से सुरक्षा गार्ड की नौकरी करते हैं। उसके पिता को पिछले पांच माह का वेतन भुगतान नहीं हुआ। वेतन बिल बनाने के लिए ग्राम विकास अधिकारी से कई बार कहा इसकी एवज में वीडीओ प्रभुलाल पारगी 25 हजार रुपए की मांग कर परेशान कर रहा है। शिकायत मिलने के बाद एसीबी ने 20 जनवरी को सत्यापन कराया। इसमें आरोपी प्रभुलाल ने परिवादी से 20 हजार रुपए लेने पर सहमति जताई। सत्यापन के दौरान 4 हजार रुपए भी दिए। इसके बाद एसीबी उदयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक राजेन्द्र प्रसाद गोयल के पर्यवेक्षण में एएसपी ऋषिकेश मीना के नेतृत्व में टीम ने कार्यवाही करते हुए आरोपी प्रभुलाल को 16 हजार रुपए रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

फर्जी बैंक अकांउट खोलकर 26 करोड़ की सायबर ठगी, पांच जने गिरफ्तार

- विभिन्न बैंकों के खातों की पासबुक, चैकबुक व एटीएम, डेबिट कार्ड, मोबाइल फोन, सिम कार्ड, रबड़ की फर्जी स्टाम्प मोहरें एवं बैंक संबंधी कागजात बरामद किये
- गिरोह के सदस्य भोले-भाले तथा नशेड़ी प्रवृति के लोगों को चंद रूपयों का प्रलोभन देकर बैंकों में खाते खुलवा लेते थे
- एनसीआरपी पोर्टल पर उक्त बैंक खातों के खिलाफ 16 राज्यों से 66 साइबर पोर्टल शिकायतें दर्ज हैं

हनुमानगढ़, (कासं)। ऑपरेशन साइबर शील्ड के तहत हनुमानगढ़ पुलिस ने सायबर फ्रॉड गिरोह के खिलाफ बुधवार को बड़ी कार्रवाई की। पुलिस ने फर्जी फर्म बनाकर, फर्म के नाम से फर्जी बैंक अकांउट खोलकर करोड़ों रूपए की सायबर ठगी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से विभिन्न बैंकों के खातों की पासबुक, चैकबुक व एटीएम, डेबिट कार्ड, मोबाइल फोन, सिम कार्ड, रबड़ की फर्जी स्टाम्प मोहरें एवं बैंक संबंधी कागजात बरामद हुए हैं।

प्रारंभिक पूछताछ में खुलासा हुआ है कि ठग गिरोह ने म्यूचल अकाउंट्स में लगभग 26 करोड़ रूपए की साइबर फ्रॉड राशि का लेनदेन किया है। एनसीआरपी पोर्टल पर उक्त बैंक खातों के खिलाफ 16 राज्यों से 66 साइबर पोर्टल शिकायतें दर्ज हैं। यह कार्रवाई साइबर पुलिस थाना, जिला साइबर सैल एवं जिला विशेष टीम की ओर से की गई।

डीआईजी अरशद अली ने बुधवार को बताया कि राज्य में चलाए जा रहे विशेष अभियान साइबर शील्ड के तहत भारत सरकार की ओर से संचालित एनसीआरपी पोर्टल/जेएमआईएस पोर्टल पर प्राप्त साइबर फ्रॉड के परिवादों की जांच के संबंध में जिला साइबर सैल, साइबर पुलिस थाना एवं डीएसटी की विशेष टीम गठित कर निर्देश दिए। गठित टीम ने पोर्टल पर प्राप्त साइबर फ्रॉड के परिवादों का गहनता से तकनीकी विश्लेषण किया तो देश के विभिन्न राज्यों में दर्ज 66 परिवादों से हनुमानगढ़ क्षेत्र के 60 खातों में लगभग 26 करोड़ राशि का साइबर फ्रॉड होना पाया गया।

गठित टीम ने विभिन्न तकनीकी साक्ष्यों का गहन परीक्षण कर अथक प्रयासों से साइबर ठगी गिरोह के सदस्य आकाशदीप (28) पुत्र कर्मजीत सिंह जटसिख निवासी चक 1 आरबी, वीपीओ फकीरवाली पीएस पदमपुर जिला श्रीगंगानगर, आदित्य (23) पुत्र नवरंग लाल वाल्मीकि निवासी जीजीएस स्कूल के पीछे हनुमानगढ़ जंक्शन, जाकिर हुसैन (30) पुत्र जानी मोहम्मद निवासी वार्ड 44, बरकत कॉलोनी, हनुमानगढ़ टाउन, कैलाश खीचड़ (26) पुत्र दौलतराम जाट निवासी वार्ड 4, पक्कासारणा पीएस सदर हनुमानगढ़ व निर्देश बिश्नोई (27) पुत्र अजयपाल निवासी वार्ड 7, अबोहर बस स्टैंड के पीछे, संगरिया को गिरफ्तार किया। आरोपियों के कब्जे से विभिन्न बैंकों के खातों की 60 पासबुक/चैकबुक व 32 एटीएम/डेबिट कार्ड, 11 मोबाइल फोन, आठ सिम कार्ड, सात रबड़ की फर्जी स्टाम्प मोहर एवं बैंक संबंधी कागजात बरामद हुए।

डीआईजी अरशद अली ने बताया कि आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि उक्त राशि इन्वेस्टमेंट फ्रॉड (फर्जी ट्रेडिंग एप बनाकर टेलीग्राम के जरिए लोगों से सम्पर्क कर शेयर मार्केट पर पैसा लगाने का झांसा देना), अवैध गैमिंग, क्रिप्टोकरंसी फ्रॉड, यूएसडीटी आदि के जरिए म्यूचल/फर्जी बैंक खातों में लेकर कैश के रूप में निकलवाकर गिरोह के अन्य सदस्यों में बांट देते थे। प्रथमदृष्टतया बैंक कर्मियों की ओर से अकांउट ओपनिंग, नेट बैंकिंग एवं कैश निकासी में जालसाजी कर साइबर ठगों की सहायता करना भी सामने आया है। इसके संबंध में विस्तृत जांच की जायेगी। गिरोह के खिलाफ साइबर पुलिस थाना में अभियोग पंजीबद्ध किए गए हैं। इनका अनुसंधान जारी है।

डीआईजी ने बताया कि साइबर ठग गिरोह के सदस्यों की ओर से भारत सरकार के उद्यम पोर्टल पर फर्जी फर्म का रजिस्ट्रेशन किया गया। इसके बाद गिरोह के सदस्य भोले-भाले तथा नशेड़ी प्रवृति के लोगों को बहला-फुसलाकर या उन्हें चंद रूपयों का प्रलोभन देकर उनके कागजात से विभिन्न बैंकों में बैंक खाते खुलवाकर बैंक की पास बुक, एटीएम, चैक बुक, सिम कार्ड व हस्ताक्षरशुदा चैक अपने पास रख लेते थे। फिर उन बैंक खातों में साइबर ठगी की राशि आने पर हस्ताक्षरशुदा चैक से निकाल लेते। कार्रवाई करने वाली पुलिस टीम में साइबर पुलिस थाना, जिला साइबर सैल व जिला विशेष टीम के सदस्य शामिल थे।

कांस्टेबल व दलाल दो हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार

- भिनाय थाने के कांस्टेबल ने परिवादी की सोने की अंगूठी तक उतरवा ली, शेष रिश्वत राशि के लिए
- कांस्टेबल ने ई-मित्र संचालक विक्रम शर्मा के पास सोने की अंगूठी रखवाई
- परिवादी को बंद करने की एवज में 10 हजार की रिश्वत मांग कर परेशान किया जा रहा था

अजमेर, (कासं)। अजमेर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने बुधवार को दो हजार रूपए की रिश्वत लेते भिनाय थाने में तैनात एक कॉन्स्टेबल एवं दलाल ई-मित्र संचालक को गिरफ्तार किया है। आरोपित कांस्टेबल ने परिवादी को बंद करने की एवज में 10 हजार की रिश्वत राशि मांग कर परेशान किया जा रहा था। एसीबी की ओर से कॉन्स्टेबल व ई-मित्र संचालक से पूछताछ की जा रही है।

एसीबी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भागचंद ने बताया कि शिकायतकर्ता की ओर से अजमेर एसीबी चौकी में शिकायत दी गई। पीड़ित ने शिकायत देकर बताया कि उसके विरुद्ध भिनाय थाने में एक परिवाद दर्ज था, जिसकी जांच कॉन्स्टेबल अर्जुन लाल के द्वारा की जा रही थी, जिसमें राजीनामा हो जाने पर परिवादी को बंद करने की एवज में कांस्टेबल द्वारा 10 हजार की रिश्वत राशि मांग कर परेशान किया जा रहा था।

एएसपी ने बताया कि 15 दिसंबर 2024 को 7 हजार की रिश्वत राशि लेना तय कर उसी दिन 3 हजार रिश्वत राशि लेना और शेष रिश्वत राशि 4 हजार के पेटे परिवादी की सोने की अंगूठी आरोपी ई-मित्र संचालक विक्रम शर्मा के पास रखवाई गयी। पीड़ित ने 18 दिसंबर 2024 को ब्यूरो में शिकायत करने पर 19 दिसंबर को सत्यापन के द्वारा 4 हजार की रिश्वत राशि मांग कर 2 हजार रूपए ई-मित्र संचालक को दिलवाना पाया गया। एसीबी ने शिकायतकर्ता को रिश्वत राशि लेकर भेजा। इसके बाद कांस्टेबल अर्जुन लाल व ई-मित्र संचालक विक्रम शर्मा को 2 हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। रिश्वत राशि आरोपी ई-मित्र संचालक के पहने हुए जैकेट से बरामद की गई। एसीबी दोनों आरोपियों से पूछताछ में जुटी है।

अजमेर जिले का भिनाय पुलिस थाना इन दिनों सुर्खियों है, क्योंकि यहां तैनात एक पुलिसकर्मी द्वारा डोडा-चूरा से भरे ट्रक में से चोरी छीपे डोडा चोरी करने का मामला सुर्खियों में आया था, उसके बाद फिर एक कांस्टेबल द्वारा रिश्वत लेने में गिरफ्तार होने के बाद एक बार फिर इस खाकी ने शर्मसार करने का कार्य किया है।

बीएसएफ जवान की हार्ट अटैक से मौत

जोधपुर, (कासं)। ड्यूटी के दौरान फलोदी के बीएसएफ जवान को हार्ट अटैक आया और निधन हो गया। वो फलोदी के केर डूंगर शिवपुरा के रहने वाले थे। एएसआई पद (170 बटालियन) पर तैनात भंवरलाल जाणी (56) की पोस्टिंग असम के सिलचर में थी। बुधवार दोपहर उनकी पार्थिव देह गांव पहुंची तो पूरे परिवार में कोहराम मच गया। एएसआई भंवरलाल जाणी की पार्थिव देह को बुधवार सुबह हवाई मार्ग से जोधपुर लाया गया। यहां से सुबह 8.30 बजे जोधपुर से सड़क मार्ग से खारा गांव के लिए रवाना हुए। दोपहर करीब 12.30 बजे उनकी पार्थिव देह खारा गांव के बस स्टैंड पहुंची। यहां से घर तक करीब 6 किलोमीटर की तिरंगा यात्रा निकाली गई। गांव में दोपहर करीब तीन बजे जवान को सैन्य सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। भंवरलाल जाणी ने परिवार वालों से 26 जनवरी को फोन पर आखिरी बात की थी। उन्होंने 26 जनवरी को सिलचर में आयोजित प्रोग्राम की फोटो भी परिवार वालों को भेजे थे।

श्रमिक ने आत्महत्या की

निवाई। वनस्थली मोड रीको इंडस्ट्रीज एरिया में एक तेल मिल में काम करने वाले श्रमिक ने अपने क्वार्टर में आत्महत्या कर ली।

थानाधिकारी सूरजमल जाट ने बताया कि तेल मिल के श्रमिक केशवकुमार उर्फ राहुल पुत्र रामपदारथ सिंह उम्र 30 वर्ष निवासी संगरिया जिला हनुमानगढ़ ने अपने क्वार्टर में आत्महत्या कर ली। जिसकी सूचना मिल के मैनेजर ने पुलिस को दी। सूचना पर एएसआई राजेंद्रसिंह मौके पर पहुंचे। जहां पंखे से श्रमिक का शव लटका मिला।

इस पर एफ एसएल व एमओबी टीम को बुलवाया। टीम ने घटना स्थल से विभिन्न साक्ष्य लिए। पुलिस ने शव को पंखे से उतारकर निवाई राजकीय सामुदायिक अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया और मृतक के परिजनों को सूचना दी। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों के सुपुर्द कर दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जनवरी सेशन की जेईई मेन परीक्षा सम्पन्न

- जनवरी सेशन का डिफिकल्टी लेवल मॉडरेट टु टफ माना जा रहा है

कोटा, (निसं)। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी-एनटीए की ओर से बीई/बीटेक के लिए आयोजित जनवरी सेशन की जेईई मेन परीक्षा बुधवार को सम्पन्न हो गई। जनवरी सेशन का डिफिकल्टी लेवल मॉडरेट टु टफ माना जा रहा है। गुरुवार को बीआर्क/बीप्लानिंग के लिए जेईई मेन परीक्षा का पेपर 2 होगा। यह एक शिफ्ट में ही होगा।

मोशन एजुकेशन के फाउंडर और सीईओ नितिन विजय ने बताया कि 22, 23, 24, 28 और 29 जनवरी यानी पांच दिन हुए 10 पेपर के ओवरऑल डिफिकल्टी लेवल की बात करें तो यह मॉडरेट टु टफ रहा। इसमें मैथ्स हमेशा की तरह लेंदी और टफ रहा जबकि फिजिक्स मॉडरेट और केमिस्ट्री आमतोर पर इजी टु मॉडरेट रही। स्टूडेंट्स के मुताबिक जेईई 29 जनवरी शिफ्ट 1 पेपर का डिफिकल्टी लेवल आसान से मध्यम रहा। सवाल संतुलित और करने योग्य थे। हालांकि, मैथ्स सेक्शन लंबा और कठिन था। फिजिक्स में कुछ समय लेने वाले सवाल थे। कुल मिलाकर पेपर कॉन्सेप्ट आधारित सवालों के साथ क्यूरेट किया गया था।

नितिन विजय ने बताया कि जेईई मेन सीएस कटऑफ अंक तैयार करते समय आवेदकों की संख्या, प्रवेश परीक्षा में प्रदर्शन और परीक्षा का कठिनाई स्तर जैसे कारकों को आधार माना जाता है। इस बार जेईई मेन्स परीक्षा में कुल 75 सवाल आए। इसमें मैथ्स, फिजिक्स और केमिस्ट्री सेक्शन में 25-25 सवाल पूछे गए। हर सेक्शन में 20 बहुविकल्पीय और पांच सवाल न्यूमेरिकल थे। गत वर्ष तक कुल 90 सवाल होते थे। इसमें मैथ्स, फिजिक्स और केमिस्ट्री तीनों विषय में 10-10 सवाल न्यूमेरिकल होते थे, जिसमें से केवल 5-5 सवाल ही हल करने होते थे। इस बार चॉइस समाप्त हो गई और स्टूडेंट्स को सभी पांच सवाल अनिवार्य रूप से हल करने पड़े। इससे पेपर डिफिकल्टी लेवल बढ़ गया। ऐसे में इससे एडवांस का काट ऑफ कम होने के आसार है। संभावना है कि कट ऑफ सामान्य के लिए 92, ईडब्ल्यूएस की 83, अन्य पिछड़ा वर्ग-एनसीएल की 81 और अनुसूचित जाति की 63 और अनुसूचित जनजाति की 48 रहे सकती है।

यह मानी जाती है अच्छी और औसत रैंक :-जेईई मेंन 2025 जनवरी सेशन के लिए 13.8 लाख कैंडिडेट्स ने रजिस्ट्रेशन करवाया था। जेईई मेन में टॉप 2000 रैंक को असाधारण माना जाता है और इससे प्रमुख आईआईआईटी (ट्रिपल आईटी), एनआईटी और अन्य शीर्ष संस्थानों में प्रवेश सुनिश्चित माना जाता है। 20 हजार तक रैंक पर आईआईआईटी, एनआईटी और सरकारी वित्त पोषित तकनीकी संस्थानों (जीएफटीआई) में लोकप्रिय शाखाओं में प्रवेश मिलता है। जेईई मेन में 50,000 रैंक एनआईटी और आईआईआईटी में प्रवेश की संभावना कम कर सकती है, लेकिन राज्य सरकार और निजी संस्थान इस श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए विकल्प बने रहते हैं।

चेन तोड़ने के प्रयास में दो गिरफ्तार

अजमेर, (कासं)। क्रिश्चियन गंज थाना पुलिस ने महिला की चेन तोड़ने के प्रयास के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपी नशा करने के लिए वारदात को अंजाम देते थे। हेड कॉन्स्टेबल अर्जुनराम ने बताया कि अभियंता नगर निवासी हेमा नागदेव ने थाने पर मुकदमा दर्ज करवाया था। महिला ने बताया था कि वह अपने घर के सामने धूप में कुर्सी लगाकर बैठी थी। तब फोन पर पति से बात कर रही थी। अचानक बाइक पर आए दो बदमाशों ने चेन तोड़ने की कोशिश की। मामला सामने आने के बाद घटना स्थल पर लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच के बाद गुलाबपुरा निवासी राजवीर उर्फ मनीष (22) पुत्र किशन और आजाद (23) पुत्र सरजीत को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों ने रामगंज और कोतवाली थाना क्षेत्र में भी वारदात को अंजाम दिया था।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म

- देहशोषण से गर्भवती होने पर पीड़िता को एक अस्पताल में भर्ती करवाया
- पीड़िता के पर्चा बयान पर कोतवाली थाने में मुकदमा दर्ज किया, जांच शुरु

श्रीगंगानगर, (निसं)। एक अविवाहित युवती के देहशोषण से गर्भवती होने का मामला सामने आया है। पीड़िता को एक अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। पीड़िता के पर्चा बयान पर कोतवाली थाने में मुकदमा दर्ज किया गया है। इसकी जांच सीओ सिटी आईपीएस बी आदित्य कर रहे हैं।

मिली जानकारी के अनुसार पीड़िता 27 वर्षीय युवती ने पुलिस को दिए बयानों में पदमपुर तहसील के एक गांव निवासी परविंद्रसिंह नाम के युवक पर देहशोषण के आरोप लगाए हैं। पीड़िता के अनुसार उसकी आरोपी युवक से करीब पांच साल पहले इंस्टाग्राम पर चैटिंग होती थी। फिर दोनों में फोन पर बात होने लगी और दोस्ती हो गई। इसी दौरान लॉकडाउन लग गया।

लॉकडाउन के बाद पीड़िता श्रीगंगानगर में एक शोरूम में नौकरी करने लग गई। तब आरोपी पीड़िता से मिलने आता था। आरोपी ने पीड़िता से शादी करने का प्रस्ताव रखा, पीड़िता ने इसे स्वीकार कर लिया। आरोपी प्राइवेट टेक्सी गाड़ी चलाता है। पीड़िता ने दो साल बाद नौकरी छोड़ दी और घर पर ही रहने लग गई।

आरोपी से फोन पर लगातार बातें होती थीं। आरोपी ने मई 2024 के आखिर में पीड़िता को मिलने को बुलाया। पीड़िता बस स्टैंड के निकट पहुंची तो आरोपी उसे अपनी गाड़ी में बैठाकर मंदिर के पास एक कमरे में ले गया। शादी करने का झांसा देकर उससे अनैतिक संबंध बनाए। जल्दी ही शादी करने का कहकर वह उसे वापस बस स्टैंड के निकट ही छोड़ गया। इसके बाद वह शादी करने की बात कहता रहा, लेकिन शादी नहीं की।

चोरी के आरोपी को प्रोडक्शन वारंट पर टोंक जेल से गिरफ्तार किया

चना चोरी के मामले में पुलिस ने टोंक जेल से प्रोडक्शन वारंट पर आरोपी को गिरफ्तार किया।

- फागी गोदाम से 60 क्विंटल चना चोरी होने के मामले में कार्रवाई की
- आरोपी रूडमल उर्फ कजोड़ जाट पुलिस थाना फुलेरा का हिस्ट्रीशीटर है

सांभरझील, (निसं)। गोदाम से चना चोरी करने के मामले में फरार चल रहे आरोपी को थाना पुलिस फागी ने गिरफ्तार कर लिया। चोरी के मामले में अज्ञात के खिलाफ 15 दिसंबर 2024 को विनोद कुमार जैन पुत्र चांदमल जैन निवासी फागी ने इस आशय की रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

जानकारी के अनुसार सुल्तानिया रोड़ ग्राम सेवा सहकारी समिति के सामने स्थित गोदाम मे रात्रि को 60 क्विंटल चना चोरी के संबंध में पुलिस थाना फागी ने प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान किया। जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक आनंद शर्मा के निर्देश पर माल बरामदगी व वांछित मुल्जिमानों की गिरफ्तारी हेतु शिवलाल बैरवा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दूदू व रामधन सांडीवाल डिप्टी फागी के निकटतम सुपरविजन में तथा सह थानाधिकारी फागी शीशराम मीणा के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन व तकनीकी सहायता द्वारा पता लगाया तो प्रकरण में संदिग्ध व्यक्ति रूडमल उर्फ कजोड़ पुत्र रामूराम जाट निवासी हिरनोदा पुलिस थाना फुलेरा जिला जयपुर ग्रामीण वांछित होना पाया गया। मुल्जिम पुलिस थाना मालपुरा, जिला टोंक में अनाज चोरी के प्रकरण में पकड़े जाने के कारण वर्तमान में जिला टोंक की जेल में हिरासत में चल रहा था जिसको प्रोडक्शन वारंट पर जेल से प्राप्त कर प्रकरण में चोरी किये गए माल के संबंध में पूछताछ की तो आरोपी रूडमल उर्फ कजोड़ जाट ने इलाका थाना फागी से दिसम्बर माह मे चना चोरी करने की बात स्वीकार की।

आरोपी से वारदात में शामिल अन्य अभियुक्तों व वारदात में प्रयुक्त वाहन के संबंध में पूछताछ की जा रही है। आरोपी रूडमल उर्फ कजोड़ जाट पुलिस थाना फुलेरा जिला जयपुर ग्रामीण का हिस्ट्रीशीटर है। पूछताछ करने पर आरोपी ने बताया कि सुनसान जगह पर बने अनाज के गोदामों की 8-10 दिन तक रैकी करते हैं। गोदाम में काम करने वाले लोगो की दिनचर्या को देखते हैं। गोदाम के सुबह खुलने व रात्रि में बंद होने की सारी गतिविधि पर नजर रखते हैं तथा गोदाम में काम करने वाले की किस विशेष दिन छुट्टी रहती है, आदि गतिविधियों को गोदाम के आस पास रह कर नजर रखकर वारदात को अंजाम देते हैं।

RAJASTHAN STATE GANGANAGAR SUGAR MILLS LIMITED
(Centre of Excellence for Revenue Research & Analysis) तृतीय मंजिल, अरण्य भवन के पास, झालाना डूंगरी, जयपुर-302004
Tel: 0141-2740841, Fax: 0141-2740676, Email-ID : dgmpurchase.rsgsm@rajasthan.gov.in
NIB. No. RSGSM/DGSET/RC/2024-25/Pur/21 Dated :- 24/01/2025
E-BID NOTICE
Bids for silent type 58.5 to 60KVA DG SET (CPCB IV+) are invited from interested bidders up to 6.00 p.m. of 06.02.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in) of the state; http://excise.rajasthan.gov.in, departmental website.
UBN: GSM2425GLRC00093
Raj.Samwad/C/24/10974 Dy. General Manager (Purchase)

OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER
PWD CIRLCE KOTA
No. 2085 Notice Inviting Bid Date: 20.01.2025
(NIT NO. 13/2024-25)
Bid for Important Rural Road works in Distt. Kota (03 Works) is Invited from interested bidders up to 06.00 PM of 19.02.2025 (Wednesday). Other Particulars of the bids may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rj.nic.in) of the Rajasthan State.
The approximate value of the procurement is Rs. 292.28 Lacs.
UBN NO. PWD2425WSOB13898, PWD2425WSOB13899, PWD2425WSOB13900
(J.P. Gupta)
Superintending Engineer
P.W.D. Circle Kota
DIPR/C/941/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड सलुम्बर
क्रमांक-टीएस/निविदाफाईल/2024-2025/डी-1766-1772 दिनांक-20.01.2025
निविदा संख्या-37/2024-2025
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से राजस्थान सरकार के पात्र श्रेणी के संवेदकों एवं केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनों में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के पात्र श्रेणी के समकक्ष हो उनसे निर्धारित निविदा प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण इन्टरनेट साईट https://eproc.rajasthan.gov.in, https://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.raj.nic.in पर उपलब्ध है।

कार्य का विवरण	12 नं. ग्रेवल सडक एवं पुलिया निर्माण कार्य
अनुमानित लागत (लाखों में)	357.51 लाख
निविदा विक्रय दिनांक	दिनांक 25.01.2025 से दिनांक 13.02.2025
निविदा खोलने की दिनांक	दिनांक 14.02.2025 सांय 4.00 बजे से

NIB NO. PWD2425A3855
UBN NO. PWD2425WSOB13909, PWD2425WSOB13912, PWD2425WSOB13913, PWD2425WSOB13914, PWD2425WSOB13915, PWD2425WSOB13916, PWD2425WSOB13917, PWD2425WSOB13918, PWD2425WSOB13919, PWD2425WSOB13920, PWD2425WSOB13921, PWD2425WSOB13922
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड सलुम्बर
DIPR/C/953/2025

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
PHED DIVISION BARI
Email: eebadi.dho.phed@rajasthan.gov.in.ee_phedbari@yahoo.com
S.No. 1099-1106 Dt. 21.01.2025
NOTICE INVITING BID NO. 26-29/2024-25
Online bids for NIT No. 26-29/2024-25 total four works costing 195.00 Lacs is invited on behalf of The Governor of Rajasthan from eligible enlisted in appropriate class contractors of PHED. Rajasthan and meeting eligibility criteria. Details of Bid notification and pre-qualification criteria can be seen on web site http://sppp.raj.nic.in and https://eproc.rajasthan.gov.in. Bids are to be submitted online in electronic format on web site https://eproc.rajasthan.gov.in from 21.01.2025 to 05.02.2025 at 06.00 PM and bids are to be opened at 03.00 PM on 06.02.2025 in presence of willing bidders/there authorize representative.
NIB: PHE2425A3974
UBN: PHE2425WSOB08362, PHE2425WSOB08363, PHE2425WSOB08364, PHE2425WSOB08365
(Deshraj Singh Gurjar)
Executive Engineer
PHED Division Bari
DIPR/C/955/2025

देवनानी ने सभी दलों को सदन संचालन में सहयोगी बनने का किया आव्हान

स्वस्थ आलोचनाओं से कार्य में आती है नवीन गति : भजनलाल शर्मा

- मंत्री आएंगे तैयारी के साथ, प्रतिपक्ष भी सदन संचालन में बनेगा सहयोगी
- विधान सभा में सर्वदलीय बैठक सम्पन्न

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को विधानसभा में 16वीं विधानसभा के तृतीय सत्र की सर्वदलीय बैठक में हिस्सा लिया। इसके बाद मुख्यमंत्री ने विधानसभा के नए परिवेश का अवलोकन किया। उन्होंने विधानसभा में हुए डिजिटलाइजेशन सहित अन्य नवाचारों की सराहना की। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, संसदीय कार्यमंत्री जोगाराम पटेल, ऊर्जा राज्य मंत्री हीरालाल नागर, मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग सहित विभिन्न दलों के नेता मौजूद रहे।

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि विधानसभा का यह पवित्र सदन प्रदेश की आठ करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व करता है। सदन की कार्यवाही को आम जनता देखती है। प्रदेश की जनता से चुनकर आये जनप्रतिनिधि अपने आचरण और व्यवहार से जन आकांक्षाओं के अनुकूल आदर्श प्रस्तुत करें। देवनानी ने कहा कि विधान सभा सदन नियमों, परम्पराओं व मर्यादाओं से चलता है। उन्होंने सभी दलों से सदन को शांतिपूर्वक चलाने में सहयोग करने और सार्थक बहस में अपनी बात समय सीमा में रखने के लिए कहा है।

विधानसभा के तृतीय सत्र की बैठकें 31 जनवरी से आरम्भ होगी। इससे पहले बुधवार को देवनानी की अध्यक्षता में विधान सभा में सर्वदलीय बैठक सम्पन्न हुई। देवनानी ने कहा कि विधानसभा का सदन नये कलेवर में तैयार हो गया है। सदन को वन-नेशन-वन एप्लीकेशन के तहत सदस्यों की मेजों पर टैब लगाकर तैयार कर दिया गया है। सदन में सार्थक चर्चा और राज्यपाल अभिभाषण को पक्ष और प्रतिपक्ष के सभी सदस्य द्वारा शान्ति पूर्ण सुनने के लिए बैठक में सहमति बनी।

देवनानी ने कहा कि सदस्य सदन में मर्यादित व्यवहार करें और वैल में नहीं आएं। सभी सदस्यों को नियमों के अनुसार बोलने का मौका मिलेगा। विधानसभा का सदन अधिक से अधिक दिन चले, इसके लिए सभी दलों को सकारात्मक सोच रखनी होगी। उन्होंने कहा कि सदन को चलाने की जिम्मेदारी विधान सभा के सभी सदस्यों की है। देवनानी ने बताया कि विधानसभा के 90 प्रतिशत प्रश्नों के जवाब विधान सभा को प्राप्त हो गये हैं। देवनानी ने कहा कि यह शुभ लक्षण है। शेष रहे प्रश्नों के जवाब भी विधान सभा को शीघ्र प्राप्त हो जाएंगे। बैठक में विधान सभा को 90 प्रतिशत प्रश्नों के जवाब प्राप्त होने के लिए विधान सभा अध्यक्ष द्वारा किये गये प्रयासों की मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली सहित सभी ने सराहना की। देवनानी ने कहा कि सभी दलों को चर्चा के लिए नियमानुसार समय आवंटित किया जायेगा। उन्होंने कहा है कि दोनों पक्षों के मुख्य सचेतक को विधान सभा सदन की समय सीमा के अनुसार ही आसन को बोलने वाले सदस्यों की सूची देनी होगी। समय सीमा में ही सदस्यों को अधिक से अधिक अपनी बात रखनी होगी। उन्होंने कहा कि यह दलों के नेताओं की जिम्मेदारी होगी कि उनके दल का सदस्य सदन में अपनी बात को आवंटित समय में ही रखने का प्रयास करे। देवनानी ने कहा कि सभी सदस्य शालीनता से मुद्दे उठाये। देवनानी ने कहा कि यह सदन जनहित के मुद्दों पर चर्चा करने का पवित्र स्थल है। इसकी गरिमा को बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि सदन में अपनी बात रखने के लिए पक्ष व प्रतिपक्ष के सभी सदस्यों की भावना एक समान ही होती है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा सदस्यों की बातो को गम्भीरता से लिया जायेगा। सदस्यों द्वारा उठाई गई समस्याओं का निस्तारण भी कराया जायेगा। उन्होनें कहा कि स्वस्थ आलोचनाओं से कार्य में नवीन गति आती है।

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने आश्वस्त किया कि प्रतिपक्ष सदन संचालन में सहयोग करेगा। प्रतिपक्ष के सदस्य सदन में मर्यादापूर्ण व्यवहार से अपनी बात रखेंगे। उन्होंने कहा कि सदन चलाने की जिम्मेदारी पक्ष के साथ प्रतिपक्ष की भी है। संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि विधान सभा में अध्यक्ष देवनानी की यह ऐतिहासिक पहल है। सदन संचालन में इस सर्वदलीय बैठक के दूरगामी सकारात्मक परिणाम दिखाई देंगे। उन्होंने बैठक में उपस्थित होने वाले पक्ष व प्रतिपक्ष के नेता का आभार ज्ञापित किया। बैठक में सरकारी मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग प्रतिपक्ष के मुख्य सचेतक रफीक खान, बसपा के श्री मनोज कुमार और रालोद के डॉ. सुभाष गर्ग भी मौजूद थे।

बैठक में सदन में पहले से चल रही पर्ची पर बोलने की व्यवस्था पर मंत्रियों से जवाब दिलाने पर भी चर्चा हुई। समितियों की रिपोर्ट पर बहस कराये जाने और अधिकारियों की सदन की अधिकारी दीर्घा में उपस्थिति को सुनिश्चित किये जाने के सुझाव भी आये। विधान सभा में सदन चलाने के लिए सर्वदलीय बैठक का आयोजन देवनानी की ऐतिहासिक पहल है। देवनानी ने सदन को नियमों, मर्यादाओं और शांतिपूर्ण तरीके से चलाने के लिए सभी दलों से सहयोग की अपील की है। उन्होंने कहा है कि विधान सभा के तृतीय सत्र में पक्ष और प्रतिपक्ष के सभी सदस्य सदन में इस तरह का व्यवहार करें कि यह सत्र विधान सभा का आदर्श बन सकें और लोकतंत्र के इस पावन स्थल से आमजन की अपेक्षाएं पूरी हो सके। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने विधान सभा पहुंचने पर अध्यक्ष देवनानी का पुष्प गुच्छ भेंट कर अभिनन्दन किया। अध्यक्ष देवनानी ने मुख्यमंत्री शर्मा, नेता प्रतिपक्ष जूली को विधान सभा का वर्ष 2025 का वॉल एवं टेबल कैलेण्डर भेंट किये। देवनानी ने सभी दलों के नेताओं को सदन के बदले स्वरूप का अवलोकन भी कराया।

लिव-इन को लेकर कानून बनाए सरकार : हाईकोर्ट

- 'पंजीकरण के लिए हर जिले में प्राधिकरण बने'

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने लिव इन रिलेशनशिप में रहने वाले लोगों के लिए कानून बनने की मंशा जताते हुए केन्द्र और राज्य सरकार को इस पर कार्यवाही करने को कहा है। अदालत ने कहा कि जब तक कानून नहीं बन जाता तब तक लिव इन के रजिस्ट्रेशन के लिए हर जिले में सक्षम प्राधिकरण बनाया जाए। यह प्राधिकरण लिव इन में रह रहे जोड़ों की समस्याओं का निवारण करे। अदालत ने इस संबंध में एक वेबसाइट शुरु करने को कहा है ताकि ऐसे रिश्ते से उत्पन्न होने वाले मुद्दों का समाधान किया जा सके। वहीं अदालत ने विवाहित व्यक्ति के किसी अन्य के साथ रखने पर उसे संरक्षण देने को लेकर कानूनी बिंदु तय करने के लिए वृहद पीठ में भेजा है। जस्टिस अनूप कुमार ढंड ने यह आदेश लिव इन में रह रहे जोडो की ओर से दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने कहा कि देश में अभी भी लिव इन को सामाजिक मान्यता नहीं है, लेकिन कानून की नजर में यह अवैध भी नहीं है। देश में लिव इन पर कानून नहीं होने से अदालतों के अलग-अलग फैसलों के चलते बहुत से लोग भ्रमित हो जाते हैं। ऐसे में समय की मांग है कि संसद और राज्य विधानमंडल को इस मुद्दे पर कानून बनाने के लिए विचार करना चाहिए। वहीं ऐसे रिश्ते से हुए बच्चे और महिला को सहायता के लिए अलग से कानून बनाए जाना चाहिए। वहीं ऐसे बच्चों की शिक्षा और पालन पोषण की जिम्मेदारी वहन करने के लिए लिव इन के साझेदारों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिए। अदालत ने कहा कि अदालतों में ऐसे कई मामले आ रहे हैं जिनमें लिव इन में रहने वाला एक पक्ष विवाहित है और बिना तलाक तीसरे के साथ रह रहा है। वहीं कई मामलों में दोनों विवाहित हैं, लेकिन अलग महिला या पुरुष के साथ रह रहे हैं। इन जोडों ने परिवार और अन्य लोगों से जान का खतरा बताते हुए अदालत से सुरक्षा की मांग की है। अदालत ने पूर्व में कुछ मामलों में सुरक्षा दी है, जबकि कुछ मामलों में सुरक्षा देने से मना किया है। ऐसे में इस कानूनी बिंदु को तय करने के लिए वृहद पीठ में भेजना उचित होगा।

वृद्धा को बंधक बनाकर लूटपाट करने वाली नेपाली गैंग गिरफ्तार

जयपुर। गांधी नगर थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम (डीएसटी) जयपुर पूर्व ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए वृद्ध महिला को बंधक बना कर लूटपाट करने वाली नेपाली के गैंग के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से सोने-चांदी के जेवरात सहित तीन लाख 29 हजार रुपये की नकदी भी बरामद की है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्विनी गौतम ने बताया कि गांधी नगर थाना पुलिस और डीएसटी पूर्व ने 21 जनवरी को निवासी देवी पथ सोनी अस्पताल के पास की रहने वाली वृद्ध महिला मंजू देवी कोठारी को बंधक बनाकर लूटपाट करने वाले नेपाली गैंग के शातिर बदमाश मदकुल दमाई और दान बहादुर को गिरफ्तार किया है और साथ ही पारेख बहादुर शाही, निरंजन शाही, प्रवीण बहादुर, महिला आरोपित सावित्री सहित अन्य आरोपी को नामजद कर उनके संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है।

गांधी पथ-पश्चिम के हालातों पर हाईकोर्ट ने लिया स्वप्रेरित प्रसंज्ञान

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने वैशाली नगर स्थित गांधी पथ-पश्चिम के बिगड़ते हालात पर स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लिया है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में राज्य सरकार और जेडीए को नोटिस जारी कर 17 फरवरी तक जवाब तलब किया है। अदालत ने राज्य सरकार के अतिरिक्त महाधिवक्ता जीएस गिल और जेडीए के वकील अमित कुडी को कहा है कि वे मामले में तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश कर बताए कि मौके से अतिक्रमण कब तक हटाया जाएगा। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस प्रमिल कुमार माथुर की खंडपीठ ने यह आदेश मामले में प्रकाशित मीडिया रिपोर्ट्स पर स्वप्रेरित प्रसंज्ञान लेते हुए दिए। वहीं अदालत ने मामले में अदालत का सहयोग करने के लिए अधिवक्ता रिनेश गुप्ता को न्यायमित्र नियुक्त किया है।

अदालत ने मीडिया रिपोर्ट्स का हवाला देते हुए कहा कि गांधी पथ-पश्चिम के हालात बिगड रहे हैं। एरिया की किसी सड़क पर गहरे गड्ढे हैं तो किसी सड़क पर सीवर चैंबर के ढक्कन इतने ऊँचे हो गए हैं कि वहां से वाहन निकलना भी बेहद मुश्किल है। गांधी पथ पर अंडरपास पार करने के बाद एरिया में बिगडे हालात नजर आते हैं। जबकि यहां से रोजाना हजारों वाहन निकलते हैं। अदालत ने मामले में प्रकाशित समाचार का उल्लेख करते हुए कहा कि यहां सीवर लाइन डाले तीन माह बीत चुके हैं, लेकिन अभी तक सड़क निर्माण का काम शुरू नहीं हुआ है। शादियों के सीजन में करीब चार किलोमीटर की दूरी को पूरा करने के लिए चार घंटे भी कम पडते हैं। गांधी पथ पर कई जगह अतिक्रमण होने से रोड संकरी हो गई है और इससे वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पडता है।

'आदिवासी युवा पारंपरिक ज्ञान और आधुनिकता में सामंजस्य बैठाएं'

भारत सरकार के नेहरू युवा केंद्र संगठन की और से गृह मंत्रालय के सौजन्य से आयोजित 16वें आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के चौथे दिन पोस्टर पेंटिंग, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और लोकगीत प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

जयपुर। भारत सरकार के नेहरू युवा केंद्र संगठन की और से गृह मंत्रालय के सौजन्य से आयोजित 16वें आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के चौथे दिन भी उत्साह और ऊर्जा चरम पर रही। कार्यक्रम में पोस्टर पेंटिंग, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और लोकगीत प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि, महानिदेशक, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा, ने आदिवासी समाज की प्रकृति से जुड़ी जीवनशैली की सराहना करते हुए कहा, "आज संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन के संकट से जूझ रहा है, लेकिन आदिवासी समाज जल, जंगल और जमीन के संरक्षक के रूप में सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर जीवन व्यतीत करता आया है। इनकी पारंपरिक जीवनशैली और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान संपूर्ण विश्व के लिए एक मार्गदर्शक है।"

डॉ. भुवनेश जैन, क्षेत्रीय निदेशक, नेहरू युवा केंद्र संगठन, पश्चिमी क्षेत्र, भारत सरकार ने कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम आदिवासी युवाओं को शांति और विकास का वातावरण दिखाने और इससे प्रेरणा लेने के लिए आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष जस्सा राम चौधरी, सेवानिवृत्त आई.ए.एस. ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा, यदि आप लीक से हटकर कार्य करेंगे, तो विशेष उपलब्धियाँ हासिल कर सकते हैं।

कश्मीर हो या गुवाहाटी अपना देश-अपनी माटी : देवनानी

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से आज बुधवार को यहां पूर्वोत्तर के सात राज्यों मणिपुर, नागालैण्ड, असम, सिक्किम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश और त्रिपुरा के तीस विद्यार्थियों के प्रतिनिधि मंडल ने स्टूडेन्टस एक्सपीरियन्स इन्टर स्टेट लिविंग प्रोग्राम के तहत शिष्टाचार भेंट की।

देवनानी ने इस अवसर पर विद्यार्थियों से संवाद करते हुये कहा कि यह कार्यक्रम राष्ट्रीय एकता को जोडने वाला है। यह विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति को समझने में योगदान प्रदान करता है। देवनानी ने कहा है कि उन्हें भी इस कार्यक्रम का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला है और विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति को भी इस कार्यक्रम के तहत उन्होंने नजदीक से पहचाना है। स्टूडेन्टस एक्सपीरियन्स इन्टर स्टेट लिविंग प्रोग्राम के तहत आये विद्यार्थियों ने विधान सभा में स्थित म्यूजियम एवं संविधान दीर्घा का भी अवलोकन किया।

विधानसभा अध्यक्ष देवनानी को दल में आए छात्र-छात्राओं ने बताया कि राजस्थान विधानसभा और यहां के संग्रहालय को देखकर वे गौरव की अनुभूति कर रहे हैं।

महाकुंभ संगम पर भगदड़ प्रायोजित नहीं, विपक्ष को इस मामले में राजनीति नहीं करनी चाहिए : राठौड़

- 'दिल्ली चुनाव ने किया स्पष्ट, कांग्रेस पार्टी अवसरवादी, कभी आप के समर्थन में तो कभी विरोध में लड़ रही है चुनाव'
- 'विधानसभा सत्र में विपक्ष निभाए सकारात्मक विपक्ष की भूमिका'

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने महाकुंभ संगम पर भगदड़ के दौरान घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना की और दिवंगत होने वाले श्रद्धालुओं के परिजनों को दुख की इस घड़ी में सबल प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की। राठौड़ ने आमजन से अपील की कि धार्मिक आयोजन महाकुंभ में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए और श्रद्धालुओं को संयम, धैर्य रखना चाहिए। राठौड़ ने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों में भी विपक्ष आलोचना करने का कार्य कर रहा है। जबकि विपक्ष को ऐसे मामलों में बोलने से बचना चाहिए।

राठौड़ ने कहा कि यह दुखद हादसा हुआ है। यह कोई प्रायोजित नहीं होता कि भगदड़ मचाओ। विपक्ष को ऐसे मामलों में राजनीति नहीं करनी चाहिए बल्कि दिवंगत हुए हैं उनके तथा उनके परिवार के प्रति सद्भावना तथा संवेदनाएं व्यक्त करनी चाहिए। विपक्ष इसमें राजनीति कर रहा है, यह निंदनीय है। राठौड़ ने दिल्ली चुनाव को लेकर किए गए सवाल पर कहा कि कांग्रेस में फूट है, और कांग्रेसी नेताओं में निराशा का भी माहौल है। कांग्रेस कभी आम आदमी पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ती है तो कभी उसके सामने विरोध में मैदान में है। स्वाभिमानी व्यक्ति इस तरह नहीं करता। दिल्ली के शराब कांड को लेकर जब कांग्रेस उनके साथ थी तो बचाव में थे, अब जब विरोध में चुनाव लड़ रहे है तो आरोप लगा रहे है। इससे स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस की मानसिकता स्थाई नहीं है। कांग्रेस अवसरवादी पार्टी है इससे ज्यादा कुछ भी नहीं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने विधानसभा सत्र को लेकर कहा कि विपक्ष को विपक्ष का दायित्व निभाना चाहिए। विपक्ष को सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभानी चाहिए। केवल हंगामा करना सही नहीं है। सदन में बाहुबलियों का काम नहीं है। यहां विपक्ष को गरिमापूर्ण, नीतिगत और सार गर्भित तथ्यों के आधार पर विरोध करना चाहिए। केवल हंगामा करके सुर्खियों में आना यह जनप्रतिनिधियों का दायित्व नहीं है।

राजेश गुर्जर जयपुर देहात दक्षिण के दोबारा जिलाध्यक्ष बने

जयपुर। भाजपा के संगठन पर्व कार्यक्रम के दौरान जिलाध्यक्षों की नियुक्तियों का सिलसिला जारी है। उसी के तहत बुधवार को जयपुर देहात दक्षिण के अध्यक्ष के नाम पर एक बार फिर से युवा अध्यक्ष के रूप में राजेश गुर्जर की नियुक्ति की गई। बुधवार को बगरू में हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने संगठन पर्व के कार्यक्रम में जयपुर देहत दक्षिण के अध्यक्ष राजेश गुर्जर के नाम की घोषणा की। इस दौरान राजेश गुर्जर ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का बुके देकर स्वागत किया।

चेन स्नेचिंग व गैस सिलेंडर चुराने वाले दबोचे

जयपुर। गांधी नगर थाना पुलिस ने चेन स्नेचिंग और गैस सिलेंडर चोरी करने वाली गैंग के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से सोने की चेन और एक दर्जन गैस सिलेंडर बरामद किए है। गांधी नगर थाना पुलिस ने चेन स्नेचिंग और गैस सिलेंडर चोरी करने वाली गैंग के आरोपी शुभम गुर्जर मूलत: गणेश नगर मोती डूंगरी हाल दौलतपुरा एवं हैप्पी सिंह सूरज नगर हाथोज रेलवे फाटक सिरसी रोड करधनी को पकड़ा है।

बालिका के अलावा दो बच्चों को भी बंधक बना रखा था महिला ने

- बच्चों को न ठीक से खाने को देती थी, ना ही नहाने देती थी महिला

जयपुर। नाबालिग दुष्कर्म पीडिता को बंधक बनाकर नौकरानी की तरह रखने वाली गिरफ्तार महिला ने दो अन्य बच्चों को भी बंधक बना रखा था। महिला इन बच्चों को न ठीक से खाने को देती थी ना ही नहाने देती थी। कई महीनों तक बिना नहाए रहने से बच्चों के शरीर में फुंसियां और घाव बन गए थे। दुष्कर्म पीडिता ही इन बच्चों का ध्यान रखती थी। करणी विहार थाना पुलिस ने जब मकान में बंधक बनाए गए बच्चों से पूछताछ की तो कई चौकाने वाली बातें सामने आई।

पुलिस ने बताया कि जिस महिला ने बच्चों को बंधक बना रखा था। उसने रेस्क्यू करने वाली टीम को भी धमकी दी थी। बच्चों का रेस्क्यू तो नवंबर माह में ही कर लिया गया था। उसके बाद से महिला बार बार दबाव बनाकर बच्चों को कस्टडी में लेने की कोशिश कर रही थी। इस मामले में दो महीने बाद महिला की गिरफ्तारी हुई है। फिलहाल महिला को जेल भेज दिया गया है। मामले की जांच वैशाली नगर थाना पुलिस कर रही है।

महिला ने नाबालिग दुष्कर्म पीड़िता को 8 साल तक नौकरानी के तौर पर बंधक बनाकर रखा। वह उससे घरेलू काम करवाती थी। विरोध करने पर डंडे और जंजीर (चेन) से मारपीट करती थी। 16 साल की नाबालिग दुष्कर्म पीड़िता के अलावा दो बच्चे भी बंधक थे, जिनकी उम्र 5-6 साल है। आरोपी महिला काफी समय से मकान पर नहीं आई थी।

रेस्क्यू करने वाली चाइल्ड लाइन की टीम की कोऑर्डिनेटर रुखसाना ने बताया कि काउंसलिंग में सामने आया कि बच्चे तीन सौ वर्ग गज के मकान में अकेले रह रहे थे। इनकी सार संभाल के लिए वहां कोई नहीं था। मधु अग्निहोत्री नाम की जो महिला इन बच्चों को यहां बंधकर बनाकर रख रही थी, वह दो तीन महीने में एक बार रात के समय ही मकान पर आती थी। कुछ देर रुकती और चली जाती थी। इस दौरान बच्चों से कोई गलती हुई होती तो उनके साथ मारपीट करती थी। दरअसल, महिला के बेटे के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज है। इस मामले में महिला भी संदिग्ध थी। जब पुलिस ने उसके हीरापुरा रजनी विहार वाले मकान पर दबिश दी तो वह मकान के पीछे की तरफ वाली दीवार कूदकर भाग गई थी। इसके बाद से महिला इस मकान पर नहीं आती थी।

बच्चे ही इस मकान में जैसे तैसे रह रहे थे। महिला पडोसियों और रिश्तेदारों को यही बताती थी कि वह शेल्टर होम चलाती है और बच्चों की देखभाल करती है। इन तीनों बच्चों को भी वह शेल्टर होम में रखने का ही बताकर लेकर आई थी।

चाइल्ड हेल्पलाइन कोऑर्डिनेटर रुखसाना ने बताया कि बच्चों को समय पर खाना तक नसीब नहीं हो रहा था। दो छोटे बच्चे तो कई बार घर से बाहर निकलकर सडक पर पडी रोटियां तक खा जाते थे। बंधक मुक्त करवाई बालिका ने बताया कि मालकिन ने एक दुकान बता रखी थी। वह उस दुकान पर जाती थी। जहां से उसे कुछ दिन का राशन मिल जाता था। मालकिन ही दुकानदार को बताती थी कि राशन कितना देना है और क्या देना है। इसके बाद वही लाकर खाना बनाती थी। राशन खत्म हो जाता तो फिर कई दिन भूखे रहना पडता। कुछ समय पहले बालिका के घर वाले भी बालिका को लेने आए थे। महिला ने बालिका से उन्हें मिलने तक नहीं दिया। उल्टा डरा धमकाकर घरवालों को वापस भेज दिया। बालिका के परिवार वाले काफी गरीब हैं। बालिका सात साल की थी उस समय उसे मधु, इलाज और पढाई का नाम लेकर अपने साथ लेकर आई थी। आठ साल तक बालिका को नौकरानी बनाकर रखा। मधु ने बालिका को इतना डरा धमका भी रखा था कि शुरुआत में कुछ भी बोलने को तैयार नहीं थी। विश्वास में लेने के बाद उसने टीम को आपबीती बताई।

जब बच्चों का रेस्क्यू किया गया, उनकी हालत काफी खराब थी। सर्दी के बचाव के कपडे तक नहीं थे। जो पहन रखे थे, वो भी फटे पुराने। बालिका ही इन दोनों बच्चों का जैसे तैसे ध्यान रख रही थी। मधु ने दिखावे के लिए बालिका का स्कूल में दाखिला करा दिया था लेकिन स्कूल भेजती नहीं थी। एक बच्चे के पैर में काफी फुंसियां हो रही थी। दूसरे की स्किन डैमेज थी। बच्चे दो महीने से नहाए तक नहीं थे। एक बच्चे के सिर में चोट का निशान मिला। पता करने पर सामने आया कि मधु ने बच्चे से गलती होने पर उसे डंडा मारा था। आरोपी महिला ने बालिका को बंधक बनाकर ही नौकरानी का काम करवा रही थी।

जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में दिखेगी यूरोपीय साहित्य और संस्कृति की झलक

राजधानी जयपुर की होटल क्लार्क्स आमेर में गुरूवार को साहित्य का महाकुंभ शुरू होगा। फेस्टिवल के स्थल पर दरवाजों को खूबसूरत तरीके से सजाया गया है।

जयपुर। होटल क्लार्क्स आमेर प्रांगण गुरुवार को गुनगुनी धूप में शब्दों के तिलिस्म और सुलगते विचारों से गुलजार होगा। यहां 3 फरवरी तक जेएलएफ में शब्दों के महारथी साहित्य रथ पर सवार रहेंगे। वहीं लेखकों, बुद्धिजीवियों और अदबी श्रोताओं की चहल कदमी से जश्न का माहौल रहेगा। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के 18वें संस्करण में यूरोपीय संघ (ईयू) की भागीदारी से यूरोपीय संघ और भारत के सांस्कृतिक व साहित्यिक संबंधों को मजबूती मिलेगी।

यूरोपीय साहित्य की समृद्ध विविधता, सांस्कृतिक और भाषाई विरासत की झलक देखने को मिलेगी। यूरोपीय संघ के 15 से अधिक नामी लेखक हिस्सा ले रहे हैं। इसमें लेखिका गैब्रिएला रूइवो खासतौर से शामिल हैं। यूरोप की विविधता और रचनात्मकता को दर्शाने वाली कहानियां सुनने को मिलेगी। तीस जनवरी को होने वाले एक सत्र बुक्स, आइडियाज एंड डिजिटल इकोसिस्टम में भारत में यूरोपीय संघ के राजदूत, हर्वे डेल्फिन, यूरोपीय संघ के लेखकों के साथ शामिल होंगे। गौरतलब है कि 27 देशों वाला यूरोपीय संघ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। आबादी में चीन व भारत के बाद तीसरे स्थान पर है। हालांकि विविधता से परिपूर्ण, यूरोपीय संघ बनाने वाले सभी देश समान बुनियादी मूल्यों शांति, लोकतंत्र, कानून और मानवाधिकारों के लिए प्रतिबद्ध हैं।

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा को लेकर हुई बैठक

परीक्षा केन्द्र से 100 मीटर क्षेत्र में ई-मित्र एवं साइबर कैफे बन्द करवाने के निर्देश दिए

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आगामी दो फरवरी को दोपहर 12 बजे से दोपहर तीन बजे तक एक पारी में 127 परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित होने वाली राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा-2024 के संबंध में परीक्षा कार्य से जुड़े अधिकारियों एवं केन्द्राधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं उपसमन्वयक दलों को प्रशिक्षण देने के लिए जिला कलेक्टर लोक बन्धु की अध्यक्षता में बुधवार को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सभागार में बैठक का आयोजन किया गया। इसमें परीक्षा केन्द्र से 100 मीटर क्षेत्र में ई-मित्र एवं साइबर कैफे बन्द करवाने के निर्देश दिए गए।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं नोडल अधिकारी परीक्षा वन्दना खोरवाल ने बताया कि राजस्थान राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा 2 फरवरी को एक पारी में राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा आयोजित होगी। इसके सफल, निष्पक्ष एवं सुचितापूर्ण आयोजन के लिए जिला कलेक्टर लोक बन्धु की अध्यक्षता में प्रशिक्षण बैठक आयोजित की गई। प्रशिक्षण नन्दकिशोर प्रजापति द्वारा दिया गया। जिला कलेक्टर लोक बन्धु ने कहा कि राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा-2024 के संबंध में परीक्षा कार्य से जुडे अधिकारियों एवं केन्द्राधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं उपसमन्वयक दलों के प्रशिक्षण सत्रा में राजस्थान लोक सेवा आयोग की सम्पूर्ण

- **आगामी दो फरवरी को एक पारी में आयोजित होगी प्रतियोगी परीक्षा**

गाईड लाईन के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। राज्य सरकार परीक्षा को सुचिता के साथ आयोजित करवाने के लिए गम्भीर है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वीसी के माध्यम से राज्य के समस्त जिला कलक्टर्स एवं पुलिस अधीक्षकों के साथ विस्तृत चर्चा की है। परीक्षा के दौरान लापरवाही एवं असंवैधानिक कृत्य करने वालों पर तत्काल कार्यवाही की जाएगी।

उन्होंने कहा कि परीक्षा आयोजन में सहभागिता प्रदान कर रहे समस्त विभागों द्वारा भी नियन्त्राण कक्ष स्थापित किए गए हैं। परीक्षा आयोजन के संबंध में किसी प्रकार की शंका एवं बाधा होने पर स्वयं के स्तर पर निर्णय लेने के स्थान पर आयोग, परीक्षा शाखा अथवा नियंत्रण कक्ष से सम्पर्क किया जा सकता है। नोडल अधिकारी परीक्षा भी हमेशा उपलब्ध है। प्रत्येक परीक्षा को एक नई चुनौति मानते हुए निर्धारित प्रोटोकॉल, प्रक्रिया एवं निर्देशिका का पालन सुनिश्चित किया जाए।

उन्होंने बताया कि राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा में जिले में 127 परीक्षा केन्द्रों पर 43 हजार 99 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। अजमेर जिला मुख्यालय पर 102 परीक्षा केन्द्र है। उन्होंने बताया कि परीक्षार्थियों को राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा में साधारण गर्म कपड़े एवं शूज पहनकर बैठने की अनुमति प्रदान की गई है।

अत: परीक्षा केन्द्र पर प्रवेश दिये जाने से पूर्व परीक्षार्थियों की गहन सुरक्षा जाँच किये जाने के निर्देश प्रदान किए गए। अभ्यर्थी को उत्तर पत्राक की कार्बन प्रति चयन प्रक्रिया पूर्ण होने तक सुरक्षित रखनी होगी एवं आयोग द्वारा मांगे जाने पर प्रस्तुत करनी होगी। अभ्यर्थियों द्वारा परीक्षा केन्द्र पर सफेद, व्हाइटनर एवं करेक्शन पैन लाना पूर्णत: निषिद्ध है। परीक्षा से दो दिवस पूर्व सभी परीक्षा केन्द्रों को खुला रखने के लिए केन्द्राधीक्षकों एवं संस्था प्रधानों को पाबन्द किया गया।

श्वान के इलाज में लापरवाही बरतने का आरोप, पशु चिकित्सा को पीटा

नाराज लोगों ने पशु चिकित्सक के साथ मारपीट कर क्लिनिक में तोड़फोड़ की

अजमेर, (कासं)। अलवर गेट थाना क्षेत्र के नसीराबाद रोड बिहारी गंज क्षेत्र के मुख्य मार्ग पर स्थित निजी पशु चिकित्सक के क्लिनिक में उस समय हंगामा हो गया, जब पालतु श्वान की इलाज के दौरान लापरवाही से मौत हो गई। नाराज लोगों ने चिकित्सक को दौड़ा-दौड़ा कर पीटा। दोनों पक्षों ने परस्पर एक-दूसरे के खिलाफ थाने में मुकदमा दर्ज करवाया है। पुलिस मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

- **दोनों पक्षों ने परस्पर एक-दूसरे के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया**
- **आरोपी है कि श्वान के इलाज पर करीब 15 हजार रुपए खर्च हो गए**

अलवर गेट थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गौरव पथ स्थित आनंद नगर निवासी डॉ. देवेंद्र सिंह ने शिकायत देते हुए बताया कि उनका पशु क्लीनिक नसीराबाद मुख्य मार्ग बिहारी गंज के पास स्थित है। 28 जनवरी को वह अपने क्लीनिक में बैठा था, तभी लाखन महावरी, गौरी सहित 7-8 लोग आए और क्लीनिक तोड़-फोड़ शुरू कर दी। आरोपियों ने सर्जरी टेबल, फ्रीज सहित कई कीमती उपकरण तोड़ दिए। डॉ. सिंह ने आरोप लगाया कि हमलावरों ने उनके साथ भी मारपीट की, जिससे उनके सिर में गंभीर चोटें आई। जब वह अपनी जान बचाकर भागे तो एक महिला ने उनके गले से सोने की चेन तोड़ ली और क्लीनिक में रखे 45 हजार रुपए भी चुरा लिए। वहीं दूसरी ओर कल्याणीपुरा निवासी गौरी ने थाने में चिकित्सक के खिलाफ शिकायत देते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है, जिसमें बताया कि उनके बीमार पशु का इलाज डॉ. देवेंद्र के यहां पर चल रहा था। इलाज पर करीब 15 हजार रुपए खर्च हो गए। इलाज में लापरवाही के चलते पशु की मौत हो गई। महिला ने बताया कि डॉ. सिंह ने आश्वासन दिया था कि उनके क्लीनिक से श्वान खरीदने पर स्वस्थ्य मिलेगा। झांसे में आकर उन्होंने पशु खरीद लिया, लेकिन दो दिन बाद ही वह बीमार हो गया। डॉ. सिंह के पास जब वह इलाज के लिए गए तो उन्होंने दवा देकर भेज दिया, लेकिन स्वास्थ्य में सुधार नहीं होने पर उन्होंने सरकारी अस्पताल में दिखाया तो पता चला कि पशु का वैक्सीनेशन ही नहीं हुआ है। पुलिस ने दोनों पक्षों की ओर से मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े आज शाहपुरा दौरे पर रहेंगे

जिला कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने कार्यक्रम स्थल व हेलीपैड निर्माण की तैयारियों का जायजा लिया।

भीलवाड़ा/शाहपुरा, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े गुरुवार को भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा क्षेत्र के एक दिवसीय दौरे पर रहेंगे। राज्यपाल बागड़े गुरुवार को प्रात: 11 बजे जयपुर से हेलीकॉप्टर द्वारा प्रस्थान कर 11.45 बजे शाहपुरा हेलीपैड पर पहुंचेंगे।

राज्यपाल बागड़े दोपहर 12 बजे मणिहार कॉटेज पहुंचेंगे जहां वे "वैश्विक संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली, अंतर्दृष्टि और नवाचार" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में शिरकत करेंगे। इसके पश्चात राज्यपाल दोपहर 1:50 बजे कार्यक्रम स्थल से हेलीपैड के लिए रवाना होकर वापस जयपुर हेतु प्रस्थान करेंगे।

जिला कलेक्टर नमित मेहता व पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह ने बुधवार को शाहपुरा पहुंचकर कार्यक्रम स्थल मणिहार कॉटेज एवं हेलीपैड स्थल का जायजा लिया। जिला कलेक्टर ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पहुंचकर अस्थाई हेलीपैड निर्माण की तैयारियां देखी। उन्होंने कार्यक्रम स्थल की साफ-सफाई, मंच, आगंतुकों के रजिस्ट्रेशन व बैठक व्यवस्था, पार्किंग स्थल, माईक सिस्टम इत्यादि तैयारियों की जानकारी ली। कलेक्टर ने प्रशासन व पुलिस के अधिकारियों को आवश्यक तैयारियां पूरी करने के निर्देश दिए। इस दौरान कार्यवाहक अतिरिक्त कलेक्टर राजकेश मीणा, उपखंड अधिकारी भरत मीणा, प्रताप सिंह बारहट महाविद्यालय प्राचार्य पुष्कर्राज मीणा सहित प्रशासन और पुलिस के अन्य वरिष्ठ अधिकारी व आयोजक मौजूद रहे।

दो हिस्ट्रीशीटर समेत तीन जने गिरफ्तार

- **पुलिस ने पूर्व में आठ आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था**
- **दो आरोपियों पर 5-5 हजार का इनाम घोषित था**
- **गत दिनों राह चलते युवक पर हमला किया था**

अजमेर (कासं)। गत दिनों राह चलते युवक पर जानलेवा हमला करने वाले दो हिस्ट्रीशीटर समेत 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दो आरोपियों पर 5-5 हजार का इनाम घोषित किया हुआ था। पुलिस ने पूर्व में आठ आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया था। बुधवार को इस मामले का खुलासा अजमेर एसपी वंदिता राणा ने किया।

एसपी वंदिता राणा ने बताया कि मामले में मुख्य आरोपी हिस्ट्रीशीटर सुनील हाकला व मोनू गुर्जर सहित एक अन्य आरोपी भोला फरार चल रहा था। इसके बाद हिस्ट्रीशीटर सुनील और मोनू गुर्जर पर 5-5 हजार का इनाम घोषित था, जहां पुलिस इन दिनों इनामी बदमाश समेत भोला की तलाश कर रही थी। टीम के द्वारा तीनों आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए अलग-अलग जगह पर दबिश दी गई। मुखबिर की सूचना पर टीम ने कार्रवाई करते हुए सिविल लाइन निवासी सुनील हाकला (25) पुत्र रामदेव और मोनूगुर्जर पुत्र नारायण और वैशाली नगर निवासी भोला (30) पुत्र अशोक को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में सामने आया कि गाड़ी साइड देने के बात को लेकर युवक के साथ मारपीट की थी। दोनों हिस्ट्रीशीटर अपना दबदबा बढ़ाने के लिए लोगों संगठित अपराध से सम्मिलित होकर अपराध के षड्यंत्र में शामिल होकर लोगों के साथ मारपीट करते थे। तीनों आरोपियों के खिलाफ पूर्व में भी विभिन्न मुकदमे दर्ज हैं।

एसपी वंदिता राणा ने बताया कि लाडपुरा निवासी सुमेर सिंह ने गेगल थाने में मुकदमा 29 दिसंबर को दर्ज करवाया था। पीड़ित ने शिकायत देकर बताया कि उसका भाई सूरज अपनी मोटरसाइकिल से लाडपुरा जा रहा था। तभी उस पर जानलेवा हमला किया गया। मामले में मुकदमा दर्ज कर टीम का गठन कर कार्रवाई के निर्देश दिए थे। टीम ने पूर्व में कार्रवाई करते हुए आठ आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया था।

चाकूबाजी मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र स्थित पीएंडटी चौराहे पर गत दिनों हुई चाकूबाजी के मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस का कहना है कि शेष तीन आरोपियों की तलाश जारी है।

थाना प्रभारी सुरजीतसिंह के अनुसार, लोकेश बलाई, विश्वजीत उर्फ मलिंगा व इनके साथी 24 जनवरी की रात मानसरोवर झील क्षेत्र में थे, जहां इनकी किसी बात को लेकर इरशाद नामक युवक से कहासुनी हो गई। इसके बाद ये युवक वहां से चले गये। बाद में इरशाद पान खाने के लिए पीएंडटी चौराहा गया, जहां लोकेश, मलिंगा व इनके साथियों का इरशाद से फिर सामना हो गया।

इसे लेकर इन युवकों में से किसी ने इरशाद पर चाकू से ताबड़तोड़ वार किये, जिससे उसके शरीर पर 13 घाव लगे। गंभीर रूप से घायल इरशाद को एमजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। इस घटना को लेकर बाद में पीड़ित के पिता चांद खां कायमखानी ने थाने में रिपोर्ट दी। पुलिस ने इस मामले में सूरज (27) पुत्र रमेश नायक निवासी जवाहर नगर को गिरफ्तार कर लिया। वहीं लोकेश व मलिंगा सहित तीन आरोपी अभी फरार हैं, जिनकी पुलिस तलाश कर रही है।

मनोहरपुर की माधोवैणी नदी में चारे में आग लगी

- **आग से लाखों रुपये के पानी के पूले जलकर राख**
- **फायर ब्रिगेड अधिकारियों ने ग्रामीणों के साथ मिलकर आग पर काबू पाया**

मनोहरपुर, (निसं)। कस्बे के शिवपुरी मालियों की ढाणी के पास बुधवार को माधोवैनी नदी में पानी के पुलों में अचानक आग लग गई। नदी में दो घंटे तक आग में पानी के पूले जलते रहे। आग में लाखों रुपये के पूले जल कर राख हो गए। मौके पर कोई भी अधिकारी नहीं पहुंचे। ग्रामीणों ने आग की सूचना विधायक मनीष यादव को दी। विधायक यादव ने घटनास्थल पर तुरंत अग्निशमन गाड़ी भेजी। सूचना पर पहुंचे अग्निशमन अधिकारीयों ने आग पर काबू पाया ।

लोगों ने बताया कि नदी के अंदर खड़े पानी के पूलों में अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। आग में लग भाग पाँच सौ मीटर में खड़े लाखों रुपये के पानी के पूले जल कर राख हो गए। उन्होंने आग की सूचना विधायक मनीष यादव को दी। विधायक यादव ने आगे की सूचना फायर ब्रिगेड अधिकारियों को दी सूचना पर पहुंचे फायर ब्रिगेड अधिकारियों ने ग्रामीणों के साथ मिलकर आग पर करीब दो घंटे के बाद कड़ी मशक्कत के बाद काबू पाया गया। इससे पूर्वी ग्रामीणों ने आग पर काबू पानी का प्रयास किया लेकिन सफल रहे। वहीं थाना पुलिस के जवान मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। ग्रामीणों में भय का माहौल बन गया। इस दौरान मौके पर पहुंचकर राजेश खटूमरिया, मुकेश गढ़वाल, धूनिलाल प्रजापत, कृष्ण यादव, निर्मल शर्मा, रोहिताश गढ़वाल, मोहित प्रजापत आदि ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया।

नायब तहसीलदार दलीप चौधरी का कहना है कि आग लगने की सूचना मिली है लेकिन मौके पर दमकल गाड़ी पहुंचकर आग पर काबू पर लिया गया है।

वहीं पटवारी राजेंद्र गुर्जर और प्रियंका ने एक दूसरे पर पल्ला झाड़ने हुए नजर आए। उन्होंने जानकारी प्राप्त करने पर बताया कि मुझे अभी तक चार्ज नहीं दिया गया है, जबकि राजेंद्र गुर्जर का कहना है कि मैं प्रियंका जांगिड़ को चार्ज दे चुका हूं। वहीं हड़ताल होने के कारण पटवारी मौके पर नहीं पहुंच सके।

नकली घी बेचने का आरोपी गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। शहर के महामंदिर पुलिस ने नामी कंपनियों के नाम से नकली घी का कारोबार करने वाले व्यापारी के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया है। आरोपी की मंडोर कृषि मंडी में दुकान पर रेड देकर भारी मात्रा में माल जब्त किया है। पुलिस ने जब्त घी तेल के सैंपल भी भरवाए। जिसमें अब अग्रिम जांच जारी है। महामंदिर पुलिस ने सोमवार को कृषि मंडी में एस ब्लॉक में आई एक ट्रेडिग दुकान पर छापा मारकर वहां से नकली घी तेल होने के संदेह में माल को जब्त कर सीलबंद किया था। दुकानदार दिलीप नगर, लालसागर निवासी सुनील राठी के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया और उसे बाद में गिरफ्तार किया गया।

झगड़े में घायल बच्चे की मौत, दो पुलिस सरंक्षण में

जोधपुर, (कासं)। झगड़े में घायल हुए बच्चें की मंगलवार की शाम को मथुरादास माथुर अस्पताल में उपचार के बीच मौत हो गई।

जोधपुर शहर के महामंदिर थाना क्षेत्र मानसागर पार्क के बाहर पार्किंग के फुटपाथ पर 24 जनवरी को क्रिकेट खेलने की बात पर बच्चों में विवाद हो गया था। कुछ बच्चों ने एक बच्चें पर प्लास्टिक बल्लों और स्टांप से हमला कर दिया। विवाद और झगड़ा करने वाले बच्चों के खिलाफ परिजन ने महामंदिर थाने में रिपोर्ट दी थी। घटना का वीडियो भी आज वायरल हो गया और सीसीटीवी फुटेज सामने आए हैं।। पुलिस तक मामला पहुंचने के बाद दो बालकों को सरंक्षण में लिया गया है । मृतक बच्चा सरदारदून विद्यालय में आठवीं कक्षा में अध्ययनरत था।

दरअसल महामंदिर के ब्रह्मपुरी इलाके में रहने वाला 13 साल का मौलिक दवे पुत्र अमित दवे सरदारदून विद्यालय में आठवीं कक्षा में अध्ययनरत था। 24 जनवरी को वह अपने घर के पीछे मानसागर पार्क के बाहर पार्किंग के फुटपाथ स्थल पर अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने के लिए पहुंचा था। तब वहां पर नजदीक के मसानिया गेट के कुछ और बच्चें भी क्रिकेट खेलने पहुंच गए। तब उनके और मौलिक दवे के बीच में वहां पर क्रिकेट खेलने की बात को लेकर विवाद हो गया। तब कुछ बच्चों ने प्लास्टिक बल्लें एवं स्टांप से मौलिक दवे से गुत्थमगुथा होते हुए हमला कर दिया।

बच्चों के बीच हो रहे झगड़े की बात मौलिक दवे के घर तक पहुंचने पर उसकी मां उसे छुड़ाकर घर ले गई। फिर वह कमरें में सोने चला गया। कुछ देर बाद ही मौलिक की सांसे फूलने लगी और मुंह से भी झाग निकलने लगा। तब उसे तत्काल एमजीएच लाया गया। यहां पर डॉक्टर ने ब्रेन हेमरेज बताते हुए इमरजेंसी पर ले लिया। उसकी पल्स भी गिर कर जीरो पर आ गई।

अवैध खनन के खिलाफ पुलिस टीम ने कार्रवाई की

एक जे.सी.बी., तीन ट्रैक्टर मय ट्रॉली बजरी से भरे हुए जब्त

पुलिस टीम ने जब्त जे.सी.बी., ट्रैक्टर मय ट्रॉली को थाने में खड़ा करवाया।

ब्यावर, (निसं)। अवैध खनन के खिलाफ पुलिस टीम ने कार्रवाई की है। टीम ने अवैध खनन कर बजरी परिवहन करते एक जे.सी.बी., तीन ट्रैक्टर मय ट्रॉली बजरी से भरे हुए जब्त किये। केकिन्डडडा नदी से अवैध खनन करते चार ट्रैक्टर मय ट्रॉली खाली जब्त किये।

जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एंव वृताधिकारी वृत्त जैतारण के निकटतम सुपरविजन में थानाधिकारी आनंदपुर कालू पन्नालाल और पुलिस टीम ने 28 जनवरी को रात्रि में गश्त के दौरान अवैध खनन के खिलाफ कार्रवाई करते हुए अवैध बजरी खनन व परिवहन करते एक जे.सी. बी. मशीन, तीन ट्रैक्टर मय ट्रॉली बजरी से भरे हुए एवं चार ट्रैक्टर मय ट्रॉली खाली को जब्त किये। वहीं अग्रिम कार्रवाई हेतु खनन विभाग को सूचित किया गया। थानाधिकारी पन्नालाल की पुलिस टीम में सहायक उप निरीक्षक सुखदेव एवं कांस्टेबल माणकराम, सुनिल, गोविन्दराम, शैतान राम, रामकिशोर, स्वरूपराम, करतारसिंह, रामनिवास, बस्तीराम, पप्पुराम, राकेश आदि थे।

फॉर्च्यूनर कार ने बाइक सवार दो युवकों को कुचला

कोली समाज के लोगों ने मांगों को लेकर प्रदर्शन किया।

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के सुभाष नगर थाना क्षेत्र में बीती रात तेज रफ्तार फॉर्च्यूनर कार ने बाइक सवार दो युवकों को कुचल दिया। कोली समाज के दो युवकों को टक्कर मारकर घायल करने के मामले में बुधवार को कोली समाज ने विरोध प्रदर्शन कर, दोषियों पर सख्त कार्रवाई और घायलों को 15-15 लाख के मुआवजे की मांग की है।

कोली समाज विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष ओमप्रकाश कोली के नेतृत्व में दिए ज्ञापन में बताया गया कि समाज के

- **दोनों युवकों की हालत गंभीर, लोगों ने मांगों को लेकर प्रदर्शन किया**

दो युवा कृष्णा पुत्र मुकेश कोली (14) और उसका साथी ललित पुत्र बाबूलाल कोली (14) को रजिस्ट्रार कार्यालय के बाहर कार चालक ने लापरवाहीपूर्वक टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही दोनों लड़के उसी समय अचेत हो गए उनको आसपास के लोगों ने महात्मा गांधी हॉस्पिटल में भर्ती करवाया, जहां से डॉक्टरों ने हाई सेंटर पर ले जाने की सलाह दी। जिनको तत्काल इलाज के लिए हाई सेंटर में भर्ती करवाया गया, जिनकी हालत गंभीर बनी हुई है। ज्ञापन में सभी फरार आरोपियों को गिरफ्तार करके घायलों को उच्च स्तर पर इलाज करवाने और घायलों को 15-15 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दिलाने की मांग की गई है।

पाली में महिला से रेप का आरोपी हलवाई गिरफ्तार

पाली, (नि.सं.)। पाली में एक महिला से रेप करने के आरोपी हलवाई को पुलिस ने गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार पाली शहर के सदर थाने में दिसम्बर 2024 में रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। जिसमें 35 साल की महिला ने बताया कि वह सदर थाना क्षेत्र के एक गांव में मिठाई की शॉप चलाने वाले जोधपुर जिला निवासी 31 साल के मांगूसिंह पुत्र भंवरसिंह की दुकान पर लड्डू बनाने के काम पर जाती थी। कुछ दिन पहले आरोपी हलवाई मांगू सिंह उसे घर छोड़ने के बहाने बाइक पर बिठाकर ले गया और बीच रास्ते सुनसान जगह पर उससे डरा धमकाकर रेप किया। आरोप है कि आरोपी ने मोबाइल में उसका अश्लील वीडियो भी बनाया। वीडियो व फोटो वायरल करने की धमकी देकर आरोपी ब्लैकमेल कर कई बार रेप किया। 21 दिसंबर 2024 को आरोपी ने डरा धमकाकर उससे फिर से रेप किया। आखिर परेशान होकर उसने सदर थाने में आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज होने पर आरोपी की तलाश शुरू की और जोधपुर जिले से उसे पकड़कर लाई। जिसे मंगलवार को मेडिकल के लिए पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लाया गया। जहां उसका मेडिकल करवाया गया।

अवैध बजरी खनन में आठ डम्पर जब्त, चालक गिरफ्तार

- **दो अलग-अलग क्षेत्रों में कार्रवाई की**

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देशन में चलाये जा रहे विशेष अभियान अवैध बजरी खनन व परिवहन के तहत वृताधिकारी निवाई मृत्युजंय मिश्रा व थानाधिकारी हीरालाल वर्मा द्वारा गठित टीम ने अवैध बजरी परिवहन करते हुए तीन डम्परों को अवैध बजरी सहित जब्त किया। वहीं चालक रामरतन पुत्र रामकरण मीणा निवासी मरजानीपुरा कोटखावदा जिला जयपुर, हेमराज पुत्र गिरधारी गुर्जर निवासी छानबास सूर्या थाना मेहन्दवास एवं शंकरलाल पुत्र राजाराम गुर्जर निवासी मारखेडा थाना पीपलू जिला टोंक को गिरफ्तार कर उसके विरूद्ध एमएमडीआर एक्ट में प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान जारी है। इसी प्रकार मेहन्दवास थाना क्षेत्र थानाधिकारी ओमप्रकाश के नेतृत्व में गठित टीम ने अवैध बजरी से भरे पांच डम्पर जब्त कर चालक रामेश्वर गुर्जर को गिरफ्तार किया है।

राशिद हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं। इंग्लैंड के कप्तान ने आखिरी विकेट के लिए 24 रन की साझेदारी करने का श्रेय राशिद और वुड को भी दिया।
- जोस बटलर

इंग्लैंड के कप्तान, आदिल राशिद के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

स्टीव स्मिथ

ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज स्टीव स्मिथ ने बुधवार को बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए सबसे तेज शतक ठोका। उन्होंने गॉल के मैदान पर स्टंप्स तक 188 गेंदों में 10 चौकें और 1 छक्के के दम पर नाबाद 104 रन बनाए। ये उनके टेस्ट करियर का 35वां शतक है। वह टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा सेंचुरी लगाने वाले प्लेयर्स की फेहरिस्त में शामिल हो गए हैं वो इस एलीट लिस्ट में सातवें बल्लेबाज बन गए हैं। वहीं 35 वर्षीय स्मिथ ने पारियों के लिहाज से सबसे तेज 35 टेस्ट शतक कंप्लीट करने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट में तीसरे नंबर पर एंट्री मारी है।

क्या आप जानते हैं ?... कोहली 36 वर्ष के हो चुके हैं, उनके नाम 123 टेस्ट मैच हैं, 30 शतक हैं और पिछले पाँच वर्षों में केवल तीन शतक बनाने के बावजूद उनका औसत 46.85 है।

आईसीसी के सीईओ ज्योफ एलार्डिस ने दिया इस्तीफा

दुबई, 29 जनवरी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के मुख्य कार्यकारी (सीईओ) ज्योफ एलार्डिस ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया हैं। इस्तीफे के बाद एलार्डिस ने कहा, आईसीसी के मुख्य

कार्यकारी पद पर रहना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। इस दौरान हमने जो भी लक्ष्य हासिल किए उस पर मुझे गर्व है, चाहे वह क्रिकेट को वैश्विक स्तर पर ले जाना हो या आईसीसी सदस्यों के लिए व्यवसायिक आधार तैयार करना। मैं आईसीसी के अध्यक्ष, बोर्ड के तमाम सदस्य और पूरे क्रिकेट समूह का पिछले 13 वर्षों में मुझे दिए अपार समर्थन करने के लिए आभारी हूं। मुझे विश्वास है कि आने वाला समय क्रिकेट के लिए उत्सुकता भरा समय होगा और मैं इसके लिए वैश्विक क्रिकेट समूह को अपनी शुभेच्छाएं देता हूं।

एक ही परिवार के तीन बच्चे सम्मानित

जयपुर, 29 जनवरी। गणतंत्र दिवस के अवसर पर बाड़मेर में एक ही परिवार के तीन बच्चों को खेल के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने पर जिला प्रशासन ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित

किया है। मरुधर लोक कला केंद्र , बाड़मेर के सचिव नरेंद्र तनसुखानी ने बताया की स्थानीय निवासी तरुण कुमार सोनी की पुत्री लुभांसी सोनी, पुत्र अभिषेक सोनी और पुत्री निशा सोनी ने दिसंबर 24 और जनवरी 24 में हैदराबाद में आयोजित सब जूनियर नेशनल बास्केटबाल चैम्पियनशिप और भावनगर गुजरात में आयोजित सीनियर चैम्पियनशिप में भाग लेकर बाड़मेर का नाम रोशन किया। इनके कोच गेमर सिंह थे। गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह में रोजगार और उधमिता मंत्री के के विश्नोई और जिला कलेक्टर टीना डाबी ने तीनों को सम्मानित किया।

नन्हें खां मेमोरियल सीनियर क्रिकेट लीग : नीरजा मोदी की जीत में मोहम्मद गाजी का पंजा

जयपुर, 29 जनवरी। 4 नन्हें खा मेमोरियल सीनियर क्रिकेट लीग में संस्कार ग्राउंड पर आज खेले गए मैच में नीरजा मोदी ने जयपुर ब्लूज़ को 10 विकेट से हराकर जीत दर्ज की। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए आर्यन जैन 48 रन, श्रेय सक्सेना 29 रनों के सहयोग से 35 ओवर में 146 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। नीरजा मोदी की ओर से मोहम्मद गाजी ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 30 रन ओर 5 विकेट लिए। विनय चौधरी,अमित वर्मा ने 2-2 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए नीरजा मोदी ने अर्णव गौतम 44, तरुण शर्मा 56 रनों के सहयोग से 16 ओवर में 150 रन बनाकर जीत दर्ज की। मैच के मैन ऑफ द मैच मोहम्मद गाजी रहे।

राज्य स्तरीय अंडर-14 यूथ कप

अरावली क्लब व के.एल. सैनी एकेडमी फाइनल में

जयपुर, 29 जनवरी। राजस्थान यूथ क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय अंडर-14 यूथ कप प्रतियोगिता में आज खेले गए सेमी फाइनल मैच में अरावली क्लब ने जी आर एकेडमी को एक विकेट से हराकर फाइनल में प्रवेश किया तथा दूसरे सेमी फाइनल में के एल सैनी एकेडमी ने जी ए एकेडमी अलवर को 3 विकेट से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। आज जी आर ग्राउंड पर खेले गए मैच में जी आर एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए आदित्य यादव के 56 रन, पार्थ यादव के 48 रन व प्रतीक चौधरी के 22 रन से 45 ओवर में 199 रन बनाए। अरावली क्लब के लिए हर्षित ने 36 पर 3, रजत व संजीव ने 2 - 2 विकेट लिए।जवाबी पारी में अरावली क्लब की टीम ने अंशु के 28 रन, हार्दिक के 22, रन, परम सिंह के 32 रन, राकेश के 30 रन व संजीव के 34 रनों से 44.2 ओवर में 9 विकेट पर 203 रन बनाकर मैच जीत पर लिया। जी आर एकेडमी के लिए प्रतीक चौधरी ने 36 पर 3, मोहित मनोहर ने 29 पर 2, गौरव पुनिया व भीष्म चेलानी ने 1- 1 विकेट लिया। दूसरे मैच में अरावली ग्राउंड पर जी ए एकेडमी अलवर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए आरव अरोड़ा के 80 रन, तविश 20 रन व युवराज के 19 रनों से 44 ओवर में 165 रन बनाए। के एल सैनी एकेडमी के लिए सुमित चौधरी ने 34 पर 4, श्रेष्ठ आर्य ने 43 पर 3 विकेट, कार्तिक व भावेश ने एक - एक विकेट लिया। जवाबी पारी में के एल सैनी एकेडमी की टीम ने रमन चौधरी के 65 रन, आयुष के 24 रन व मितुल सैनी के 28 रन नाबाद से 42.1 ओवर में 7 विकेट पर 166 रन बनाकर मैच जीत लिया। जी ए एकेडमी अलवर के लिए आरव अरोड़ा ने 33 पर 2, रिहान, तविश व काव्य बत्रा ने 1-1 विकेट लिया।

तिलक ने हासिल की अपनी बेस्ट ट्वंटी-20 रैंकिंग

नई दिल्ली, 29 जनवरी। तिलक वर्मा ने भारत के लिए इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में अच्छा प्रदर्शन किया है। तिलक वर्मा ने तीन मैचों में 109 रन बनाए हैं। इस दौरान उन्होंने एक मुकाबले में नाबाद 72 रनों की बेहतरीन पारी भी खेली। तिलक शानदार प्रदर्शन के दम पर आईसीसी टी20 बल्लेबाजी रैंकिंग में दूसरे पायदान पर पहुंच गए हैं। ये तिलक के करियर की बेहतरीन बेस्ट रैंकिंग है।

रोहित और श्रेयस रणजी मैच में खेलते हुए नहीं आएंगे नजर

मुंबई, 29 जनवरी। मुंबई का रणजी ट्रॉफी 2024-25 में अगला मैच मेघालय से है। ये मुकाबला 30 जनवरी से मुंबई में खेला जाएगा। इसके लिए उसने टीम की घोषणा कर दी है। लेकिन मुंबई की टीम में रोहित शर्मा, श्रेयस अय्यर और यशस्वी जायसवाल को जगह नहीं मिली है। ये तीनों ही खिलाड़ी मुंबई टीम से बाहर हैं, इसका एक अहम कारण अब सामने आया है।टीम इंडिया जल्द ही चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की तैयारी शुरू करेगी। उसे इससे पहले इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलनी है।

रोहित, यशस्वी और अय्यर को भारत की चैंपियंस ट्रॉफी में शामिल किया गया है। लिहाजा ये खिलाड़ी अब टूर्नामेंट की तैयारी शुरू करेंगे। इसी कारण से रणजी ट्रॉफी में हिस्सा नहीं ले पाएंगे। रिपोर्ट्स के मुताबिक मुंबई ने इसी वजह से इन तीनों को टीम से बाहर रखा है।रोहित शर्मा और टीम इंडिया का ऑस्ट्रेलिया दौरे पर निराशाजनक प्रदर्शन रहा था। यशस्वी जायसवाल भी कुछ खास नहीं कर पाए थे। ये खिलाड़ी मुंबई के लिए रणजी मैच में खेले, लेकिन रोहित और अय्यर का यहां भी बल्ला नहीं चला। चैंपियंस ट्रॉफी से पहले ये सभी खिलाड़ी तैयारी शुरू करेंगे। इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज भी खेली जाएगी।

मेघालय के खिलाफ मुंबई टीम इस प्रकार है- अजिंक्य रहाणे (कप्तान), आयुष म्हात्रे, अंगकृष रघुवंशी, अमोघ भटकल, सिद्धेश लाड, आकाश आनंद, हार्दिक तमोरे, सूर्यांश शेडगे, शार्दुल ठाकुर, शम्स मुलानी, तनुष कोटियन, मोहित अवस्थी, सिल्वेस्टर डिसूजा, रॉयस्टन डायस, श्रेयस गुरव, अथर्व अंकोलेकर।

पार्थिव का बयान : हार्दिक के कारण टीम के बाकी बल्लेबाजों को नुकसान

नई दिल्ली, 29 जनवरी। भारत और इंग्लैंड के बीच तीसरा टी20 मैच खेला गया। जिसमें भारत को 26 रन से हार झेलनी पड़ी। पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड ने 171 रन बनाए और राजकोट में भारतीय टीम 172 रनों का लक्ष्य हासिल नहीं कर पाई। भारत की ओर से सबसे ज्यादा रन हार्दिक पंड्या ने बनाए। उनके बल्ले से 40 रन निकले। इसके बावजूद पूर्व खिलाड़ी पार्थिव पटेल ने इस भारतीय ऑलराउंडर के प्रदर्शन पर सवाल उठाए हैं। दरअसल, पटेल के मुताबिक मैच के दौरान हार्दिक पंड्या ने बीच के ओवर्स में स्ट्राइक रोटेट नहीं की। उन्होंने कई बार सिंगल लेने से इनकार किया। वह ज्यादा गेंदे खेले इसके कारण बाकी बल्लेबाजों पर दबाव बना। पार्थिव के मुताबिक टीम इंडिया को हार्दिक पंड्या के बल्लेबाजी की अप्रोच को लेकर सोचना चाहिए।

आईपीएल 2025 से पहले राजस्थान रॉयल्स ने लॉन्च की नई जर्सी

नई दिल्ली, 29 जनवरी। आईपीएल 2025 का आगाज 21 मार्च से होगा। इस बीच लगभग सारी टीमों ने अपनी तैयारियों को दुरुस्त करना शुरू कर दिया है। बहरहाल राजस्थान रॉयल्स ने अपनी नई जर्सी लॉन्च की है। राजस्थान रॉयल्स ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट से पोस्ट किया है। इस पोस्ट में नई जर्सी को देखा जा सकता है। हालांकि, इस नई जर्सी में बहुत ज्यादा बदलाव नहीं हैं।

वहीं इस वीडियो में जयपुर की झलक साफतौर पर देखने को मिली। साथ ही फ्रेंचाइजी का कहना है कि इस नई जर्सी में राजस्थान के कण-कण के इतिहास की झलक देखने को मिलेगी। राजस्थान रॉयल्स के वीडियो में नए हेड कोच राहुल द्रविड़ भी नई जर्सी में दिखाई दे रहे हैं। इसके अलावा शेन वॉर्न, शेन वॉटसन, स्टीव स्मिथ, जोस बटलर के अलावा रविचंद्रन अश्विन का भी नाम उन्होंने अपनी नई जर्सी के लॉन्च वीडियो में दिखाया है।

सोशल मीडिया पर राजस्थान रॉयल्स का पोस्ट तेजी से वायरल हो रहा है। इसके अलावा सोशल मीडिया यूजर्स लगातार कमेंट्स कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं।पिछले 2 सीजन में संजू सैमसन की अगुवाई में राजस्थान रॉयल्स का प्रदर्शन बेहतरीन रहा है। लेकिन टाइटल तक पहुंचने में टीम नाकामयाब रही है। इस बार राजस्थान रॉयल्स की नजरें खिताब के सूखे को खत्म करने पर होंगी।

ख्वाजा और स्मिथ के शतक, ऑस्ट्रेलिया ने बनाई मैच पर मजबूत पकड़

गाले (श्रीलंका), 29 जनवरी। उस्मान ख्वाजा (नाबाद 145) और स्टीव स्मिथ (नाबाद 104) की शतकीय पारियों की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने पहले टेस्ट मैच के पहले दिन बुधवार को दो विकेट पर 330 रनों बना कर मैच पर अपनी मजबूत पकड़ बना ली हैं। आज यहां टॉस जीतकर ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया।

बल्लेबाजी करने उतरी उस्मान ख्वाजा और ट्रैविस हेड की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 92 रन जोड़े। 15वें ओवर में प्रभात जयसूर्या ने ट्रेविस हेड को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। ट्रेविस हेड ने 40 गेंदों में 10 चौके और एक

छक्का लगाते हुए (57) रन बनाये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मार्नस लाबुशेन महज (20) पर आउट होकर पवेलियन लौट गये। जेफ्री वैंडरसे ने आउट किया।

इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान स्टीव स्मथ ने ख्वाजा के साथ मोर्चा संभाला। दोनों बल्लेबाजों ने शानदार बल्लेबाजी का मुजाहिरा करते हुये अपने-अपने शतक पूरे किये। उस्मान ख्वाजा ने 210 गेंदा में 10 चौके और एक छक्का लगाते हुए (नाबाद 147) रन बनाये। वही स्टीव स्मिथ ने 188 गेंदा में 10 चौके और एक छक्के की मदद से (नाबाद 104) रन बनाये। इसी दौरान स्टीव स्मिथ ने अपने 10 हजार टेस्ट रन पूरे किए। वह यह उपलब्धि हासिल करने वाले चौथे ऑस्ट्रेलियाई बन गये।

बच्चे ने पूछा, इंडियन क्रिकेटर बनने के लिए क्या करना होगा

नई दिल्ली, 29 जनवरी। विराट कोहली इन दिनों रणजी ट्रॉफी 2024-25 के लिए जमकर प्रैक्टिस कर रहे हैं। कोहली दिल्ली के लिए 30 जनवरी से रेलवे के खिलाफ खेले जाने वाले रणजी ट्रॉफी मुकाबले में खेलते हुए नजर आएंगे। मुकाबले में खेलते हुए नजर आएंगे। मुकाबले से पहले भारतीय बल्लेबाज से दिल्ली अरुण जेटली स्टेडियम में प्रैक्टिस के दौरान एक बच्चे ने पूछा कि इंडियन क्रिकेटर बनने के लिए क्या करना पड़ेगा? इस सवाल का कोहली ने

बड़ा ही शानदार जवाब दिया। ये सवाल कोहली के बचपन के दोस्त के बेटे ने पूछा। कोहली ने बच्चे को जवाब देते हुए कहा कि, बहुत हार्ड वर्क करना पड़ेगा। पापा को आपको प्रैक्टिस और ट्रेनिंग के लिए नहीं बोलना पड़ेगा। आपको खुद सुबह उठकर प्रैक्टिस के लिए जाना है। खुद ट्रेनिंग के लिए जाना है, अगर कोई एक घंटा प्रैक्टिस करता है तो आप दो घंटा प्रैक्टिस करो। एक ही तरीका है बस। कोहली ने आगे कहा कि, कोई अगर फिफ्टी बनाता है, तो आप हंड्रेड बनाओ।

38वें राष्ट्रीय खेल के पहले दिन एक्वेटिक में कर्नाटक का दबदबा

हल्द्वानी/देहरादून, 29 जनवरी। कर्नाटक के तैराकों ने 38वें राष्ट्रीय खेल के एक्वेटिक के पहले दिन शानदार प्रदर्शन किया और पांच स्वर्ण पदक जीतकर और एक नया मीट रिकॉर्ड बनाकर अपनी श्रेष्ठता साबित की। यह रोमांचक मुकाबले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्विमिंग कॉम्प्लेक्स में हुए।

एफआईएच प्रो. लीग 2025 : भुवनेश्वर चरण के लिये भारतीय महिला हॉकी टीम की घोषणा

नई दिल्ली, 29 जनवरी। अनुभवी स्ट्राइकर वंदना कटारिया को एफआईएच प्रो लीग के भुवनेश्वर चरण के लिये भारत की 24 सदस्यीय महिला हॉकी टीम में चुना गया है जबकि युवा फॉरवर्ड सोनम को भी स्टैंडबाय के रूप में जगह मिली है। भारत को 15 फरवरी से होने वाले टूर्नामेंट में इंग्लैंड, नीदरलैंड, स्पेन और जर्मनी से दो दो बार खेलना है। भारतीय टीम की कमान एक बार फिर सलीमा टेटे के हाथ में होगी जबकि फॉरवर्ड नवनीत कौर उपकप्तान होंगी।

महिला अंडर-19 विश्वकप : श्रीलंका ने ऑस्ट्रेलिया और नाइजीरिया ने आयरलैंड को हराया

बांगी, 29 जनवरी। महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप के सुपर सिक्स मुकाबलों में बुधवार को श्रीलंका ने ऑस्ट्रेलिया को 12 रनों से हराया। वहीं दिन के एक अन्य मुकाबले में नाइजीरिया की टीम ने शानदार प्रर्शन करते हुए आयरलैंड को छह रनों से शिकस्त दी। आज यहां श्रीलंका की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में आठ विकेट

पर 98 रन बनाये। सलामी बल्लेबाज संजना काविंदी ने टीम के लिए सर्वाधिक (19) रन बनाये। सुमुदु निसानसाला (18), कप्तान मनुडी नानायक्कारा (15) और हिरुनी हंसिका (14) रन बनाकर आउट हुई। इसके बाद ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे श्रीलंका का कोई भी बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक नहीं पहुंचा सका। ऑस्ट्रेलिया की ओर से लिली बैसिंगथवेइट ने तीन विकेट लिये। हसरत गिल और टेगन विलियमसन ने दो-दो बल्लेबाजों को आउट किया।

लीजेंड 90 लीग ने टूर्नामेंट के लिए टीमों की घोषणा की

रायपुर, 29 जनवरी। क्रिकेट के पूर्व दिग्गज की लीजेंड 90 लीग ने छह से 18 फरवरी तक चलने वाले टूर्नामेंट के लिए सभी सात फ्रेंचाइजी टीमों की घोषणा कर दी है। इस लीजेंड 90 लीग में छत्तीसगढ़ वारियर्स, हरियाणा ग्लेडिएटर्स, दुबई जायंट्स, गुजरात सैम्प आर्मी, दिल्ली रॉयल्स, बिग बॉयज और राजस्थान किंग्स सहित सात टीमों में पूर्व भारतीय क्रिकेटर हरभजन सिंह, शिखर धवन, सुरेश रैना, न्यूजीलैंड के पूर्व बल्लेबाज रॉस टेलर, पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान आरोन फिंच आदि जैसे क्रिकेट के दिग्गज शिरकत करेंगे। छत्तीसगढ़ वारियर्स में मार्टिन गुप्टिल, सुरेश रैना और अंबाती रायुडू जैसे मार्कर खिलाड़ी हैं, जबकि दिल्ली रॉयल्स में रॉस टेलर के साथ शिखर धवन हैं। हरियाणा ग्लेडिएटर्स की कमान हरभजन सिंह के हाथों में होगी, जबकि वेस्टइंडीज के पूर्व ऑलराउंडर ड्वेन ब्रावो राजस्थान किंग्स का प्रतिनिधित्व करेंगे।

राजस्थान शूटिंग : देहरादून में 38वें राष्ट्रीय खेलों के लिए 20 एथलीटों का चयन

जयपुर, 29 जनवरी। राजस्थान राइफल एसोसिएशन को 20 प्रतिभाशाली एथलीटों के चयन की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है जोकि देहरादून में आयोजित 38वें राष्ट्रीय खेलों में राजस्थान का प्रतिनिधित्व कर रहे है। यह आयोजन दिनांक 28 जनवरी 2025 से 14 फ़रवरी 2025 तक आयोजित किये जायेंगे।

इस प्रतिष्ठित आयोजन में देश भर के शीर्ष निशानेबाजों की भागीदारी होगी और राजस्थान का दल राष्ट्रीय मंच पर अपनी छाप छोड़ने के लिए तैयार है। आयोजन के प्रारम्भ में 25 मीटर रैपिड फायर पिस्तौल मेन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे राज्य के प्रतिभाशाली निशानेबाज भावेश शेखावत ने भाग लिया और फाइनल्स के सिलेक्शन में अपनी जगह भी बनाई पर मैच के अंत में निराशा का सामना करना पड़ा और मैडल के लिए दावेदारी साबित नहीं कर सके। इसके साथ ही महिला खिलाडी निशा कँवर 10 मीटर एयर राइफल की महिला खिलाडी है वो फाइनलस में अपनी जगह नहीं बना सकी।

डेनियल को हराकर किदाम्बी श्रीकांत थाईलैंड मास्टर्स के दूसरे दौर में

पथुमवान (थाईलैंड), 29 जनवरी। विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता किदांबी श्रीकांत ने बुधवार को इजरायल के डेनियल डुबोवेंको को हराकर थाईलैंड मास्टर्स 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में पुरुष एकल स्पर्धा के प्री क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली हैं। आज यहां निमिबुत्र स्टेडियम में भारतीय शटलर श्रीकांत ने इजरायल के डुबोवेंको को बीडब्ल्यूएफ सुपर 300 टूर्नामेंट के राउंड ऑफ 32 मैच में 21-13, 21-18 से हराया। प्री क्वार्टरफाइनल में श्रीकांत का मुकाबला हांगकांग के जेसन गुनावान से होगा। इसके अलावा शंकर सुब्रमण्यन ने पुरुष एकल में, रुबन कुमार-हरिहरन अम्साकरुनन (पुरुष युगल) में और रोहन कपूर-रुथविका शिवानी (मिश्रित युगल) में और रक्षिता रामराज ने भी बुधवार को जीत के साथ दूसरे दौर में प्रवेश किया।

16 साल की उम्र में घर से दिल्ली भाग कर एक्टिंग करने के लिए कोर्स कर कसानी थिएटर में भी कई प्रोग्राम किये

जयपुर, 29 जनवरी। डायनामिक्स अचीवर्स ने 28 जनवरी (बुधवार) को जयपुर को 9-7 से हराया। डायनामिक्स अचीवर्स की ओर से अभिमन्यु पाठक ने अपने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन दिखाते हुए 7 गोल कर टीम को जीताया था। आज 29 जनवरी को भी डायनामिक्स अचीवर्स ने सुजान इंडियन टाईगर्स को 9-2 से हराया। जिसमे डायनामिक्स अचीवर्स की ओर से अभिमन्यु पाठक ने अपने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन दिखाते हुए 9 गोल कर टीम को जीताया।

पोलो खिलाड़ी अभिमन्यु पाठक 16 साल की उम्र में घर से दिल्ली भाग कर एक्टिंग करने के लिए कोर्स किया। कसानी थिएटर में भी कई प्रोग्राम किये पर वहां भी कुछ बात नही बनी। कॉल सेंटर में नौकरी भी की पर मैन कुछ कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ना चाहता था। तब मैंने ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड जाकर पोलो सीखा और खेला भी। वहां पर मैने घोड़ो के बीच रह कर उनकी देखभाल करना, खानपान सीखा जो आज मेरे जीवन की दिशा तय कर रहा है।

अचीवर्स से जुड़ने के सवाल पर अभिमन्यु ने कहा कि जब मैं सोना पोलो की ओर से खेलता था तो सहारा के खिलाफ भी खेला ओर जीत भी हासिल की। एक समय इस आया कि सोना के मालिक संजय कपूर ने पोलो खेलना बंद कर दिया था। तब विक्रम राठौड़ ने मुझे अपने साथ खेलने के लिए जोड़ा। आज मैं डायनामिक्स अचीवर्स की ओर से अपना बेहतरीन खेल - खेल पा रहा हूँ।

पेशेवर पोलो खिलाड़ी अभिमन्यु पाठक ने पोलो को लेकर कहा कि भारत में पोलो खेलने के लिए या तो आपका अमीर होना जरूरी है या फिर सेना में होना जरूरी है। क्योंकि हर कोई इस खेल का खर्चा बर्दाश्त नही कर सकता है। कोच, घोड़ो की खरीदारी, रखरखाव, खानपान, आदि, खर्चे होते रहते है, बड़ा ही महंगा खेल है होर्स पोलो।

मुझे आदमी और घोड़े के बीच का तालमेल बहुत पसंद है। यह एक उच्च रखरखाव वाला खेल है जिसके लिए अच्छी नस्ल के घोड़ों, अच्छी तरह से पाले गए मैदान और प्रशिक्षित घुड़सवारों की आवश्यकता होती है।घोड़ों और खेल के प्रति उसका प्यार उसे प्रेरित करता है। अभिमन्यु कहते है कि कैसे एक पोलो मैच देखने से उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा मिली। मैंने तभी फैसला किया था कि मैं एक पोलो प्लयेर बनकर ही रहूंगा। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि पोलो ने एक खेल के रूप में उनके व्यक्तित्व को बदल दिया है और निखार दिया है, जिससे उनके जीवन को एक नया दृष्टिकोण मिला है।

पाठक अपने घोड़े से बहुत प्यार करते हैं और इस जानवर के प्रति उनके मन में अपार प्रेम है। उनके पसंदीदा खिलाड़ी क्रिकेट के मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर हैं। अभिमन्यु पाठक ने इंग्लैंड में काफी प्रशिक्षण लिया है और उनके वर्तमान कोच ब्रिटिश मूल के जॉन हॉर्सवेल हैं, जो देश के प्रति उनके लगाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इंग्लैंड की खूबसूरती और प्रतिष्ठित टूर्नामेंट इंग्लैंड को उनका पसंदीदा पोलो बनाते हैं। भारतीय पोलो के सबसे प्रतिभाशाली और प्रतिष्ठित खिलाड़ियों में से एक अभिमन्यु पाठक ने करीब एक दशक पहले पेशेवर रूप से खेलना शुरू किया। सोना पोलो टीम के सदस्य रहे, उन्होंने लगभग हर हाई गोल ट्रॉफी जीती है।

जयपुर पोलो सीजन 2025 : राजस्थान टूरिज्म पोलो कप

डायनामिक्स अचीवर्स के अभिमन्यु पाठक ने डबल हैट्रिक के साथ 9 गोल किये

इंटरनेशनल खिलाड़ियों मेन्युअल ने 7, सैंटिआगो मोरामबीओ ने 8 गोल किये

जयपुर, 29 जनवरी। जयपुर पोलो सीजन 2025, राजस्थान टूरिज्म पोलो कप (06 गोल) में आज चार मैच खेले गए । जिनमे दो मैच कैवेलरी ग्राउंड पर और दो मैच पीपीसी ग्राउंड पर खेले गए। कैवेलरी ग्राउंड पर पहला मैच डेल्टा पोलो बनाम आर्मी रेड के बीच 11 बजे खेला गया जिनमे आर्मी रेड को डेल्टा पोलो ने 10-9.5 से हराया।

आर्मी रेड की ओर से रविन्द्र मांग और मृत्यंजय ने 1-1, लेफ्टिनेंट कर्नल विशाल चौहान ने 5 गोल किये वही डेल्टा पोलो की ओर से ध्रुवपाल गोदारा ने 2 ओर सेंटिआगो मोरामबीओ ने 8 गोल कर अपनी टीम की जीत निश्चित की। चौथे चक्कर मे सेंटिआगो मोरामबीओ हैट्रिक करने से चूके। कैवेलरी ग्राउंड पर दूसरा

मैच अरावली बनाम आर्मी ग्रीन के बीच 12 बजे खेला गया जिनमे आर्मी ग्रीन को अरावली ने 11-4.5 से हराया। आर्मी ग्रीन ढ़ाई गोल का एडवांटेज लिए हुए खेल रही थी। आर्मी ग्रीन की ओर से वारिच ओर राजपुरोहित ने 1-1 गोल किया। अरावली की ओर से डिनो धनखड़ ने 4, ओर मेन्युअल ने 7 गोल किये।

वही तीसरा मैच डायनामिक्स अचीवर्स बनाम सुजान इंडियन टाईगर्स के बीच पीपीसी ग्राउंड पर दोपहर 2 बजे खेला गया। डायनामिक्स अचीवर्स ने सुजान इंडियन टाईगर्स को 9-2 से हराया। डायनामिक्स अचीवर्स की ओर से डेनियल ने 1, अभिमन्यु पाठक ने अपने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन दिखाते हुए 9 गोल कर टीम को जीताया। सुजान इंडियन टाईगर्स की ओर से कुलदीप सिंह और भवानी कालवी ने 1-1 गोल ही कर पाए।

चौथा मैच वीपोलो ओर मेफेयर/चांदना के बीच पीपीसी ग्राउंड पर 3 बजे खेला गया जिसमें वीपोलो को मेफेयर/चांदना ने 9-7 से पराजित किया। मेफेयर/चांदना की ओर से सिद्धांत शर्मा ने 5 ओर सिमरन शेरगिल ने 4 गोल किये। वही वीपोलो की ओर से मुकेश सिंह, हुर्र अली ने 2-2, ओर गोंजालो यनजोन ने 3 गोल किये पर अपनी टीम की हार नही टाल पाए।

गुरुवार को चार मैच खेले जाएंगे। जिनमे तीन मैच कैवेलरी ग्राउंड पर दोपहर 11.30 बजे आर्मी रेड बनाम मेफेयर/चांदना, 12.30 बजे बेंगलोर ग्रेज बनाम आर्मी ग्रीन, 1.30 बजे वीपोलो बनाम डेल्टा पोलो के बीच खेला जाएगा। वहीं रामबाग पोलो ग्राउंड पर शाम 4 बजे जयपुर बनाम सुजान इंडियन टाईगर्स के बीच खेला जाएगा।

'राष्ट्र को सर्वोपरि मानने की परम्परा केवल भाजपा में है'

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नरसिंहपुरा में आयोजित संगठन वर्ष में जनसभा को संबोधित किया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बगरू के नरसिंहपुरा में आयोजित भाजपा जयपुर देहात दक्षिण के संगठन पर्व को संबोधित किया।

- उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार किसानों, महिलाओं व युवाओं के सशक्तिकरण के लिये प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। किसानों को गेहूँ की एमएसपी में 125 रूपए अतिरिक्त व सम्मान निधि की 2000 रूपए की अतिरिक्त किश्त प्रदान की जा रही है। युवाओं को भी 60 हजार पदों पर नियुक्ति दी है।

जयपुर, 29 जनवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। पार्टी के कार्यकर्ता लोकतंत्र में विश्वास रखते हैं और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए समर्पण भाव से काम करते हैं। उन्होंने कहा कि पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र की परम्परा का निर्वहन निरंतर रूप से जारी है और इसी दिशा में संगठन के चुनाव संपादित किए जाते हैं।

शर्मा बुधवार को बगरू के नरसिंहपुरा में आयोजित भाजपा जयपुर देहात दक्षिण के संगठन पर्व 2024 में उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के समाज के अंतिम व्यक्ति के उदय के संकल्प के साथ कार्य कर रही है। शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार किसानों, महिलाओं व युवाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। इसी दिशा में, किसानों को गेहूं की एमएसपी पर 125 रुपये अतिरिक्त व किसान सम्मान निधि की अतिरिक्त किश्त के रूप में 2000 रुपये प्रदान किए जा रहे हैं। साथ ही, युवाओं को अब तक लगभग 60 हजार पदों पर नियुक्तियां दी हैं। इसके अलावा, राज्य सरकार ने केन्द्र सरकार के साथ ऊर्जा क्षेत्र में 2.24 लाख करोड़ रुपये से अधिक के एमओयू किए हैं।

कार्यक्रम में जिला प्रभारी विमल अग्रवाल, विधायक बगरू कैलाश वर्मा, जयपुर जिला प्रमुख रमा देवी चोपड़ा, पूर्व विधायक मानसिंह, चुनाव अधिकारी जगवीर छाबा, पूर्व मंत्री कन्हैया लाल मीणा, पूर्व विधायक निर्मल कुमावत, प्रदेश अध्यक्ष एसटी मोर्चा नारायण मीना, प्रदेश महामंत्री एससी मोर्चा मुकेश गर्ग सहित, संगठन के पदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री का माला पहनाकर और स्मृतिचिन्ह भेंट कर स्वागत किया।

'मैडिकल पीजी दाखिले में डोमिसाइल रिज़र्वेशन असंवैधानिक'

नयी दिल्ली, 29 जनवरी। उच्चतम न्यायालय ने स्नातकोत्तर (पीजी) मेडिकल में दाखिले के लिए निवास-आधारित आरक्षण को असंवैधानिक करार देते हुए बुधवार को कहा कि यह संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन करता है। न्यायमूर्ति ऋषिकेश रॉय, न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति एस वी एन भट्टी की पीठ ने कहा कि पीजी मेडिकल पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए राज्य स्तरीय निवास-आधारित आरक्षण प्रदान करना संवैधानिक कानून के तहत अस्वीकार्य है।

पीठ ने कहा, पीजी मेडिकल पाठ्यक्रमों में निवास-आधारित

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा, यह आरक्षण संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन करता है।

आरक्षण स्पष्ट रूप से संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है। शीर्ष अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि राज्य स्तरीय आरक्षण की सीटें पूरी तरह से राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) में योग्यता के आधार पर भरी जानी चाहिए।

पीठ ने प्रदीप जैन और सौरभ चंद्रा मामलों में पिछले निर्णयों का हवाला देते हुए दोहराया कि संवैधानिक ढ ांचे को बनाए रखने के लिए निवास के लिए एकीकृत दृष्टिकोण आवश्यक है।

न्यायमूर्ति धूलिया ने निर्णय के तर्क को पढ़ ते हुए कहा, हम सभी भारत की सीमा में निवास करते हैं। प्रांतीय या राज्य निवास जैसा कुछ नहीं है। हम सभी भारत के निवासी हैं।

भांकरोटा फ्लाईओवर 31 मार्च तक पूरा होगा- एनएचएआई

- हाई कोर्ट ने कहा, हाईवे की सर्विस रोड पर अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

जयपुर, 29 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने जयपुर-अजमेर हाईवे पर भांकरोटा में बन रहे फ्लाईओवर से जुड़े मामले में सुनवाई करते हुए सरकार से सर्विस रोड के अतिक्रमणों को लेकर, तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश करने को कहा है। इसके साथ ही अदालत ने पूछा है कि मौके से अतिक्रमण कब तक हटाया जाएगा। अदालत ने फ्लाईओवर के निर्माण को लेकर भी रिपोर्ट पेश करने को कहा है।

अदालत ने कहा कि हाईवे पर किसी भी तरह के अतिक्रमण को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अदालत ने मामले की सुनवाई 17 फरवरी तक टाल दी है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस प्रमिल कुमार माथुर की खंडपीठ ने ये आदेश रायचंद चौधरी की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान, अदालती आदेश की पालना में एनएचएआई (नैशनल हाइवेज़ अथॉरिटी ऑफ इंडिया) के प्रोजेक्ट निदेशक अजय आर्य और डीसीपी ट्रैफिक सागर अदालत में हाजिर हुए। एनएचएआई की ओर से अधिवक्ता संदीप पाठक ने अदालत को बताया कि वर्तमान में चार फ्लाईओवर का काम पूरा होकर उन पर यातायात सुचारू रुप से चल रहा है। वहीं, भांकरोटा में बन रहे फ्लाईओवर का काम किया जा रहा है और उसे 31 मार्च तक पूरा कर लिया जाएगा। वहीं, याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता सीमा रोज और कमलेश रोज ने कहा कि हाईवे के दोनों ओर स्थित सर्विस लेन पर भी काफी अतिक्रमण हैं और इनके कारण भी ट्रैफिक जाम रहता है। इस पर अदालत ने कहा कि यहां किसी भी तरह का अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और हाईवे को अतिक्रमण मुक्त होना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

जनहित याचिका में कहा गया कि जयपुर-अजमेर हाईवे पर बन रहे फ्लाईओवर का निर्माण समय पर पूरा नहीं हुआ है, जिसके चलते यहां जगह-जगह घंटों तक वाहन जाम में फंसे रहते हैं। गौरतलब है कि जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने एनएचएआई के अधिकारियों सहित, अन्य संबंधित अधिकारियों को पेश होने के आदेश दिए थे।

एक और चुनाव ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के लिए जेल से रिहा हुए थे, इस दौरान हरियाणा में चुनाव प्रचार चल रहा था। गत वर्ष लोकसभा चुनावों से पहले गुरमीत राम रहीम को 51 दिनों के लिए पैरोल पर रिहा किया गया था। नवम्बर 2023 में राजस्थान विधानसभा चुनावों के प्रचार अभियान के दौरान बाबा 21 दिनों के लिए पैरोल पर रहे।

जनवरी 2023 में हरियाणा पंचायत चुनावों के दौरान बाबा 70 दिनों तक पैरोल पर रहे। अक्टूबर 2022 में महत्वपूर्ण आदमपुर सीट के उपचुनाव के समय बाबा को 40 दिनों के लिए पैरोल पर रिहा किया गया। फरवरी 2022 में राम रहीम 21 दिनों के लिए पैरोल पर थे।

माना जाता है कि बाबा के भक्त हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों में फैले हुए हैं। हालांकि, कांग्रेस और भाजपा राम रहीम के संपर्क में रहे हैं, लेकिन पिछले वर्षों में, बाबा ने आमतौर पर भाजपा को समर्थन दिया है। सन् 2014 के हरियाणा चुनावों में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कॉल पर, बाबा ने अपने समर्थकों से भाजपा को समर्थन देने के लिए कहा था।

कांग्रेस इतनी देर से सक्रिय...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उसमें वृद्धि कर पाना मुश्किल है।

रोचक बात यह है कि अशोक गहलोत जैसे कई वरिष्ठ नेता प्रचार के लिये दिल्ली आये थे तथा उन्होंने कांग्रेस की गारन्टियों की घोषणाएं भी की थीं, लेकिन उसके बाद, वे नेतागण भी नजर नहीं आ रहे। यहाँ तक कि प्रियंका गांधी ने भी कांग्रेस की गारंटियों का मुद्दा नहीं उठाया।

केवल सचिन पायलट, दीपेन्द्र हूडा जैसे युवा नेता ही दिल्ली में प्रचार करते दिखाई दे रहे हैं।

यह प्रश्न पूछा जा रहा है कि क्या प्रियंका गांधी इसलिए अपने ब्रान्ड को बचाने की कोशिश कर रही हैं क्योंकि वे जानती हैं कि कांग्रेस दिल्ली को जीतने की स्थिति में नहीं है? कांग्रेस पार्टी ने दिल्ली चुनाव उतनी गंभीरता से नहीं लड़ा, जितनी गंभीरता से लड़ना चाहिये था और पूरा मैदान आम आदमी पार्टी और भाजपा के लिये खुला छोड़ दिया गया।

'कुप्रबंधन व वीआईपी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

समय है, कई महास्नान होने है। सरकार को व्यवस्था में सुधार करना चाहिए ताकि ऐसे हादसे ना हो।"

गांधी ने कहा, वीआईपी कल्चर पर लगाम लगाई जानी चाहिए तथा आम श्रृद्धालुओं की जरुरत पूरी करने के लिए बेहतर व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से पीड़ित परिवारों की मदद करने की अपील की।

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने भी हादसे पर दुख जताया और लिखा, "भगवान मरने वालों की आत्मा को शांति दें। शोकग्रस्त परिवारों के प्रति मैं गहन संवेदना व्यक्त करती हूँ।"

उन्होंने वॉट्सऐप चैनल पर दी अपनी पोस्ट में कहा कि कुंभ जाने वाले लोग लगातार अव्यवस्था की शिकायत कर रहे हैं, पर, उनकी शिकायतों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। प्रशासन की लापरवाही साफ दिख रही है। प्रियंका गांधी ने सरकार से अपील की कि एयर एम्बुलैंस से घायलों को इलाज के लिए बड़े अस्पताल भेजा जाए।

उन्होंने कहा, मृतकों की पहचान कर उनके शव उनके परिवार तक पहुंच जाए। श्रृद्धालुओं की सुविधा के लिए व्यवस्था की जाए। उन्होंने लोगों से धैर्य और शांति से स्नान करने की अपील की। प्रियंका ने लिखा, "मां गंगा सभी की रक्षा करें।" कांग्रेस के मीडिया के प्रमुख पवन खेड़ा ने कहा कि प्रयागराज में महाकुंभ मेले में भगदड़ में कई भक्तों की मौत की खबर बेहद दुखदायक है। जब भी इतनी भारी भीड़ होती है और आधे-अधुरे इतंजाम होते है तो ऐसे हादसे होने का खतरा बना रहता है। अभी कई महास्नान बचे है। आवश्यक सुरक्षा बल तैनात किए जाएं और प्रबंध की जिम्मेवारी योगी की बजाय किसी बेहतर प्रशासक को दी जाए तथा वीआईपी मूवमैंट पर रोक लगाई जाए।

'सरकार बनी तो सफाई कर्मियों को पक्की नौकरी देंगे'

बड़ी-बड़ी घोषणाओं के साथ दिल्ली कांग्रेस का चुनाव घोषणा पत्र जारी किया, महासचिव जयराम रमेश ने

- घोषणा पत्र में जयराम रमेश ने कहा, यह सिर्फ गारंटी नहीं, बल्कि जनता का हक है जो उन्हें दिया जाएगा।

नयी दिल्ली, 29 जनवरी। कांग्रेस ने बुधवार को दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिये घोषणापत्र जारी किया और दिल्लीवासियों से वादा किया कि अगर वह सत्ता में आती है, तो जातिगत सर्वेक्षण करवाकर गरीबों का उत्थान करने का काम करेगी और छह महीने के भीतर मजबूत लोकपाल विधेयक पारित करवायेगी।

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में राष्ट्रीय महासचिव जयराम रमेश ने पार्टी का घोषणा पत्र जारी करते हुये कहा, हम चाहते थे कि जनता तक ये संदेश जाये कि कांग्रेस जो कहती है, वह करती है। ये गारंटी सिर्फ पार्टी की नहीं है, बल्कि ये जनता का हक है। कांग्रेस ने दिल्ली के लिये अपनी पांच गारंटी बहुत पहले ही दे दी हैं, जिन्हें पूरा किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि सबसे पहले डॉक्टर मनमोहन सिंह की सरकार ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम को लागू किया था। उन्होंने कहा कि गारंटी का मतलब यह है कि यदि सरकार उसे लागू नहीं करती है, तो आप अदालत का दरवाजा खटखटा सकते हैं।

दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा, हमने दिल्ली के लोगों की समस्याओं को सुनकर अपना घोषणापत्र तैयार किया है। घोषणापत्र में हमने दिल्ली के मुद्दों और लोगों की जरूरतों को शामिल किया है। हमने अपने घोषणापत्र में पूर्वांचल के लोगों के लिये अलग से मुद्दे शामिल किये हैं और दिल्ली के गांवों के लिये विशेष योजनायें रखी हैं।

गौरतलब है कि कांग्रेस ने प्यारी दीदी योजना, जिसके तहत हर गरीब परिवार की एक महिला को हर महीने 2500 रुपये देने, जीवन रक्षा योजना, जिसके तहत दिल्ली के सभी निवासियों को 25 लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा, युवा उड़ान योजना, जिसके तहत बेरोजगार युवाओं को सार्वजनिक या निजी क्षेत्र के संस्थान में एक वर्ष की अप्रेंटिसशिप देंगे, इस दौरान उन्हें 8500 रुपए हर महीने मिलेंगे, महंगाई मुक्त योजना, जिसके तहत 500 रुपए में रसोई गैस सिलेंडर, हर महीने 02 किग्रा चीनी, एक किग्रा कुकिंग ऑयल, छह किग्रा दाल, 250 ग्राम चाय पत्ती समेत, एक मुफ्त राशन किट देने का वादा और मुफ्त बिजली योजना, जिसके तहत सभी पात्र परिवारों को 300 यूनिट मुफ्त बिजली देने जैसी पांच गारंटियों का एलान किया था।

कांग्रेस ने छठ महापर्व को महाकुंभ की तर्ज पर मनाने, छठ पूजा के दिन सवेतन अवकाश देंगे और उस दिन शराब की दुकानों को बंद रखने, अग्निपथ योजना को वापस लेने और सभी अग्निवीरों को स्थाई करने के लिये केन्द्र सरकार पर दबाव बनाने, हर विधान सभा में 24 घंटे डिस्पेंसरी और हर वार्ड में कम से कम एक डिस्पेंसरी स्थापित करने और नयी शिक्षा नीति 2020 को बदलने के लिये दिल्ली शिक्षा नीति पेश करने का वादा किया है। कांग्रेस ने यमुना की सफाई करने, डीटीसी बसों की संख्या बढ़ ाने और सरकार बनने पर सफाई कर्मियों को पक्की नौकरी देने का वादा किया है।

क्या बिहार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शिक्षा के लिये रिकॉर्ड-तोड़ बजट और हजारों नये शिक्षकों से लेकर विद्यार्थियों को निशुल्क भोजन और यूनिफॉर्म उपलब्ध कराते हुये, राज्य के वातावरण को बदलने की पूरी-पूरी कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन आँकड़े बड़ी निराशाजनक तस्वीर दिखा रहे हैं। मूल समस्या स्कूली शिक्षा की ही है। पाँचवीं कक्षा के 63 प्रतिशत बच्चे दूसरी कक्षा की पाठ्य पुस्तकें तक नहीं पढ़ सकते। एक अन्य मुद्दा उपस्थिति का है, जो बोर्ड परीक्षाओं के अलावा, प्राय: 20 प्रतिशत के आस पास रहती है।

केवल 20 प्रतिशत उपस्थिति के लिये, बिहार 54,000 करोड़ रु. की विशाल राशि प्रतिवर्ष खर्च कर रहा है। हर व्यक्ति एक ही सवाल कर रहा है कि क्या बिहार की स्कूली शिक्षा बचाई जा सकती है।

'जो शरिया नहीं ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

न्यायाधीश संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति संजय कुमार तथा के.वी. विश्वनाथन की बैंच ने केन्द्र सरकार से कहा है कि वह चार सप्ताह में इस याचिका पर अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत करे। इस मामले की अगली सुनवाई मई के पहले सप्ताह में होगी।

सुनवाई के दौरान, केन्द्र सरकार की ओर से उपस्थित सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने बैंच को बताया कि याचिकाकर्ता के केवल एक पुत्री है और वह अपनी सारी सम्पत्ति अपनी बेटी को देना चाहती है लेकिन शरीयत कानून उसे केवल 50 प्रतिशत सम्पत्ति देने की ही अनुमति देती है।

मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि ऐसे कई मुद्दों पर विचार होना चाहिये तथा उन्होंने हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 का भी जिक्र किया। उन्होंने 1956 के हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत भी, उत्तराधिकार पर कुछ प्रतिबंधों का जिक्र किया, जो किसी हिन्दू द्वारा अन्य कोई धर्म स्वीकार कर लेने की स्थिति में लगाये जाते हैं।

उक्त महिला सफिया की याचिका में कहा गया है कि शरीयत कानून कहता है कि जो मुस्लिम, इस्लाम धर्म छोड़ देगा, उसे समुदाय से बाहर कर दिया जायेगा तथा इसके बाद, वह अपनी पैतृक सम्पत्ति में किसी प्रकार के उत्तराधिकार का हकदार नहीं होगा।

याचिका में कहा गया है कि शरीयत कानून के अनुसार, कोई मुस्लिम, अपनी वसीयत के जरिये, अपनी सम्पत्ति के एक-तिहाई से ज्यादा भाग नहीं दे सकता है।

योगी ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रहे लोगों को रौंदते चले गये।

उन्होंने कहा कि हादसे के बाद बगैर विलंब किये ग्रीन कारिडोर बना कर घायलों को अस्पताल भेजा गया मगर 30 लोगों को बचाया नहीं जा सका।

'प्रदेश में अवैध ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने अदालत को बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने गत 17 दिसंबर को एक मामले की सुनवाई करते हुए, देश की सभी प्रदेश सरकारों को कहा था कि वे अवैध निर्माण रोकने के संबंध में स्थानीय प्राधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी करें। वहीं, अतिक्रमण करने वालों पर कार्रवाई की जाए। याचिका में कहा गया कि अदालती आदेश के बावजूद, मास्टर प्लान और जोनल प्लान के खिलाफ जाकर बड़े पैमाने पर निर्माण हो रहे हैं, जिसके चलते लोगों का कॉलोनियों में रहना दूभर हो रहा है। याचिका में कहा गया कि राजधानी के कई इलाकों में जीरो सेटबैक पर निर्माण किया गया है। इस संबंध में याचिकाकर्ता संस्था की ओर से कई बार जेडीए और राज्य सरकार को शिकायत की गई और सुप्रीम कोर्ट के आदेश की पालना के लिए कहा गया, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई, जबकि सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा था कि यदि कोई अधिकारी इस आदेश की पालना ना करे तो उसे अदालती आदेश की अवमानना माना जाए। ऐसे में राज्य सरकार को निर्देश दिए जाएं कि वह 17 दिसंबर के सुप्रीम कोर्ट के आदेश की पालना करे। याचिका पर सुनवाई करते हुए खंडपीठ ने राज्य सरकार और जेडीए से जवाब तलब किया है।

'तीन तलाक पर देशभर में कितने केस चल रहे हैं'

सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार से शपथ पत्र दायर कर बताने को कहा

- सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्देश मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) अधिनियम को चुनौती देनी वाली याचिकाओं की सुनवाई करते हुए दिया। उक्त कानून के तहत तीन तलाक अपराध है, जिस पर पति को तीन साल की जेल भी हो सकती है।

नई दिल्ली, 29 जनवरी। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को केन्द्र सरकार के मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 2019 के तहत प्रतिबंधित तीन तलाक के जरिए तलाक के मामलों में मुस्लिम पुरुषों के खिलाफ दर्ज मुकदमे और दाखिल आरोप पत्र की संख्या का आंकड़ा पेश करने का निर्देश दिया। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार की पीठ ने तीन तलाक को अपराध बनाने वाले कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए यह आदेश पारित किया। पीठ ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से पूछा, "अब सभी मुकदमे केंद्रीकृत हो गए हैं.. अब हमें बताएं कि कितने मामले लंबित हैं। क्या अन्य उच्च न्यायालयों में कोई चुनौती लंबित है।"

मेहता ने केंद्र का पक्ष रखते हुए कानून का बचाव किया। उन्होंने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए यह कानून जरूरी है। इसमें रोकथाम (तलाक) के प्रावधान हैं। इस पर पीठ ने कहा कि केंद्र ने तीन तलाक कहने के कृत्य को ही दंडित किया है।एक याचिकाकर्ता के अधिवक्ता निजाम पाशा ने कहा कि अब कानून के तहत केवल घोषणा करने पर भी दंड लगाया जाता है। एक अन्य याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता एम आर शमशाद ने तर्क दिया कि इस तरह के बयान और भावनात्मक हिंसा घरेलू हिंसा अधिनियम के तहत आते हैं।

हालांकि, मेहता ने कहा, "यह ऐसा है जैसे कह दिया जाए कि अगले ही पल से तुम मेरी पत्नी नहीं हो और एक इंसान हो जिसे एक आदमी की जिंदगी और घर से भी निकाल दिया गया है।" इस पर पीठ ने कहा, "हमें नहीं लगता कि घरेलू हिंसा अधिनियम इसके अंतर्गत आएगा।"

पीठ ने संबंधित पक्षों से लिखित दलीलें दाखिल करने को कहा। पीठ ने मेहता से ग्रामीण इलाकों के आंकड़ों सहित दर्ज मुकदमों की संख्या की जांच करने और आंकड़े देने को कहा।पीठ ने कहा, "उन्हें (केंद्र) आंकड़े दाखिल करने दें। हम वास्तविक स्थिति जान लेंगे कि क्या है।"

पाशा ने कहा कि किसी अन्य समुदाय में परित्याग कोई अपराध नहीं है। इस पर मेहता ने कहा कि अन्य समुदायों में तीन तलाक की प्रथा नहीं है। शमशाद ने दलील दी कि आपराधिक मामलों में (दिल्ली में भी) जब मारपीट आदि का गंभीर मामला होता है, तो वैवाहिक मामलों में महीनों तक मुकदमा दर्ज नहीं किया जाता।

हरियाणा के सी.एम. ने दिल्ली में पिया यमुना का पानी

नई दिल्ली, 29 जनवरी। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बुधवार को दिल्ली के पल्ला गांव के पास स्थित यमुना नदी तट पर पहुंचे और यमुना का पानी पिया। दरअसल, अरविंद केजरीवाल ने अभी हाल में ही आरोप लगाया था कि हरियाणा सरकार ने यमुना नदी के पानी में जहर मिला दिया है। यमुना का पानी पीने के बाद नायब सिंह सैनी ने कहा कि आज मैं यहां यमुना नदी के तट पर आया हूं और यमुना नदी का पानी पिया है। जल संसाधन प्राधिकरण ने यहां से पानी के नमूने लिए और पानी में कोई जहर नहीं पाया गया। उन्होंने कहा कि केजरीवाल ने हरियाणा की भाजपा सरकार पर आरोप लगाया है कि यमुना नदी को जहरीला कर दिया है। उन्होंने सामूहिक नरसंहार की बात कही थी। अरविंद केजरीवाल ने जीवन भर झूठ बोला है और अब भी वह झूठ ही बोल रहे हैं।

महाकुंभ में बैरिकेड्स टूटने ..

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- हादसे की जानकारी मिलने पर संतों के अखाड़ों ने अमृत स्नान स्थगित कर दिया, बाद में हालात सामान्य होने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आग्रह पर अखाड़ों ने अमृत स्नान में भाग लिया।
- हादसे पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुख जताया तथा यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से वार्ता कर हालात की जानकारी ली।

आदित्यनाथ ने सभी पूज्य संतों, महामंडलेश्वरों से आग्रह किया था कि वे इन अमृत स्नानों के भागीदार बनें।

कृष्ण ने बताया कि अमृत स्नान पर्व में आज कोई वीवीआईपी अथवा वीआईपी प्रोटोकाल नहीं था और आगामी अमृत स्नान पर्व में इस तरह की कोई व्यवस्था नहीं की जायेगी।

पीएम मोदी ने कहा, प्रयागराज महाकुंभ में हुआ हादसा अत्यंत दुखद है। इसमें जिन श्रद्धालुओं ने अपने परिजनों को खोया है, उनके प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। इसके साथ ही, मैं सभी घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हरसंभव मदद में जुटा हुआ है। इस सिलसिले में मैंने मुख्यमंत्री योगी जी से बातचीत की है और मैं लगातार राज्य सरकार के संपर्क में हूं। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा, कुंभ में जो दुखद हादसा हुआ है, उसमें कई पुण्य आत्माओं को खोना पड़ा है। मैं संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं सरकार से लगातार संपर्क में हूं। मौनी अमावस्या की वजह से भीड़ है। कुछ देर के लिए स्नान रुका था, अब सुचारू रूप से चल रहा है। दरअसल, मौनी अमावस्या के अमृत स्नान की वजह से ज्यादातर पॉन्टून पुल बंद थे। इस कारण संगम पर लाखों की भीड़ इकट्ठी होती चली गई। ज्यादातर श्रद्धालु जल्दी स्नान करने के लिए संगम तट पर ही भोर होने का इंतजार कर रहे थे। इस दौरान बैरिकेड्स में फंसकर कुछ लोग गिर गए। यह देखकर भगदड़ मच गई। दूसरी ओर, संगम नोज़ पर एंट्री और एग्ज़िट के रास्ते अलग-अलग नहीं थे। ऐसे में जब भगदड़ मची तो श्रद्धालुओं को भागने का मौका नहीं मिला। प्रयागराज में बुधवार को 9 करोड़ से ज्यादा लोग पहुंचे। भीड़ को कंट्रोल करने के लिए मेला प्रशासन ने प्रयागराज आने वाले 8 एंट्री पॉइंट को बंद कर दिया है। आम आदमी पार्टी ने कहा कि महाकुंभ में वीआईपी मूवमेंट के चलते रास्ते बंद करने और बड़े स्तर पर बद-इंतजामी की वजह से भगदड़ हुई और इसके लिए उत्तर प्रदेश सरकार जिम्मेदार है। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने एक्स पर कहा कि महाकुंभ में हुई भगदड़ की घटना अत्यंत दुखद है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को शांति दे और उनके परिवार को इस दु:ख को सहने की शक्ति दे। सभी श्रद्धालु संयम रखते हुए सुरक्षा नियमों और निर्देशों का पालन करे।

एस.ओ.जी. ने हाईकोर्ट एल.डी.सी. भर्ती परीक्षा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

19 मार्च 2023 को 12 बजे से 2 बजे के बीच हुई थी, जिसका आयोजन राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर ने किया था। परीक्षा का परिणाम 11 जून 2023 को जारी किया गया था। यह परीक्षा 2800 से अधिक पदों के लिए आयोजित की गई थी। जिला जालौर, भीलवाड़ा, पाली, उदयपुर, नागौर, बीकानेर, चुरू, सीकर और ब्यावर में पुलिस अधीक्षकों से संपर्क कर आरोपियों की दस्तयाबी के लिए टीमें गठित कर आरोपियों को दस्तयाब कर लिया गया है।

एसओजी ने इस मामले में द्रोपदी सिहाग निवासी नौखा बीकानेर, सुनीता निवासी श्रीगंगानगर, उमेश तंवर निवासी बीकानेर, सुमन मुखर निवासी ग्राम कोहला, बीरबल निवासी नागौर, सुरेश निवासी नागौर, राकेश कस्वा निवासी बीकानेर, विभीषण निवासी नागौर और रामलाल निवासी नागौर को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि आरोपी पोरव कालेर पूर्व में ईओ-आरओ प्रकरण में जेल बंद है, जिसे

प्रोडक्शन वारंट से तलब किया जाएगा।

गौरतलब है कि पोरव कालेर के विरूद्ध पूर्व में भी द्वितीय श्रेणी अध्यापक भर्ती परीक्षा, रीट परीक्षा, सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा, ईओ-आरओ भर्ती परीक्षा,पटवारी परीक्षा भर्ती परीक्षा, महिला सुपरवाइज़र भर्ती परीक्षा 2020 सहित अन्य भर्ती परीक्षाओं में ब्लूटूथ से नकल करवाने के मामले दर्ज हैं। पोरव कालेर द्वारा ईओ-आरओ व हाईकोर्ट एलडीसी भर्ती परीक्षा 2022 में सालासर से ही पेपर पढ़ाया गया था। हाईकोर्ट एलडीसी परीक्षा 2022 में पोरव कालेर के संगठित गिरोह ने परीक्षा प्रश्न पत्र प्राप्त कर ब्लूटूथ डिवाइस से दिनेश निवासी रतनगढ, सुमन भूखर निवासी गंगानगर, राजेश पुत्र तेजाराम निवासी रूखासर, विकेश पुत्र सोहनलाल निवासी बीकानेर, द्रोपदी विश्नोई निवासी बीकानेर, ओमप्रकाश पुत्र घांसीराम निवासी खजवाना नागौर, रामलाल पुत्र तुलसाराम निवासी खजवाना नागौर, राकेश पुत्र चौनाराम, सुरेश पुत्र कैलाश, बीरबल पुत्र चौनाराम निवासी नागौर, विभिषण पुत्र ओमप्रकाश निवासी खजवाना, सुनिता निवासी गंगानगर, मनोज जाट निवासी सीकर, मनीष पुत्र रामस्वरूप निवासी नागौर, कृष्णा विश्नोई निवासी बीकानेर, सेठिया मेघवाल निवासी बिदासर, बीकानेर, कमलकांत पुत्र राजेन्द्र प्रसाद तिवारी निवासी मुक्ताप्रसाद नगर बीकानेर, प्रेमचन्द्र ज्याणी पुत्र हनुमानाराम निवासी मुक्ताप्रसाद नगर बीकानेर, संगीता विश्नोई/रामस्वरूप खिलेरी निवासी फुलासर, बीकानेर, जितेन्द्र बिजारणिया पुत्र गोपालराम निवासी रूखासर, बबीता विश्नोई पत्नी बजरंग लाल निवासी काकडा को परीक्षा में नकल करवाई गई थी।

वी.के. सिंह. ने कहा कि राजस्थान में जल्द ही आर.ए.एस. प्री-एग्ज़ाम होने वाले हैं, इन्हें लेकर एस.ओ.जी. सतर्क है। साथ ही नकल करवाने वाले गिरोह पर नज़र रखी जा रही है, ताकि पेपरलीक जैसे मामलों की पुनरावृत्ति नहीं हो।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908